प्रत्युत शंकर-गौरीक अनुरूप एक कथा प्रचलित अछि । एहिसँ ई निष्कर्ष बहराइछ जे मनसा कथा मिथिलांचलसँ बंगाल गेल ने कि बंगालसँ बिहार आयल ।

आधुनिक परिवेशमे एकर कथान्तर्गत अनेक अनावश्यक पौराणिक आ लौकिक कथाक परिवेशकेँ जोड़ि क' एकरा आराक्रान्त क' देल गेल अछि । बिहुला आ लखिन्दरक कथा एवं घटनादि अद्यापि अक्षुण्ण अछि। किन्तु बाङ्ला-साहित्यक मनसा-मङ्गल काव्यक प्रणेता लोकनि अपन उद्दाम कल्पना आ निरर्थक नृत्य-गीतक आयोजन कयलनि अछि । किन्तु एकर मूल कथा जाहि रूपेँ मिथिलांचलमे प्रचलित अछि ओकरा धार्मिक आस्थाक अनुकूल बनयबाक हेतु अनावश्यक रूपेँ महाभारतीय आ पौराणिक आख्यानकेँ आनि क' जोड़ि देल गेल अछि । विशेषत: भागलपुरक परिसरमे ई एहि ठामक जनजीवनमे आस्थाक श्रृंगार बनि गेल अछि, कारण एकर उद्गम स्थल चम्पानगर थिक ते एतय एकर महत्त्व अछि । वर्त्तमान समयमे एकर पूजा सम्पूर्ण मिथिलांचल, भोजपुरी भाषी समाज, बंगाल, झारखण्ड आदि कतिपय स्थानपर श्रद्धा आ विश्वासक संग कयल जाइत अछि । अनादि कालहिसँ गंगा तटपर बसबाक कारणेँ चम्पानगर एक एहन वाणिज्य केन्द्र बनि आ बुद्धक मृत्युक समय ई भारतक छओ प्रमुख नगरमे एक छल । एहि नगरक सौन्दर्य बढ़ैत गेल । एहि ठामक व्यापारी सुवर्ण भूमि *(वर्माक नीचला भाग, मलय सुमात्रा)* घरि एहि बन्दरगाहसँ नाओपर जाइत छलाह । एहि नगरक अधिवासी सुदूर हिन्द-चीन प्रायद्वीपमे अपन नामक एक उपनिवेश बनौने छल *(इण्डियन ऐंटिक्वेरी, पृष्ठ 6-224) ।*

भागलपुरक अतिरिक्त सहरसा दिस विषहरी पूजनक अवसरपर एक मास धरि मेला लगैत अछि जाहिमे महिलागणक सहभागिता अधिक रहैछ । बिहुला अपन सतीत्त्वक बलपर अपन मृत पतिकेँ स्वर्गसँ उठा क' लए गेलीह आ हुनका पुन : जीवित क' कए वापस अनलनि । एहिमे भारतीय स्त्रीक अद्भूत कथा सन्निहित अछि । जहिना सावित्री सत्यवानक कथा प्रचलित अछि तहिना मिथिलान्तर्गत बिहुला-विषहरीक कथा लोक-प्रचलित भ' लोकप्रियता अर्जित कयने अछि ।

कथामुख :

धर्म प्रधान प्रदेश मिथिलांचलमे देवी-देवताक महात्म्य अनादि कालाहसँ व्यापक रूपेँ प्रचलित रहल अछि जकर फलस्वरूप अनेक व्रत आ त्योहार एवं तत्सम्बन्धी कथादि एवं गीतादि एतय प्रचलित भेल जकर प्रथमे-प्रथम दर्शन होइत अछि लोककंठमे व्याप्त लोकमुखसँ अव्याहत रूपेँ व्यवहृत होइत आबि रहल अछि लोकगीतादि एवं लोक कथादिमे । एहन गीत सभ आपेक्षाकृत सुगठित रूपेँ अद्यापि वर्त्तमान अछि । जनसामान्य मानवपर जखन कोनो विपत्तिक पहाड़ टूटि पड़ैछ तखन ओकर निवारणार्थक आशामे देवी-देवताक परिकल्पना कयल जाइछ। एक-एक विपत्तिक निमित्त भिन्न-भिन्न रूपक देवी-देवताक परिकल्पना कयल गेल, जनिक शरणापन्न भ' हुनक अभ्यर्थना मनसा - वाचा - कर्मणासँ क' कए त्राण पयबाक उपक्रम कयल गेल । सर्प-देवताक मनसाक परिकल्पना सेहो ओहो विभीषिकाक परिणति थिक । पृथ्वीपर साधारण मानवक बीचमे एक साधर्म्य देखल जाइछ । सर्पकेँ देवताक रूपमे परिकल्पना करबाक पाछाँ सैह मात्र एहि देशक वैशिष्ट्य नहि, प्रत्युत विश्वक अन्यान्य देशमे सेहो सर्प-पूजनक परम्परा प्रचलित अछि । अखिल विश्वमे सर्प-पूजनक प्रचलन अनादि कालहिसँ प्रचलित अछि जकर प्रमाण पौराणिकीमे उपलब्ध भ' रहल अछि ।

नाग-पूजन द्वारा हमर हृदयमे सर्प जातिक प्रति ओहि बद्ध-मूल दुर्भावना आ भ्रान्तिक निराकरणक लेल कयल गेल अछि । श्रद्धा भक्ति सहित देव रूपमे नागक अर्चना, पूजना आ ओकर गुणक बखानक वर्णन सुनि क' हमर हृदयमे विद्यमान दुर्भावना क्रमश: क्षीण

जाइछ ।

जरत्कारु ओ मनसा :

महाभारतमे कोनो स्थानपर वासुकिक भगिनी जरत्कारुकेँ सर्प-कुलक अधिष्ठात्री देवी वा सर्प-माता कहि क' उल्लेख नहि कयल गेल अछि । सर्प-माताक माने महाभारतमे एक मात्र कश्यप मुनिक पत्नी कद्रूक उल्लेख अछि, जरत्कारुक नहि । महाभारतमे नाग-वंशक जरत्कारुकेँ कोनो विशेष श्रद्धा भक्ति नहि भेटलनि तकरहु कतहु उल्लेख नहि । हँ, एक स्थलपर मात्र दुइ कथानार्गत वासुकि कर्तृक जरत्कारुक सम्वर्द्धना कयल गेल अछि। किन्तु हुनका वासुकि भगिनी कहि क' नहि, प्रत्युत हुनक गर्भस्थ सन्तान आस्तिक कर्तृक जनमेजय द्वारा अनुष्ठित सर्प-यज्ञ ध्वंस होयबाक रूपमे जानल जाइछ ने कि वासुकिक भगिनी होयबाक तकर कालोचित सम्वर्द्धना स्थापित कयल गेल । महाभारतमे एक मात्र श्लोकमे हुनक उल्लेख अछि :

सानवमानार्थ दानैश्च पूज्या चातु रुपया : ।
सोदरां पूजयामास स्वसारं पन्नगोत्तम : ।।

आस्तिकक जन्मोपरान्त जरत्कारुक क्षणिक प्रधानता लुप्त भ' गेल । एहना स्थितिमे वासुकिक भगिनी जरत्कारुकेँ सहसा मनसा नाम ग्रहण क' कए सर्प-कुलक अघिष्ठात्री देवीक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक कोनो तर्क संगत कारण नहि उपलब्ध होइछ । ई अनार्य देवी मनसा समाजमे आर्य प्रभाववश महाभारतक कथाक पृष्ठभूमिमे अपनाकेँ स्थापित क' कए आभिजात्य वर्गक बीच प्रतिष्ठा प्राप्त करबामे सफलता प्राप्त कयलक ।

पूर्वहि कहल गेल अछि जे महाभारतमे मनसा नामक कोनो देवीक उल्लेख नहि भटैछ तेँ तदनुकूलहि हुनक कोनहु चरित्रक संग साक्षात्कारसँ कोनो लाभ नहि भ' सकैछ । महाभारतक दीर्घकालक पश्चात् परवर्त्ती कालमे उपपुराणादिक रचना भेल तखन अनार्य समाजसँ आयल ई देवी आर्य समाजमे कोना प्रवेश प्राप्त क' सकल । पूर्वोक्त भास्करमे कोनो प्रमाण नहि उपलब्ध होइछ, किन्तु अर्वाचीन पुराणादिमे एहि विषयक प्रमाण उपलब्ध

मिथिलांचलक समस्तीपुर जिलान्तर्गत सिंधिया घाटक परिसरमे प्रतिवर्ष नागपंचमीक दिन एक रोचक मेला लगैत अछि जे सापक मेला नामे विख्यात अछि । ई मेला अनादि कालहिसँ आयोजित भ' रहल अछि जाहि प्रसंगमे ठोस प्रामाणिक इतिहास अनुपलब्ध अछि । किन्तु जनश्रुति अछि जे ई अति प्राचीन अछि । एहि मेलामे सब वयसक लोक हाथमे वा गर्दनिमे साप लपेटने रहैत अछि । एहि सांस्कृतिक अवसरपर करीब पचास हजार लोक भिन्न-भिन्न स्थानसँ एतय उपस्थित होइछ जे मिथिलांचलक सांस्कृतिक जीवनमे सापक महत्त्वकेँ प्रदर्शित करैछ । नागपंचमीक दिन आयोजित भेनिहार सापक मेलामे सापक दहशतक आभास ककरो मुखमण्डलपर नहि रहैछ । चाहे छोट बच्चा हो वा डेरबुक पुरुष वा भयभीत भेनिहार स्त्रीगणसब आह्लादपूर्वक सापकेँ धारण करैछ, कारण लोक-विश्वास छैक जे ओहि दिन साप ककरो नहि काटैछ । ओहि परिसरक कतेक एहन परिवार अछि जे नागपंचमीक अवसरपर नदीसँ साप बहार क' कए लोकक सोझाँ प्रदर्शन करबाक पुश्तैनी कला विद्यमान रखने अछि । एहि कलाक मर्मज्ञकेँ *भगत* कहल जाइछ तथा लोकक विश्वास छैक जे भगवतीक असीम कृपासँ ई कौशल हुनका लग आयल अछि ।

नागपंचमीसँ किछु दिन पूर्वहि गह्वरपर स्त्रीगण विषहरीक गीत गबैत अछि तथा ओकर पूर्व संध्यामे भगत ओतय साप बहार करैछ । गह्वरपर भक्तजन अपन मनोकामनाक पूर्तिक निमित्त *झाँप* चढ़बैत अछि । नदीसँ साप बहार करबाक पूर्व वर्षा हैब अवश्यम्भावी अछि। वर्षा भेलापर लोक-विश्वास छैक जे नागदेवता प्रसन्न छथि । गह्वरसँ सिंधिया घाट पहुँचबामे लोकक बीचमे प्रतिस्पर्धा रहैछ जे के पहिने पहुँचैछ । नदीसँ भिन्न-भिन्न दलक भगत लोकनि भिन्न-भिन्न स्थानसँ साप बहार करैछ । नदीसँ विषहीन आ विषयुक्त साप बहार कयल जाइछ । मेला परिसरमे सब सापक संग उपस्थित होइछ आ अपन कौशलक प्रदर्शन करैछ । मिथिलांचलमे ई धार्मिक आस्था अछि जे ओहि दिन सर्प-दर्शन शुभ मानल जाइछ तथा सालो भरि ओकरा साप दंश नहि करैछ । प्रारम्भिक कालमे नदीसँ साप बहार करबाक क्रममे एक दुइ बेर सर्प-दंशसँ भगतक मृत्यु भ' गेल छल । तहियासँ लोक कामाख्या जा क' साप बहार करबाक मन्त्र सीख क' आयल । तत्पश्चात् एहन घटना नहि

भ' जाइत अछि तथा किछु क्षणक पश्चात् ओकरा शत्रु नहि, ईश्वरीय सृष्टिक अपनहि सदृश प्राणी बुझय लगैत छी ।

मानव सभ्यता ओ सर्प :

मानव सभ्यताक उन्मेषक अतिप्राचीन कालहिसँ मानवक हृदयमे भय आ विस्मयक जन्मलब्ध प्रवृत्तिक कारणेँ सामाजिक परिवेशमे प्राचीनतम देवता लोकनिक परिकल्पना कयल गेल । एकरे परिणाम स्वरूप प्रत्येक समाजक प्राचीनतम देवताक प्रत्यक्ष दृष्टि प्रकृतिक अंगीभूत आधिदैविक आ आधिभौतिक भय विस्मयक वस्तु बनल रहल । प्राचीनतम मानव जाति साधारणतया अरण्य वा पर्वतक गुफामे निवास करैत रहथि जकर फलस्वरूप अरण्यचारी जीव-जन्तुक संग ओ सब सतत अपन अस्तित्त्वक रक्षार्थ संग्राम लिप्त रहैत रहथि । अरण्यचारी जीव-जन्तुमे सर्प सबसँ अधिक भीषण प्राणी अछि। भारत सदृश ग्रीष्म प्रधान देशमे जकर संख्या विश्वक अन्यान्य महादेशक अपेक्षा सर्वाधिक अछि। एकरा पराजित करबाक अन्य कोनो साधन मानवक सम्मुख नहि छलैक । संसाधन अलक्ष्य गोचर छलैक, विशेषत: ओकर आकृति आ प्रकृति अन्यान्य जीव -जन्तुक अपेक्षा सर्वथा स्वतन्त्र रहबाक कारणेँ, ई पादहीन अथ च द्रुतगामी, जीर्ण, केचुआ छोड़ि क' बारम्बार ई नव जीवन ग्रहण कयनिहार, साधारण बुद्धिमे अमर, दीर्घ काल धारि नि:शवास रोध क', निराहार रहि क', ई सुदीर्घ कालधरि जीवन यापन क' सकैछ । उपर्युक्त समस्त गुणक कारणेँ एहि जीवक सम्बन्धमे प्राक् सभ्यताक युगमे समाज भुक्त मानव मात्रक हेतु ई कौतूल मिश्रित भय आ विस्मयक अस्तित्त्व नेने रहल । सभ्यताक क्रमिक विकासक फलस्वरूप भय आ विस्मयसँ आक्रान्त भ' कए तथाकथित सामाजिक प्राणीक हृदयमे एकरा प्रति भक्ति-भावनाक उद्भावना होयतैक भेल ।

भारतमे शाक्त धर्मक दुइ विशिष्ट धाराक बीचमे जे धारा वैदिक आर्य धर्मसँ उद्भूत भेल तकर कोनो प्रभाव समाजक जनसामान्यक जीवनपर नहि पड़लैक तथा ओ विस्तृत रूपेँ

एहिमे कतिपय अपूर्व समानता अछि । बाङ्गला-साहित्यक विद्वान लोकनिक धारणा निर्मूल छनि जे बंगालसँ मिथिलांचलमे एकर पूजनक प्रथाक प्रचलन भेल, प्रत्युय मिथिलांचलमे एहि परम्पराक उदय भेलैक जकर पूर्ण विकास आ विस्तार बंगालमे भेलैक आ एकरा आधार मानि क' मनसा-मङ्गल काव्य-परम्परा अव्याहत रूपेँ प्रचलित भेल जे अद्यापि वर्त्तमान अछि । विद्यापति कालीन मिथिलांचलक सामाजिक परिवेशमे ई एतेक व्यापक रूपेँ प्रचलित छल तेँ सम्भवत: ओ अपन आश्रयदाता महाराज नरसिंह दर्पानारायणक आज्ञा पाबि एकर पूजन पद्धतिपर ओ रचना करबाक हेतु प्रवृत्त भेल होयताह ताहिमे सन्देह नहि । यद्यपि बाङ्गला-साहित्यान्तर्गत मनसा-मङ्गल-काव्यक प्राचीनतम एक स्वतंत्र काव्य-धारा उपलब्ध होइछ, किन्तु मैथिली साहित्यान्तर्गत एहि प्रवृत्तिक रचनाक विकास नहि भ' सकल से एक चिन्तनीक विषय थिक । एहि सकल कारणेँ ई धारणा अत्यन्त स्वाभाविक रूपेँ परिपुष्ट होइछ जे मिथिलांचलसँ प्रभावित भ' कए बाङ्गला-साहित्यमे प्रचलित भेल ।

मनसा कथान्तर्गत स्थान ओ ओकर माहात्म्यक सम्बन्धमे उल्लेखनीय थिक धर्मराजक पूजा । बाङ्गला-साहित्यक मनीषी लोकनिक कथन छनि राढ़ क्षेत्रसँ धर्मराजक पूजाक परम्परा मिथिलांचल गेल अछि, किन्तु हुनक सभक ई मान्यता स्वीकार्य नहि, कारण मिथिलांचलमे अनादि कालहिसँ अद्यापि घर-घरमे घर्मराजक पूजाक प्रचलन अछि जे मिथिलांचलक एक संस्कार थिक। मनसा बिहुलाक विवाहक पूर्वहि श्राप देने छलथिन जे विवाह रात्रिमे स्वामीसँ विमुख भ' कए छओ मास घरि जलमे भासि क' मयना नगरमे उपस्थित होयतीह । ओतय तैंतिस कोटि देवताक चरण-वन्दनाक पश्चात् ओ स्वामीकेँ पुनर्जीवित क' पौतीह ।

एतय उल्लेखनीय विषय थिक जे भागलपुरक दक्षिणमे संथाल परगनाक सौतारगण साप झारबाक समयमे जे मंत्र व्यवहृत करैछ ओहिपर बाङ्गला मंत्रक प्रभाव अछि । ओकरा सभसे मनसा-पूजा प्रचलित अछि तथा *देव-गोठी वा बोङ्गा* केँ समाजमे स्थान अछि । ओ सभ मनसा पूजन करैछ ओहि कथान्तर्गत चाँद सौदागरक कतहु उल्लेख नहि अछि,

घटल । वस्तुत: ई मिथिलाक कौतूहल मिश्रित सर्प-मेला थिक जकर चर्चा विश्वमे कतहु नहि उपलब्ध होइछ ।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे ई स्पष्ट भ' जाइछ जे सर्प-पूजनक परम्परा मानव सभ्यताक आरम्भहिसँ अद्यापि पूर्ण आस्था आ धार्मिक भावनासँ प्रेरित भ' एतय मनयबाक परम्परा वर्त्तमान अछि । हमरा दृष्टिएँ सर्प-पूजन परम्पराक शुमारम्भ मिथिलामे भेल जाहिसँ अनुप्राणित भ' कए अन्यान्य देशक अधिवासी लोकनि भय वा विस्मयक कारणेँ एकरा स्वीकार कयलनि ।

नागपंचमी :

मिथीलांचलमे नागपंचमी श्रावणमासक कृष्ण पक्षक पंचमी तिथिकेँ व्रत राखल जाइछ । घैलपर सर्पक आकार बना क' पञ्चोपचार वा षोडषोपचारसँ पूजन कयलापर गिलगर आँटासँ चौमुखी दीपकेँ घृतसँ जरा क' क्षमा याचना करैत नागपंचमीक कथा सुनलापर सुख-शान्ति, ऐश्वर्य, आनन्दक वृद्धिक कामना कयल जाइछ ।

हमारा लोकनिक पूर्वज सर्पकेँ दूध पिऔलनि जकर प्रत्यक्ष निदर्शन नागपंचमीमे दृष्टिगत होइत अछि । नागपंचमीक दिन शास्त्रकार नाग-पूजन आ ओकर प्रसन्नता हेतु वनमे दुग्धादि पदार्थ विसर्जन करबाक विधान कयलनि ।

सृष्टिक इतिहासक संगहि नागराजक गौरव, गाथा, गरिमा दिगदिगन्तमे व्याप्त अछि । बराह पुराणमे एहि उत्सवक प्रारम्भिक इतिहासपर प्रकाश देल गेल अछि जे ओहि दिन सृजन शक्तिक अधिष्ठाता ब्रह्मा अपना प्रसादसँ शेषनागकेँ विभूषित कयने छलाह आर हुनक पृथ्वी रूप धारण क' कए अमूल्य सेवाक हेतु जनमानस अभिनन्दन कयलक ।

भारतीय संस्कृतिमे नागक प्रारम्भहिसँ अति महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । एहि समस्त पृथ्वीक भार अपना ऊपर घारण कयने, ओ आन क्यो नहि एक नाग अछि जे शेष-नाग कहबैछ। लोक-नायक एकरा शैय्या बना क' विश्व-भ्रमणक महान कार्य सम्पादित क' रहल छथि। अमृत लाभक हेतु कयल गेनिहार समुद्र-मन्थन सदृश पवित्र आ महान कार्यमे

झारखण्डक आदिवासी ओ मनसा :

झारखण्डक राँची जिलाक अन्तर्गत उराँव नामक जातिमे मनसा नाम सुनबामे अबैछ । ओ सभ सर्प-मन्त्र जननिहार अर्थात् ओझाकेँ *नागमति* नामे सम्बोधित करैछ । नागमति ओ ओकर शिष्य-समूह ज्येष्ठ वा अषाढ़ मासमे *मनसाक* समीप मुर्गीक बलि प्रदान क' कए पूजा-अर्चा करैछ । एहि उपलक्ष्यमे ओझा वा नागमति ओ हुनक शिष्यगण दिन भरिक उपवास रखैछ आ सन्ध्याकाल नागमतिक लेल एक आ प्रत्येक शिष्यक लेल एक-एक करिया मुर्गीक बलि-प्रदान करबाक परम्परा अछि । सभ मिलि क' एकहि संग मनसा माहात्म्यक कीर्त्तन करैछ तथा एकहि सुरमे थपड़ी बजबैछ । एहि उपलक्षमे सर्प-विष झाड़बाक अनेक मन्त्रादिक आवृत्त कयल जाइछ तथा नाना जातिक सर्पक नामोच्चारण करैछ । मन्त्र द्वारा विष पहिने ऊपर दिस आ पश्चात् जा क' नीचाँ अबैछ । उँराव जातिक बीचमे मनसा माहात्म्य कथा किंवा विविध सर्पक नामक संग्रह अद्यापि सम्भव नहि भ' सकल अछि । से भेलापर ई देखल जा सकैछ जे मिथिलांचलक संग एकरा सभकेँ कोनो सम्पर्क छैक वा नहि । एहना स्थितिमे अनुमान कयल जा सकैछ जे ई मिथिलासँ राँचीक उँराव अंचलमे गेल अछि । किन्तु एहि सम्बन्धमे निश्चित रूपेँ किछु नहि कहल जा सकैछ। तखन एतय उल्लेख योग्य विषय थिक जे मानभूमि ओ हजारीबाग जिला संलग्न अंचलमे विशेषत: कुर्मी लोकनिमे सर्प-देवीक रूपमे मनसा नाम सुपरिचित अछि । किन्तु संथाल परगनाक सौतार सभक बीचमे मनसा अप्रचलित नहि अछि ।

सिंहभूमि जिलाक अन्तर्गत कल्वन अंचलमे *हो* जातिक बीचमे मनसा देवीक नाम प्रचलित अछि । मिथिलांचलसँ ई नाम ओतय गेल हो से सम्भव थिक । किन्तु मिथिलांचल सदृश मनसा-पूजा प्रचलित नहि भ' सकल तथा मनसाकेँ ओ सभ अपन निजस्व उपजातिय संस्कृतिमे अन्तर्मुक्त क' लेलक । ओतय मनसाक कोनो प्रतिमा किंवा घटस्थापना नहि कयल जाइछ । माटिक छोट-छोट मूर्तिक निर्माण क' कए ओकरहि मनसा देवीक रूपसे उद्घोषित कयल जाइछ । *हो* युवकगण ओड़िया ओझाक संग निकट सम्पर्क हैबाक कारणेँ सर्प-मन्त्रक दीक्षा ग्रहण करैछ । अतएव ओतय प्रचलित

मनसा-मंगल काव्यन्तर्गत अंग देशक प्राचीन राजधानी भागलपुर परिसरक निकटस्थ चम्पानगर छल जे अद्यापि वर्त्तमान अछि । राजा अधिरथ कुमारी कुन्ती द्वारा गंगामे प्रवाहित कर्णक पालन-पोषण कयलनि आ पश्चात् जा क' कुरुराज दुर्योधन द्वारा अंगक राजमुकुटसँ विभूषित भेल रहथि । अपना समयक अद्वितीय वीर आ दानी राजा कर्ण अपन शौर्य आ दानशीलताक प्रतीक बनि गेलाह आ ओ आजन्म कुरुराजक संग अपन मित्रता कायम क' कए अभूतपूर्व आदर्श विश्वमे उपस्थित कयलनि *(महाभारत)* । एकर अवशेष अद्यापि भागलपुरक पश्चिम चम्पानगरक कर्ण-गढ़मे वर्त्तमान अछि । ओतय प्रचलित मनसाक गीत सभमे एकर स्थान सुनिश्चित कयल गेल अछि। सप्तम शताब्दीमे चीनी यात्री युयावं चुयावं भारत-भ्रमण करय आयल रहथि । एहि भ्रमणक क्रममे ओ उत्तर बिहारक अन्तर्गत गंगा नदीक दक्षिण तीरवर्त्ती स्थित चम्पानगरमे उपस्थित भेल रहथि तकर उल्लेख ओ कयने छथि । यात्रा-भ्रमण विवरण प्रस्तुत करैत ओ उल्लेख कयलनि जे ओहि समयमे चम्पानगरमे विध्वंसक स्थितिमे ढहल-ढनमानायल मठ सब छल जाहिमे अनुमानत: दुइ सय मठबासी जीवन-यापनार्थ निवास करैत रहथि जाहिमे अनेक ब्राह्मनिकल मन्दिर छल जाहिमे निरन्तर ओ रहथि । एहि सब मठमे प्राय: दुइ सय बौद्ध-यात्री सभक निवास छल । ओ सब हीनयान मतावलम्बी रहथि । एतय करीब तीस देव मंदिर अछि । राजधानीक चारू भाग स्थित प्राचीर इष्टक निर्मित अति उच्च आ शत्रुलोकनिक हेतु दुराक्रम्य अछि *(हिन्दी विश्व कोश)* । *There are scares of ruined convents, in which about two hundred monks still continued to reside-Brahmanical temples were many well frequented (Elephinstone History of India. 1874, Page 294).*

चम्पानगर वर्त्तमान भागलपुर शहरक संलग्न सात किलो मीटरपर अवस्थित अछि । पञ्चम शताब्दीमे चीनी परिव्राजक फा-हियेन पाटलीपुत्रसँ होइत गंगा नदीक तीर ध' कए चम्पानगर आयल रहथि आ ओतहिसँ ओ ताम्रलिप अर्थात् वर्त्तमान समयमे बंगालक हलदिया गेल रहथि । ई चम्पा भागलपुरक निकटवर्त्ती चम्पा थिक जे शतप्रतिशत प्रामाणिक थिक जकर पुष्टि महाभारत एवं कथासरितसागरसँ होइत अछि । ई एक

लाभान्वित नहि भ' सकल । मध्ययुगीन जनसामान्य अनार्य प्रतिवेशी रहलाक कारणेँ अपन आत्म-बोध द्वारा सामाजिक जीवनक उपकरणादिकेँ संग्रहीत क' कए विशिष्ट प्रकृतिक शाक्त धर्मक आदर्शकेँ सुरक्षित रखने रहल जे विशुद्ध रूपेँ आर्य-आदर्शसँ सर्वथा स्वतन्त्र नहि छलैक; प्रत्युत ओकरा आर्य-आदर्शक संग कतिपय विरोधक सामना सेहो करय पड़लैक । आर्य समाज शक्ति-देवताक जे परिकल्पना कयने छल ओहिमे सृष्टि शक्तिक ऊपर अधिक बल देल गेल छलैक । किन्तु तकर विपरीत अनार्य-परिकल्पनामे शक्ति-देवता ध्वंसात्मक गुणपर अधिक बल देल गेल छलैक । एहि उभय आदर्शक परस्पर मौलिक विरोधक बीचक जे इतिहास उपलब्ध अछि से स्वतन्त्र रूपेँ अनुभव गम्य थिक।

आर्य लोकनि रहथि प्रकृतिक दैहिक शक्तिमान जातिक वंशधर । शक्ति साधना द्वारा ओ अनन्त काल धरि व्यक्ति ओ सामाजिक जीवनपर विजय एवं काल्याणक संसाधनक संधान पौलनि, जाहि कारणेँ हुनका सभक शक्ति-देवताक परिकल्पनामे देवताक सृष्टि ओ कल्याणकारी गुणक विरुदावलीक प्रत्याख्यान सुनबामे अबैछ । किन्तु भारतीय अनार्य लोकनिक इतिहास सेहो स्वतन्त्र नहि अछि । प्रागैतिहासिक युगमे अरण्यचारी अनार्य जाति-हिंस्रक-वन्य पशु ओ अपरिज्ञान रहस्य आ विश्व प्रकृतिक सन्निकट हैबाक कारणेँ सतत आतंक आ विभीषिकासँ संत्रस्त रहैत रहथि । एहि कारणेँ ओहि युगमे ओ सभ आत्म-रक्षार्थ सतत सचेष्ट रहबाक लेल ओकरा समक्ष अपेक्षाकृत शक्तिमान जीव समूहसँ सर्वथा फराकहि रहब श्रेयस्कर बुझलनि । देवी-देवता लोकनिक प्रसंगमे हुनका सभक परिकल्पना छलनि जे ओ सभ अनिष्टकारी आ दानव-शक्तिक प्रतीक मात्र छथि । हिंस्र-वन्य- पशुक उपद्रवसँ भारतीय अनार्य आरो एक प्रकारक आधिभौतिक शत्रुक सम्मुख भेलासँ ओ सभ आक्रमणकारी जाति समूहक रूपमे परिवर्त्तित होइत गेल । प्रागैतिहासक युगक प्रारम्भ होइतहि अनेक दिशासँ अनेक जाति भारतमे आबि क' प्रवेश कयलक तकर कोनो वास्तविक लेखा-जोखा नहि अछि । ई समस्त आक्रमणकारी जाति समूह देशक वासोपयोगी समतल भूमि रहितहुँ पर्वत ओ अरण्य प्रदेशमे विस्ताड़ित

कए सिन्दुर लगा क' लाल रंगक पताका लगयाबाक प्रथा अछि । *Mansadeo is also a house hold God, but usually worshipped outside of the home. A Small plateform of mud is raised by the Walls some daubs (usally four) of sindur are put, and small red flags are set up. (The Kol Tribes of Central India W.E. Griffiths, Calcutta, 1940 Page 146)*

पंजाबक आदिम जनजाति द्वारा सितम्बर मासमे सर्प-देवताक अभ्यर्थनार्थ जुलूस बहार करबाक परम्परा अछि जाहिमे सभ प्रजातिक आ धर्मक लोक ओहिमे सम्मिलित होइछ । अगस्त मासक अन्तमे सर्प-वंशक मिरासन आटाँक सर्प बना क' ओकरा लाल कारी रंगसँ रंगि क' सूप राखि क' सम्पूर्ण गाम घुमयबाक परम्परा अछि । जकरा घरक लग द' कए ई जुलूस जाइछ ओ कामना करैछ जे सर्प-देवता अहाँक कल्याणार्थ तथा दुष्प्रवृत्तिक निराकरणार्थ प्रस्तुत छथि । ओतय मान्यता प्रचलित अछि जे एहि संरक्षक देवताक अर्चनासँ लोक सौभाग्यशाली बनैछ । सूपमे राखल कृत्रिम सर्पकेँ गृहस्वामीक आगाँ राखल जाइछ तथा मक्खन लागल आँटाक रोटीसँ स्वागत करबाक परम्परा अछि तथा

ओहिपर चढ़ौआ चढ़बैछ । नव-वधूक आगमनपर वा नवजात शिशुक जन्म भेलापर गृहस्वामी रुपैया-पैसा, सोना-चीनी वा वस्त्र दान करैछ । एहि अवसरपर सर्पसँ सम्बन्धित लोकगीत गायनक परम्परा अछि । तत्पश्चात् कतिपय सर्पकेँ माटिमे गाड़ि देबाक प्रथा अछि । नौ ओ दिन धरि ओहि क्षेत्रक महिलागण सर्पक सारापर पूजा-अर्चा करैछ आ प्रसादमे दही चढ़ैबाक परम्परा अछि । ई कल्पित सर्प वास्तविक सर्पक प्रतिनिधित्त्व करैछ।

मिथिलांचलमे मनसा नाम सुदूर हरियाणा वा पंजाब वा उत्तराखण्ड वा उत्तरप्रदेशसँ आयल किंवा स्वत: उद्भूत भेल ताहि प्रसंगमे निश्चित रूपेँ किछु नहि कहल जा सकैछ । कारण एक समयमे मिथिलांचलक सपेरा सम्पूर्ण भारतवर्षक विभिन्न अंचलमे भ्रमण क' कए जीवकोपार्जन करैत छल । अद्यापि ओकर वंशघर एहि व्यवसायमे लागल अछि जे उत्तर प्रदेश वा उत्तराखण्डक विभिन्न अंचलमे निवास करैत अछि ।

प्रचलित भ' लोकप्रियता अर्जित कयने अछि ।

मिथिलांचलक समस्तीपुर जिलान्तर्गत सिंधिया घाटक परिसरमे प्रतिवर्ष नागपंचमीक दिन एक रोचक मेला लगैत अछि जे सापक मेला नामे विख्यात अछि । ई मेला अनादि कालहिसँ आयोजित भ' रहल अछि जाहि प्रसंगमे ठोस प्रामाणिक इतिहास अनुपलब्ध अछि । किन्तु जनश्रुति अछि जे ई अति प्राचीन अछि । एहि मेलामे सब वयसक लोक हाथमे वा गर्दनिमे साप लपेटने रहैत अछि । एहि सांस्कृतिक अवसरपर करीब पचास हजार लोक भिन्न-भिन्न स्थानसँ एतय उपस्थित होइछ जे मिथिलांचलक सांस्कृतिक जीवनमे सापक महत्त्वकेँ प्रदर्शित करैछ । नागपंचमीक दिन आयोजित भेनिहार सापक मेलामे सापक दहशतक आभास ककरो मुखमण्डलपर नहि रहैछ । चाहे छोट बच्चा हो वा डेरबुक पुरुष वा भयभीत भेनिहार स्त्रीगणसब आह्लादपूर्वक सापकेँ धारण करैछ, कारण लोक-विश्वास छैक जे ओहि दिन साप ककरो नहि काटैछ । ओहि परिसरक कतेक एहन परिवार अछि जे नागपंचमीक अवसरपर नदीसँ साप बहार क' कए लोकक सोझाँ प्रदर्शन करबाक पुश्तैनी कला विद्यमान रखने अछि । एहि कलाक मर्मज्ञकेँ *भगत* कहल जाइछ तथा लोकक विश्वास छैक जे भगवतीक असीम कृपासँ ई कौशल हुनका लग आयल अछि ।

नागपंचमीसँ किछु दिन पूर्वहि गह्वरपर स्त्रीगण विषहरीक गीत गबैत अछि तथा ओकर पूर्व संध्यामे भगत ओतय साप बहार करैछ । गह्वरपर भक्तजन अपन मनोकामनाक पूर्तिक निमित्त *झाँप* चढ़बैत अछि । नदीसँ साप बहार करबाक पूर्व वर्षा हैब अवश्यम्भावी अछि। वर्षा भेलापर लोक-विश्वास छैक जे नागदेवता प्रसन्न छथि । गह्वरसँ सिंधिया घाट पहुँचबामे लोकक बीचमे प्रतिस्पर्धा रहैछ जे के पहिने पहुँचैछ । नदीसँ भिन्न-भिन्न दलक भगत लोकनि भिन्न-भिन्न स्थानसँ साप बहार करैछ । नदीसँ विषहीन आ विषयुक्त साप बहार कयल जाइछ । मेला परिसरमे सब सापक संग उपस्थित होइछ आ अपन कौशलक प्रदर्शन करैछ । मिथिलांचलमे ई धार्मिक आस्था अछि जे ओहि दिन सर्प-दर्शन शुभ मानल जाइछ तथा सालो भरि ओकरा साप दंश नहि करैछ । प्रारम्भिक कालमे नदीसँ साप

कयलक । अधिकांशत: दैहिक शक्ति सम्पन्न ई समस्त आक्रमणकारी जाति समूह ओकरा सभक सम्मुख हैबामे असमर्थ भ' कए भारतक आदिम अनार्य समूह अरण्य आ दुर्गम प्रदेशक अभ्यन्तरमे जा क' आश्रय लेलक । एहि प्रकारेँ मानवक सामाजिक जीवन सतत विपर्यस्त भ' गेल आ एहि ठामक अनार्य समाज शक्तिक हितकारी कोनो गुणक आभासक लाभ नहि प्राप्त क' सकल । एहि कारणेँ हुनका सभक परिकल्पनामे शक्ति देवता अहितकारी आ अनर्थमूलक कहि क' ग्रहण कयल गेल ।

उपर्युक्त पृष्ठभूमिमे मिथिलाक लौकिक शाक्त धर्मक पुनरुत्थानक अनुरूप इतिहासक लक्ष्य कयल जा सकैछ । शैव-धर्म जखन मिथिलाक स्थिलशील निरुपद्रव समाजक ऊपर अपन प्रतिष्ठाक स्थापनार्थ उपयुक्त अवकाश पौलक तखन एहि ठामक समाजक ऊपर बाहरसँ आयल विक्षोभक कारण बनि गेल । मुसलमान लोकनिक विजयोपरान्त एहिठामक जनसाधारणक रक्षणशील धर्म मतक ऊपर जे राष्ट-शक्तिक जोर-जुलूम प्रारम्भ भेलैक ताहिसँ प्रभावित समसामयिक घटना मिथिलाक इतिहासान्तर्गत उपलब्ध अछि । एहना स्थितिमे निष्क्रिय शैव-धर्मक आदर्श शनै:-शनै: समाजसँ विदा होमय लागल । प्रबल राष्ट्र-शक्तिक सम्मुख सकल समाज अपनाकेँ असहाय बुझि क' ओकर आधिपत्य देखि क' निष्कृत लाभक लेल भयंकर शक्ति देवताक उद्‌बोधन कयलक । एहि प्रकारेँ चतुर्दश शताब्दीक प्रवेशोपरान्त मिथिलाक समाज समग्र रूपेँ नूतन करबाक उद्देश्यसँ लौकिक शक्ति-मन्त्रक दीक्षा ग्रहण करबाक लेल उत्सुक भेल । समकालीन समाज एक भाग नैयायिक एवं स्मार्त हिन्दू-सम्प्रदाय आ दोसर भाग मुस्लिम-सम्प्रदाय एहि उभय कृर्तक युगसँ आक्रान्त छल । किन्तु मिथिलान्तर्गत पञ्चदेवोपासनाक पद्धति ततेक प्रसिद्धि प्राप्त कयने छल जे ओकर अस्तित्त्वपर कोनो प्रकारक संकटक मेघ आच्छादित नहि भ' सकल ।

धर्मक क्षेत्रमे मिथिलांचलक समाज प्रमुखत: सनातन धर्मी रहल अछि । यद्यपि एतय शिव, शक्ति एवं विष्णुक उपासनाकेँ प्रमुखता रहलैक तथापि अन्यान्य देवी-देवताक प्रति

आच्छादित क' लेलक । एकर कथानक व्यापक लोकप्रियता अर्जित क' कए ई बाङ्गला साहित्यक रामायण सदृश पूजित भ' रहल अछि । सर्प-पूजनक व्यापक लोकप्रियता आ जनप्रियता एकर व्यापक प्रचार-प्रसारक अन्यतम कारण रहितहुँ एकरा स्वीकार करय पड़ैछ जे ई एक कल्पित कथा थिक जे ओहि समय बंगाल मिथिला आ आसाममे सर्वत्र कथागत ऐक्यक रक्षा करितहु एहि प्रकारक लाभ प्राप्त कयलक ।

बाङ्गला-साहित्यक किछु विद्वान लोकनिक मत छनि जे चाँद सौदागर बंगालक नहि रहथि। बिहुलाक चरित्रगत वैशिष्ट्यपर ओ सभ दक्षिणात्य भ्रमणक अनुमान करैत छथि, कारण विवाह कालमे हुनका चरित्रमे बंगाली नारीक कमनीयताक अभाव लक्षित होइछ । क्षितिजमोहन सेनक कथन छनि जे विवाह कालमे बिहुलाक तेज ओ निर्भीकता आ स्वामीक संग नदीमे प्रवाहित हैब एक साहसिक काज थिक । तत्पश्चात् श्वसुर गृहमे स्वामीक अर्थीक संग अपन अर्थी साजब सेहो परिहास पूर्ण थिक । एहन स्वाधीनताक आशा नहि कयल जा सकैछ । देवपुरीमे नृत्य क' कए देवता लोकनिकेँ प्रसन्न करबाक काज तँ देवदासीक थिक । ई प्रथा बंगालमे नहि प्रचलित अछि, प्रत्युत ई तँ तैलङ्गाक वस्तु थिक । *(प्रवासी 394-95)* । एकर विपरीत हरेन्द्र मुखोपाध्याय उपर्युक्त कथनक प्रतिवाद कयलनि जे बिहुलाक चरित्र बाङ्गला देशक नारीक प्रतिकूल नहि तकरा ओ प्रमाणित कयलनि *(प्रवासी भाद्र, 1329, 733)* । एकर कथाक उद्‌भवक मूलमे ओ दक्षिणात्य वा तैलङ्गक दावी उपस्थित करबाक हेतु ओ जे तर्क देलनि जे नृत्य द्वारा देवताकेँ प्रसन्न करबाक परम्परा ओतहि प्रचलित अछि, किन्तु से नहि एहन परम्परा बंगालहुमे नहि अछि । मनसा-मंगल काव्यानार्गत बिहुलाक चरित्रमे सर्वत्र एहि गुणक विशेष रूपेँ चित्रित कयल गेल अछि । एहि प्रकारेँ एहि कथाक परिणतिपर सेहो निर्भर करैछ । किन्तु मुसलमानक आक्रमणक पूर्व बाङ्गला-समाजमे बंगाली नारीक नृत्य अवश्य शिक्षणीय विद्या छल जकरा विभिन्न स्रोतसँ जानल जा सकैछ। मनसा-मंगलमे शिव सर्वत्र नटराज नृत्यसँ आनन्द प्राप्त करैत छथि । एहि प्रकारेँ ई गुण बंगाली नारीक गुण मानल जाइत छल ।

बहार करबाक क्रममे एक दुइ बेर सर्प-दंशसँ भगतक मृत्यु भ' गेल छल । तहियासँ लोक कामाख्या जा क' साप बहार करबाक मन्त्र सीख क' आयल । तत्पश्चात् एहन घटना नहि घटल । वस्तुत: ई मिथिलाक कौतूहल मिश्रित सर्प-मेला थिक जकर चर्चा विश्वमे कतहु नहि उपलब्ध होइछ ।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे ई स्पष्ट भ' जाइछ जे सर्प-पूजनक परम्परा मानव सभ्यताक आरम्भहिसँ अद्यापि पूर्ण आस्था आ धार्मिक भावनासँ प्रेरित भ' एतय मनयबाक परम्परा वर्त्तमान अछि । हमरा दृष्टिएँ सर्प-पूजन परम्पराक शुमारम्भ मिथिलामे भेल जाहिसँ अनुप्राणित भ' कए अन्यान्य देशक अधिवासी लोकनि भय वा विस्मयक कारणेँ एकरा स्वीकार कयलनि ।

नागपंचमी :

मिथीलांचलमे नागपंचमी श्रावणमासक कृष्ण पक्षक पंचमी तिथिकेँ व्रत राखल जाइछ । घैलपर सर्पक आकार बना क' पञ्चोपचार वा षोडषोपचारसँ पूजन कयलापर गिलगर आँटासँ चौमुखी दीपकेँ घृतसँ जरा क' क्षमा याचना करैत नागपंचमीक कथा सुनलापर सुख-शान्ति, ऐश्वर्य, आनन्दक वृद्धिक कामना कयल जाइछ ।

हमारा लोकनिक पूर्वज सर्पकेँ दूध पिऔलनि जकर प्रत्यक्ष निदर्शन नागपंचमीमे दृष्टिगत होइत अछि । नागपंचमीक दिन शास्त्रकार नाग-पूजन आ ओकर प्रसन्नता हेतु वनमे दुग्धादि पदार्थ विसर्जन करबाक विधान कयलनि ।

सृष्टिक इतिहासक संगहि नागराजक गौरव, गाथा, गरिमा दिगदिगन्तमे व्याप्त अछि । बराह पुराणमे एहि उत्सवक प्रारम्भिक इतिहासपर प्रकाश देल गेल अछि जे ओहि दिन सृजन शक्तिक अधिष्ठाता ब्रह्मा अपना प्रसादसँ शेषनागकेँ विभूषित कयने छलाह आर हुनक पृथ्वी रूप धारण क' कए अमूल्य सेवाक हेतु जनमानस अभिनन्दन कयलक ।

भारतीय संस्कृतिमे नागक प्रारम्भहिसँ अति महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । एहि समस्त पृथ्वीक

अनुमान कयल जा सकैछ जे स्थानीय कोनो लौकिक सर्प-देवी हिन्दू किंवा बौद्ध-धर्मक बीचमे प्रवेश क' गेल छल । विशेषज्ञ लोकनिक अनुमान छनि जे ई मन्दिर प्रथम शताब्दीक निर्मित थिक । किन्तु एहि मंदिरक ऐतिह्य-धारा कोनो दिन एकहि बेर लुप्त नहि भेल हैत । ओतय कतिपय *मनियार मठ* कहि क' एक मन्दिर परिचित अछि । स्थानीय अधिवासी लोकनि अद्यपर्यन्त मनियार नामक नागक पूजा-अर्चना करैत आबि रहल छथि । बिहारमे प्रचलित जनश्रुतिक अनुयायी मनियार नामक सर्पक बासगृहमे लखिन्दर केँ दंश मारने छल । मनियारक संगहि मनसाक उच्चारण गत सामान्य अछि तकरा ऊपर निर्भर भ' कए मनियार शब्दसँ मनसा शब्दक उत्पत्ति भेल एहन धारणा करब असंगत नहि हैत । तथापि एक विषय एतय स्पष्ट अछि जे पूर्व भारतक अंचलमे नारी-रूपा सर्प-देवी अत्यन्त प्राचीन कालहिसँ प्रचलित अछि । एहि तथ्यकेँ अवश्य स्वीकारल जा सकैछ जे वर्त्तमान समयमे एहि नारी मूर्ति समूहक पूजन करबाक बदलामे एहिठामक मनियार नामक सर्पक उद्देश्यहिसँ पूजा निवेदन करबाक प्रथा प्रचलित अछि ।

उत्तर भारतक मनसा :

हरियाणाक अम्बाला ओ गुड़गाँव जिलामे सर्प-देवीक दुइ मन्दिर अछि तथा मन्दिरक अधिष्ठात्री देवीक नाम मनसा थिक *(A Glossary of Tribes and castes of Panjab and North Western Frontier Provinces, Lohore, 1919 W. A. Rose Page 310)* उत्तराखण्डक हरिद्वार परिसरमे मनसा नामक पहाड़क एक टीला अछि जाहिपर मनसा देवीक एक छोटछीन मन्दिर अछि । मन्दिरमे एक छोटसन देवी-मूर्ति थिक, किन्तु ओकरा सर्पक संग कोनो सम्पर्क नहि दृष्टिगत होइछ । एहि क्षेत्रक तथा उत्तर प्रदेशक दलित जातिक लोकक बीचमे अद्यापि मनसा नाम सुनबामे आबि रहल अछि । मध्य प्रदेशमे कोनो जातिक बीचमे *पूं दवेताक* प्रसंगमे मनसाक कथा प्रचलित अछि, किन्तु आपत दृष्टिएँ सर्पक संग ओकर कोनो सम्पर्क नहि देखल जाइछ । मनसा झारखण्डक देवघरक देवता छथि जनिक अर्चना घरक बाहर होइछ । माटिक एक छोट प्लेट फौर्मक निर्माण क' कए घरक देवतासँ सटा क' बनाओल जाइछ, साधारणत: ई सर्पाकृत चारक निर्माण क'

समाजमे प्रचलित अछि जाहिमे उल्लिखित चाँद सौदागर, लखिन्दर ओ विहुलाकेँ ल' कए विद्वत समाजान्तर्गत मतैक्यक अभाव अछि। वस्तुत: मनसा कथा कतयसँ आयल ई एक अहं प्रश्न अछि । एकर मूलमे कोनो ऐतिहासिक सत्य थिक किंवा नहि । एहि दूहू प्रश्नक उत्तर देब समय-साध्य नहि । बाङ्गला-साहित्यक वरेण्य मनसा-मंगल कविगण अपना दृष्टिएँ अपन भौगोलिक ज्ञानक परिप्रेक्ष्यमे कथामे उल्लिखित घटना स्थलकेँ सीमा वद्ध करबाक उपक्रम कयलनि, तकर परिणाम भेल जे बङ्गाल, आसाम आ मिथिलाक अनेक स्थानपर चाँद सौदागरक निवास भूमिक प्रसंगमे समान दावी प्रस्तुत कयलनि । एहिमे ककर दावीक समर्थन कयल जाय ताहि प्रसंगमे कोनो निर्णय योग्य प्रमाणक अभाव अछि। प्रत्येक विद्वान अपन-अपन मतक प्रतिपादनार्थ जे-जे तर्क-वितर्क कयलनि ताहिपर विचार करब एहि परिप्रेक्ष्यमे प्रयोजनीय अछि ।

किछु विद्वानक मत छनि जे एकर कथा नायक आगमन दक्षिण भारतसँ पूर्वोत्तर भारतमे भेल । किन्तु हुनका लोकनिक मतामतक गम्भीर रूपेँ अनुसरण कयल जाय तँ चाँद सौदागर मूलत: व्यापारी रहथि जनिका दाक्षिणात्य स्थित समुद्रक संग निविड़ सम्बन्ध छलनि । एकर विपरित बाङ्गला-साहित्यक अध्येता लोकनि अपन मतामतक प्रतिपादनार्थ एकर उत्पत्ति स्थल राढ़देशकेँ जे वर्त्तमान वर्द्धमानक समीपस्थ वीरभूम जिलान्तर्गत अबैछ, तकरा निरूपति करबाक उपक्रम कयलनि । हुनका सभक कथन छनि जे राढ़ देशपर जखन मुसलमान लोकनिक आक्रमण भेलनि तखन ओ सभ पूर्व बङ्ग पलायन क' गेलाह जाहि प्रसंगमे हम मनसा ओ बंगाल शीर्षकान्तर्गत विस्तारसेँ विश्लेषण करब । किन्तु एहि मान्यताक प्रसंगमे ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक अवगाहन करैत ही तखन ठोस प्रामाणिक तथ्यक अभाव दृष्टिगत होइछ ।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे निर्विवाद रूपेँ घोषणा कयल जा सकैछ जे मनसा पूजनक उत्पत्ति स्थल मिथिला थिक तँ विश्व कवि विद्यापति एकर पूजन पद्धतिक निमित्त *व्याडीभक्तितरङ्गिणी* क रचना कयलनि जकर व्यापक प्रचार-प्रसार ओहिना भेलैक जहिना हुनक *दुर्गाभक्तितरङ्गिणी* आ *काव्य-वल्लरी* सम्पूर्ण बाङ्गला-साहित्यकेँ

ओ सभ समान रूपेँ आस्थावान रहलाह । समसामयिक मिथिलांचलक सामाजिक जीवनमे अन्यान्य देवताक अपेक्षा शिव सर्वाधिक लोकप्रिय रहलाह । एतय शक्तिक उपासनाक अधिकता रहलैक । शक्तिदात्राक रूपमे ओ पूजित होइत छलाह । एद्तिरिक्त शाबर-संस्कार, दुर्गा-पूजन, सर्प-पूजन, मातृका-पूजनक दीक्षा आदि मिथिलाक धार्मिक जीवनमे शक्तिक महत्ता अधिक रहलैक । मिथिलांचलक सामाजिक जीवनमे वैषणव धर्मक प्रति सेहो पूर्ण आस्था छलैक । एतय सब प्रकारक वैष्णव उत्सव, वैष्णव पर्व मनयबाक परम्परा छलैक । हरिवंश, ब्रह्मवैवर्त्त एवं भागवत-पुराणक लोकप्रियता, विष्णु भक्तिक प्रतीमान थिक । किन्तु एतबा स्वीकार करबामे कोनो तारतम्य नहि होइछ जे वैष्णव-धर्मक अपेक्षा एतय शिव-शक्तिक भक्तिक परम्परा रहल अछि ।

त्रयोदश एवं चतुर्दश शताब्दीमे ब्राह्मण धर्म प्रधान मिथिलाकेँ एक भिन्न विषम आ प्रतिकूल धर्मक सामना करय पड़लैक। ओ धर्म छल इस्लाम जे तुर्क विजेता लोकनिक संग एहि क्षेत्रमे प्रवेश कयलक । यद्यपि धार्मिक नेता आ समसामयिक निबन्धकार लोकनि तकर प्रतिरोध करबाक उपक्रम अवश्य कयलनि, किन्तु समयक प्रवाहक संग इस्लाम सेहो हिन्दू धर्म आ समाजपर अपन प्रवाहक प्रचार कयलक ।

एहन विषम स्थितिमे मिथिलाक सामाजिक जीवन विप्लवयात्मक स्थितिमे आबि गेल तँ एहिठामक अधिवासी लौककि शाक्त-धर्मक पुनुरुत्थान कयलनि जकर प्रभाव पड़लैक तथा आकेर विस्तार सेहो भेलैक । एहना स्थितिमे असहाय आ दुर्बल समाज अपन प्रयोजनकेँ ग्लानि मानि मुक्ति पयबाक उद्देश्यसँ अदृश्य देवता लोकनिक कल्पित ध्वसं शक्तिक उद्वोधन क' कए अपन जीवन बचयबाक प्रयास कयलक । एहि प्रकारेँ मिथिलाक सामाजिक जीवनमे लौकिक शाक्त-धर्मक पुनुरुत्थान भेलैक, जकर दृष्टान्त समसामयिक काव्यमे शिवक विशिष्ट आध्यात्मिक प्रवृत्तिक विकास भेलैक । विभिन्न प्रकृतिक लौकिक शाक्त-देवतादिक महाकीर्त्तन एहि प्रवृत्तिक रचनाक मुख्य उद्देश्य छलैक । ब्राह्मण समाजक बहिर्भागमे एकर उदय भेलैक । इएह कारण अछि जे मनसा-

कालमे रचना नहि भेल छल । एहि आधारपर अनुमान करय पड़ैछ जे एकादश-द्वादश शताब्दीक पूर्ववर्त्ती कालमे एकर रचना नहि भेल छल । एहि आधारपर अनुमान करय पड़ैछ जे एकादश-द्वादश शताब्दीमे ई शब्द संस्कृत पुराण ओ अभिधानमे प्रवेश कयलक। किन्तु अहं प्रश्न थिक जे ई शब्द कतयसँ आयल ।

अर्वाचीन संस्कृत अभिधानादिमे मनसा शब्दक जे व्युत्पत्ति निर्देशित अछि ओ असन्तोष जनक थिक । ताहि कारणेँ ई अनुमान सापेक्ष थिक जे ई शब्द भारतीय कोनो अनार्य भाषासँ आयल हो । संस्कृत अभिधानादिमे एहि शब्दक व्युत्पत्ति एहि प्रकारेँ निर्देशित तँ अछि *मनसा सृष्टा इति मनसा* उलूक समास । एकर व्यारव्यान्त रूपमे कहल गेल अछि जे *कश्यपेन मनसा सृष्टा।* किन्तु प्रकृत पक्षमे मनसाक प्रचलित कथान्तर्गत मनसा देवीकेँ कश्यप द्वारा सृष्ट कहल गेल अछि तकर आभास मात्र भेटैछ । अतएव ई शब्द अनार्य भाषासँ आयल हो ताहिमे संशयक कोनो कारण नहि । एहना स्थितिमे प्रश्न उपस्थित होइछ जे ई शब्द कोन अनार्य भाषासँ आयल, ओहिपर विचार करबाक प्रयोजन अछि ।

एहि विषयकेँ आलोकित करबाकाल भारतक आर कोनो अंचलक सर्प-देवीक नाम मनसा थिक वा नहि तकरो संघान करबाक प्रयोजन अछि । उत्तर भारतक अंचलमे सर्प-देवीक पूजा अत्यधिक प्रचलित नहि । सर्वत्र प्राय: नाग-देवताक रूपमे वासुकिक पूजा प्रचलित अछि जाहिमे एक दुइ स्थानपर एहिमे व्यतिक्रम अछि जकरा आलोचित कयल जा सकैछ।

राजगीरक मनियारमठ:

बिहारक अन्तर्गत प्राचीन राजगृह ध्वंसावशेषक उत्खननोपरान्त एक सर्प-मन्दिर आविष्कृत भेल अछि ताहि स्थानक नाम राजगीर थिक । मन्दिरक बीचमे अनेक नारी रूपाकृत नागिनक मूर्ति अक्षत रूपेँ प्राप्त भेल अछि । एहि आधारपर अनुमान कयल जा सकैछ जे ई नागिन समूह सर्प-देवीक रूपमे एक समयमे पूजित होइत छलीह । यद्यपि प्राचीन हिन्दू किंवा बौद्ध-धर्म ग्रन्थादिमे नागिन-पूजनक कतहु उल्लेख नहि भेटैछ, तथापि

भार अपना ऊपर घारण कयने, ओ आन क्यो नहि एक नाग अछि जे शेष-नाग कहबैछ। लोक-नायक एकरा शैय्या बना क' विश्व-भ्रमणक महान कार्य सम्पादित क' रहल छथि। अमृत लाभक हेतु कयल गेनिहार समुद्र-मन्थन सदृश पवित्र आ महान कार्यमे रस्सीक कार्य करबाक हेतु नागराज वासुकि द्वारा अपन शरीर समर्पित करब पुराण प्रसिद्ध अछि । देवमाता अहितिक सहोदर बहिन कद्रूक पुत्र हैबाक कारणेँ नाग-देवताक अनुज भाय छथि।

शिवकेँ नागेन्द्रहाराय कहल गेल अछि । अनेक विषधर नाग सतत हुनक शरीरक शोभा बढ़ौलनि । वेदमे कहल गेल अछि:

नमोऽस्तुत सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनुयेऽन्तीक्षे ये देवि तेम्य : सर्पेभ्यो नम :
(युजर्वेद)

वेदक कतिपय ऋचादिमे नागक स्तुति एवं पूजाक विधान कहल गेल अछि । हिन्दू समाजमे नाग-पूजाक प्रथा द्रविड वा अन्य जाति अनार्यक सम्पर्कसँ नहि आयल, प्रत्युत अनादि कालहिसँ नागक अस्तित्त्व देवी-देवताक संग वर्णित अछि ।

पुराणमे नागक प्रसंगमे प्रचुर सामग्री अछि । अग्नि-पुराणमे लगभग अस्सी प्रकारक विभिन्न नागकुलक वर्णन कयल गेल अछि जाहिमे अन्तत: वासुकि, पद्म, महापद्म, तक्षक, कुसीर, कर्कोटक आ शंख प्रमुख मानल गेल अछि । नागक पृथक् लोक नाग लोकक वर्णन पुराणमे भेटैछ ।

भारतमे नाग पूजनक व्यापकताक परम्परा प्रागैतिहासिक कालसँ चल आबि रहल अछि । दक्षिण भारतमे कनाडा जिलामे विद्यमान विशाल नागमूर्ति, जकर निर्माण ईस्वी सनसँ पूर्व भेल छल, जकर वर्णन चारिम शताब्दीमे भारतमे नागक प्रति जनमानसमे विद्यमान असीम श्रद्धाक निदर्शन अछि । अजन्ताक गुफामे नाग-पूजाक चित्र सेहो नाग-पूजाक प्राचीनताक प्रमाण अछि । अबुल फ ालक लेखानुसार अकबर कालीन भारतमे मात्र कश्मीरमे सात सय सँ बेसी स्थानपर सर्प-मूर्तिक पूजा होइत छल ।

पूजनमे कतहु ब्राह्मण-चरित्र संधान नहि भेटैछ । एकर कथानायक वैश्य सौदागर छथि जाहिपर संस्कृतक कोनो प्रभाव नहि छैक । बिहुला, सोनका, लखिन्दर, साइबेन आदि तकर प्रमाण थिक । ब्राह्मण समाजक बाहर एकर मूल कथाक आविर्भावक पूर्वहि एकर सम्पूर्ण साहित्यिक अवयव प्राप्त करबामे समर्थ नहि भेल । समसामयिक समाजान्तर्गत एकर आकर्षण ब्राह्मण लोकनिकेँ सेहो भेलनि । इएह कारण थिक जे कालजयी विश्वकवि विद्यापति *(1360-1448)* सर्प-पूजन पद्धतिमे हस्तक्षेप कयलनि । भारतक सर्प-पूजनक इतिहास तकर साक्षी थिक जे समाजमे सर्प-पूजन आश्रय ल' लेने छल । अतएव समाजमे सर्प-देवताक प्रतिष्ठाक संगहि मनसा वा विषहरीक इतिहास सम्बद्ध अछि । भारतमे सर्वत्र सर्प-देवताक परिकल्पना एक अभिन्न ऐतिह्य धाराक अनुसरण क' कए विकसित नहि भेल, प्रत्युत विभिन्न जातिक विभिन्न ऐतिह्य धाराक अनुसरण क' कए भय आ विस्मयक कारणेँ विकसित भेल, तेँ एकर प्रकृति अत्यन्त जटिल अछि ।

पौराणिकी ओ सर्प :

पौराणिकीक उदय, सम्भाव्यता आ विनाशक अन्तर्गत जलवायु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैछ । सभ्यताक विकासक संगहि-संग पौराणिकी (*Mythology*) क अध्ययन - अनुशीलन, मनन-चिन्तन,. पठन-पाठनक दिशामे अभूतपूर्व विकास भेल जाहिमे सभ्यताक विकास-परम्परा आ सामाजिक परम्परादि अपन मौलिक स्वरूपकेँ यथावत संरक्षित रखने रहल । यथार्थत: पौराणिकी एक संक्षिप्त नाटकीय रंगमंच आ अभिलेख-संग्रह थिक जे आक्रमण, प्रवजन, सामाजिक परिवर्त्तनक लेखा-जोखा प्रस्तुत करैछ । एहि दिशामे पौराणिकीक यथोचित अध्ययन, मनन आ चिन्तनक अनिवार्यता अपेक्षित अछि जाहिमे ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं मानव शास्त्रीय ज्ञानक दुर्बोध अक्षय भण्डारक संगहि-संग गाछ-वृक्ष एवं अरण्यचारी जीव-जन्तुक स्वभावादिक यथार्थ जानकारी ओहिमे उपलब्ध होइत अछि ।

जनमेजयक सर्प-सत्रमे आतंक भेलाक कारणेँ सर्प आ नागक अभिन्नताक सम्बन्धमे धारणाक सृष्टि होमय लागल । किन्तु एहिसँ सहजहि बुझल जा सकैछ जे नाग जाति सेहो सर्प-पूजक छल कहि क' सर्प-कुलक विनाशक आशंका आ तकर आतंक नितान्त स्वाभाविक । सर्प-सत्र रहित करबाक कारणेँ ओकरा सभक इएह व्यग्रता छलैक । जे हो, ई सत्य थिक जे महाभारतक परवर्त्ती कालमे नाग आ सर्पकेँ कखनो स्वतन्त्र आ कखनो अभिन्न रूपेँ देखबाक परम्पराक सूत्रपात भेल ।

महाभारत उपर्युक्त कथा व्यतीत भ' गेल आ बौद्ध-साहित्य आ अन्यान्य भारतीय-साहित्यमे नाग ओ सर्पक विशेष स्थानक अधिकारी बनल । ई मानि लेल गेल जे महाभारतक कथामे एकर प्रधान अवलम्बन छल से कहि क' एकरा बीचमे नाग ओ सर्प विषयक इएह अनिश्चितता अद्यापि दूर नहि भेल अछि ।

मिथिलांचलमे सर्प-पूजन :

वैदिक कालक आरम्भहिसँ महाभारत किंवा बौद्ध-साहित्य पर्यन्त धरि सर्प-कुलक अधिष्ठात्री कोनो विशेष स्त्री-देवता किंवा कोनहु प्रधान सर्पणी चरित्रक उल्लेख कतहु नहि भेटैछ । सर्व प्रथम महाभारतमे नागराज वासुकिक भगिनी जरत्कारुक उल्लेख आ ओकर विस्तृत परिचय उपलब्ध होइछ, किन्तु ओकरापर कोनो रूपेँ देवताक आरोपक उल्लेख नहि भेटैछ । किन्तु परवर्त्ती कालमे नाग राज वासुकिपर देवत्त्वक आरोप अवश्य भेल, परंच जरत्कारुपर कोनो दिन देवत्त्व क' आरोप नहि भेलैक । निश्चये परवर्त्ती कालमे ओ मिथिलांचलमे नाग-देवीक संग अविभाज्य सम्बन्ध रहलाक कारणेँ देवत्त्वक मर्यादा प्राप्त करबामे सफल भेल होयतीह । जँ महाभारतक कथाक अनुसरण कयल जाय तँ जरत्कारुक गर्भसँ जन्मोपरान्त ओकर अस्तित्त्व वा प्रधानता लुप्त भ' गेलैक । प्राग्महाभारतीय युगक *ऐतरेय ब्राह्मणमे* एक स्थानपर सर्प-राज्ञी कथाक उल्लेख अवश्य भेल अछि ; किन्तु ओहि स्थलपर सर्प-राज्ञीक अर्थ थिक पृथ्वी ने कि सर्प-कुलक राज्ञी ।[२]

रामायण, महाभारत, पुराणसँ निरपेक्ष एक स्वाधीन लौकिक मनसा कथा मिथिलांचलक

आसामक नागजातिमे नाग-देवता समुद्भूत हैबाक प्रमाण पाओल जाइछ । ओड़ीसा आ महाराष्ट्रमे ई प्रमुख त्योहार अछि । पंजाबमे ई पूजा गूंगाक पीर-पूजाक नामसँ प्रचलित अछि । ओहि वीरकेँ नागावतार मानल जाइछ । सर्वत्र ध्वजा फहराओल जाइछ ।

वैदेशिक सभ्यतादिक आदि स्रोत यूनान एवं मिश्र आदि देशमे नाग जातिक आइओ एहन श्रद्धा अछि जे ओतय देव-मन्दिरमे सर्प पोसल जाइत अछि । सिकन्दर महानक विषयमे एहन अनुघारणा आ जनश्रुति अछि जे यूनानी-देवता श्रय्यन सर्पक रूप धारण क' कए ओलम्पियाक कोखिसँ सिकन्दरक जन्म देने छलीह । जखन सिकन्दर भारतमे प्रवेश कयलनि तखन सर्वप्रथम सर्प-वघक निषेधक आदेश देलनि ।

चीनक राजधानी पीकिंग मध्य स्थित विशाल नाग मंदिर चीनी जनताक नाग-पूजा सम्बन्धी श्रद्धाक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करैछ । आस्ट्रेलिया, लिथुवालिना, स्वीडन, नार्वे, आफ्रिका आदि विभिन्न देशमे एखनो सर्प-पूजनक परम्परा अनुवर्त्तमान अछि ।

जीन-विज्ञानक अनुसारेँ संसारक भिन्न-भिन्न भागमे एक सय एकैस जातिक सर्पक पता लागल अछि जाहिसँ निकृष्ट जातिक सर्पकेँ छोड़ि क' शेष सर्प एहन नहि अछि ।

मनसा ओ बंगाल :

बाङ्गला-साहित्यान्तर्गत मनसा-मङ्गल-काव्य एक सुनिश्चित ऐतिहासिक काव्य परम्पराक प्रारम्भ भेल जे अद्यापि साहित्यान्तर्गत ओहि परम्पराकेँ नव जीवन प्रदान क' रहल अछि। जहिना बंगालमे कृतिवास ओझाक बाङ्गला रामायण लोकप्रियता अर्जित कयलक तहिना मनसा-मङ्गल काव्य सेहो लोकप्रिय भेल जकरा बङ्गवासी रामायण सदृश समादृत करैत छथि तथा एकर उद्गम स्थान बंगालकेँ सुनिश्चित करैत छथि । एहि हेतु ओ सभ बंगालक कतोक पुरातात्त्विक आविष्कार द्वारा एकरा समर्थित कयलनि । बंगालक अनेक समीपवर्त्ती प्रक्षेत्रमे अनेक मनसा-मूर्ति आविष्कृत भेल अछि जकर निर्माण-समय दशम एवं द्वादश शताब्दीक मध्य अनुमान कयल गेल अछि जा सकैछ । विशेष रूपेँ वीर भूम जिलाक पाइकर ग्राममे प्राप्त एक मूर्तिक निम्न भागमे सेन वंशक

अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे बौद्ध-तान्त्रिकक जाङ्गुली एहि जाङ्गुली ओ मनसा सम्पूर्ण रूपेँ अभिन्न अछि जकर एक निश्चित धारा प्रवाहित भेल । चतुर्दश-पञ्चदश शताब्दीमे मिथिलांचलक समाजमे ई सर्प-देवी कतहु-कतहु जाङ्गुली नामे प्रचलित रहल जे पश्चात् जा क' मनसाक रूपमे परिवर्त्तित भ' कए व्यापक रूपेँ प्रचार-प्रसार प्राप्त कयलक । एहि आधारपर अनुमान कयल जा सकैछ जे अस्तत दुइ सय वर्ष पूर्व मिथिलामे एहि सर्प देवीक नाम जाङ्गुलीसँ परिवर्त्तित भ' कए मनसा वा विषहरीक नामे प्रचलित भेल । बौद्ध-धर्मक अवसानोपरान्त जखन कर्णाट राजा लोकनिक समयमे मिथिलामे हिन्दू राज्य वंशक स्थापनोपरान्त एतय हिन्दूक पुनरुत्थान भेलैक तथा बौद्ध-धर्म अपन आत्मगोपनक प्रक्रिया प्रारम्भ कयलक । समकालीन समाजमे बौद्ध-धर्मक सामाजिक प्रतिष्ठा भ्रष्ट भेल जा रहल छलैक तेँ बौद्ध-देवी-देवतादि अपन बौद्ध परिचयक परित्याग क' कए हिन्दू समाजमे नव परिचय प्राप्त करबाक उपक्रम करय लगलाह । मिथिलांचलक अन्तर्गत बौद्ध-धर्मावलम्बी लोकनिक अवसानोपरान्त हिन्दू-समाजक प्रतिष्ठाक युगमे महायान बौद्ध-सम्प्रदायमे पूजित सर्प-देवीक नाम मनसा वा विषहरी राखल गेल । चतुर्दश शताब्दीक प्रथम भागमे मुसलमान लोकनिक आक्रमणक फलस्वरूप एहि ठामक बौद्ध अपन धर्म-विषयक ग्रन्थादिक संग नेपालमे जा क' आश्रय लेलनि तखन जाङ्गुलीताराक नाम पूर्ण रूपेण विलुप्त भ' गेल । एकर परिणाम भेलैक जे पञ्चदश शताब्दीमे मनसा विषयक ग्रन्थादिक रचना होयबाक शुभारम्भ भेलैक, कारण तदयुगीन समाजान्तर्गत मनसा पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठित भ' गेल रहथि ।

मनसाक उत्पत्ति :

मनसा शब्द कतयसँ आयल से विचारणीय प्रश्न थिक । कोनो प्राचीन संस्कृत अभिधान वा पाणिनि व्याकरणमे सेहो मनसा शब्दक कतहु उल्लेख नहि भेटैछ । रामायण वा महाभारत किंवा अपेक्षाकृत पुराणादिमे सेहो मनसा नामक कतहु उल्लेख नहि । परवर्त्ती कतोक संस्कृत पुराणादिमे वा अर्वाचीन कतिपय संस्कृत अभिधानमे मनसा शब्दक संग साक्षात्कार नहि होइछ । ई सकल पुराण एवं अभिधान कोनो द्वादश शताब्दीक पूर्ववर्त्ती

अधिपति नियुक्त कयल गेलाह । हुनक भगिनीक नाम छलनि जरत्कारु ।

यायावर व्रतालम्बी एक ऋषिक वंशमे जरत्कारु नामक एक मुनिक जन्म भेलनि । सांसारिक आश्रमक प्रति ओ आजन्म बीतस्पृह रहबाक प्रण कयलनि । तीर्थ-भ्रमणक क्रममे ओ एक दिन व्याप देशमे एक स्थानपर जे दृश्य देखलनि ओहिसँ ओ विस्मित भ' गेलाह । हुनक पितृ-पुरुषगण वृक्षक शाखामे अधोमुख भ' लटकल रहथि । अपन पितृ लोकनिक जखन एहन दुर्दशाक कारणक जिज्ञासा कयलनि, तखन ज्ञात भेलनि जे ओ लोकनि दारपरिग्रह आ सांसारिक धर्मक उद्यापन नहि कयलनि, जाहि कारणेँ हुनका सभक एहन अवस्था भेल छनि । पितृ-पुरुषक अनुरोधपर ओ दारपरिग्रह करबाक हेतु सहमत भेलाह । किन्तु ओकरा संगहि शर्त्त लगौलनि जे ओ उपयाचक भ' कए ककरो सँ कन्या देबाक निमित्त प्रार्थित नहि हैताह, संगहि जाहि कन्याक संग हुनक विवाह हैतनि ओहो हुनकहि नामक हैतीह । पत्नीक भरण-पोषणक दायित्त्व सेहो हुनकापर नहि रहतनि आ जाहि दिन हुनक इच्छा होयतनि ताहि दिन ओ पत्नीक परित्याग क' कए स्वतन्त्र भ' सकैत छथि ।

अर्जुनक पौत्र परीक्षित साधुक श्रापसँ तक्षक नागक दंशक पश्चात् महाराज जनमेजय सर्प-सत्रक आयोजन क' कए सर्प-कुलकेँ निर्मूल करबाक हेतु उद्यत भेलाह । पातालमे नाग कुलक बीचमे महा आतंकक वातावरण परिव्याप्त भ' गेल । किन्तु ई जानि क' ओ सभ आश्वत भेलाह जे वासुकिक भगिनी जरत्कारुक गर्भसँ कोनो महातपस्वी मुनिक औरससँ एक पुत्रक जन्म हैत जे जनमेजयक नाग-नाशक अनुष्ठानकेँ ध्वंस करबामे समर्थ भ' पौताह ।

एक दिन महामुनि जरत्कारु महारण्यमे एकाकी ठाढ़ भ' कए चित्कार क' कए अपन विवाह करबाक संकल्पक घोषणा कयलनि । ओकरा संगहि जे शर्त्त सभ छलनि तकरा प्रचारित कयलनि । ई सुनि क' वासुकि अपन भगिनी जरत्कारुकेँ ल' कए हुनका सम्मुख उपस्थित भेलाह आ हुनका हाथमे समर्पित क' देलथिन ।

पौराणिकीक माध्यमे सामाजिक प्रथा, व्यवस्था आ प्रचलित देवोपासनाक आदिम ऐतिहासिक तथ्यकेँ सत्यापित कयल जाइछ आ ओकर धार्मिक अनुष्ठानादिक भिन्न-भिन्न महादेशमे प्रचलित प्रथादिक विवरणिका संरक्षित अछि । सर्प-देवताक उद्धावनाक प्रसंगमे भिन्न-भिन्न देश आ महादेशमे भिन्न-भिन्न प्रकारक मिथक प्रचलित अछि । एथेंस *(Athens)* क एरेक्थाइड *(Erechthied)* जाति अपनाकेँ राजा एरिक्थोनियस *(Erichthonius)* स्मिथ गॉड *(Smith God)* हेफैस्टस *(Hephaestus)* क पुत्र आ देवी एथेनी *(Athene)* क पोष्य-पुत्र कहैत रहथि जे सर्प-यन्त्र वा ताबीज लोककेँ रक्षाक हेतु व्यवहार करबाक हेतु दैत रहथि । कारिअ *(Caria)*क लेक्डिस *(Lexids)* एहि प्रसंगकेँ व्याख्यायित कयलनि जे हुनक पूर्वज पेरिग्युन *(Perigune)* अरण्यचारी जीव सर्पक बारम्बार आक्रमणसँ भयभीत जनमानसकेँ एकर प्रयोग करबाक प्रेरणा देलनि ।

मिस्त्रक पौराणिकी *(Egyptian Mythology)* क अनुसारेँ घाटीक राजा लोकनिक जे पुरातन ऐतिहासिक कब्र अछि ओहिपर जे चित्रांकन अछि जो सम्भवत: मर्टसेगर *(Mertseger)* थीब्स *(Thibas)* क सर्प-देवी थिक जे मरुभूमिक कब्रिस्तानक कब्रक रक्षा करैछ । ओतय एक अन्य सर्प-देवी बूटो *(Buto)* क उल्लेख भेटैछ जे पाँखि लागल गहुमन सर्प सदृश अछि जे फराओ *(Pharaoh)* राजा लोकनिक संरक्षक ईसा पूर्व शताब्दीमे छल । एहि सर्पक मस्तक मानव मस्तक सदृश अछि जे त्रिमुखी आ विजयक प्रतीक थिक । एकर पार्श्वमे दुइ पाँखिक बीचमे आर दुइ मस्तक अछि जे गिद्ध मस्तक सदृश अलंकृत अछि ।

जैपनीज पौराणिकी *(Japanese Mythology)* क अनुसारेँ पुरातन जापानमे सर्पकेँ ठनकान देवताक रूपमे उद्घोषित कयल गेल अछि जे उर्वरताक प्रतीक रूपमे पूजित होइत आबि रहल अछि, जनिक सम्बन्ध कृषिसँ रहलनि अछि। हिनक अर्चनासँ वर्षा आ अन्हड़ अबैत अछि जे कृषि-कार्यमे सहायक होइछ। एतय सर्प पुरातन जापानक देवता सुसानो *(susanoo)* सँ अभिहित अछि जे कृषि सम्बन्धी कतिपय किंवदन्तीसँ सम्बद्ध

अथर्ववेदोक्त सर्प-विषनाशिनी किरातकन्या, वैदिक सरस्वतीक प्राथमिक परिकल्पना अभिन्न रहितहुँ पश्चात् जा क' भारतीय बौद्ध-सम्प्रदायकेँ अवलम्बन क'कए ई जाङ्गुली नामे पूजित भेलीह आ पुन: परवर्त्ती कालसँ बौद्ध धर्मक विलोपक पश्चात् मिथिलांचलान्तर्गत मनसा वा विषहरी नामे पूजित भेलीह । जाङ्गुली ताराक पूर्वोक्त वैशिष्ट्यक संगहि आधुनिक काल धरि एतय प्रचलित विषहरी वा मनसा देवीक ध्यानक तुलनात्मक विवेचनोपरान्त ई स्पष्ट अछि जे-जे पूर्वोक्त जाङ्गुली-ताराक क्रमे विषहरी वा मनसाक रूपमे परिवर्त्तित भेल अछि । एहि ध्यान मन्त्रादिमे जाङ्गुलीकेँ स्पष्टत: विषहरी वा मनसा कहि क' उल्लेख कयल गेल अछि:

कन्ताया काश्चन सन्नियां सुवदनां पद्माननां शोमताम् ।
नागेन्द्रै :कृतशेखरां फनीमयी दिव्याङ्ग रागान्विताम् ।
चार्वङ्गी दधती प्रसादमभयं नित्या कराम्यां मूदा
वन्दे शङ्कर-पूत्रिकां विषहरी पद्मोदत्वां जाङ्गुली ।

आधुनिक कालमे मिथिलांचलान्तर्गत आरो एक ध्यान मन्त्र पूर्वोक्त जाङ्गुलीक वैशिष्ट्य गुणक संगहि तुलना क' कए देखल जा सकैछ :

देवीमस्वामहीनां शशधर वन्दनां चारुकान्ति वदान्याम्
हंसा रुढ़ामुदारामरूणितवसनां सर्वदां सर्प दैव ।
स्मेरास्यां मण्डिताङ्गी कनक मणि गनैनागरत्नैरनेकै
वन्देहइं साष्टनागा मरुकुचयुगलां योगिनीं कामरूपाम् ।।

उपर्युक्त विश्लेषणसँ स्पष्ट होइछ जे द्वितीय ध्यान मन्त्र अपेक्षाकृत आधुनिक थिक । एहिमे महाभारतक अष्टनाग आबि क' युक्त भ' गेल अछि । एहिमे मनसा देवीकेँ हंसरुढ़ा कहल गेल अछि जे जाङ्गुली एवं सरस्वतीक वाहन छनि । एतद्वारातीत पञ्चदश शताब्दीमे बाङ्गला-भाषाक एक कवि विप्रदास अपन काव्यान्तर्गत मनसाकेँ जाङ्गुली कहि क' सम्बोधित कयलनि । बंगालक रमाइ पण्डित द्वारा रचित धर्म-पूजा-विधानमे मनसा वा विषहरीक जे स्तोत्र अछि ताहिसँ विषहरीकेँ जाङ्गुली कहि क' सम्बोधित कयल गेल

प्रथम राजा विजय सेनक नाम उत्कीर्ण देखि क' एकर समयक प्रसंगमे निश्चित रूपेँ किछु कहल जा सकैछ । विजय सनेक समय छनि एकादश शताब्दी । उत्तर बंगालक पहाड़पुरक उत्कखननक फलस्वरूप एक मूर्ति आविष्कृत भेल अछि जकरा एकादश शताब्दीक निर्मित हैबाक अनुमान कयल जाइछ । दिनाजपुर जिलाक मराइल ग्राममे सेहो एक मनसा-मूर्तिपर उत्कीर्ष लिपि अछि जकरा देखि क' विशेषज्ञ लोकनिक अनुमान छनि जे इहो दशम-एकादश शताब्दीक थिक ।

उपर्युक्त उत्कीर्ण मूर्ति-समूहमे वीरभूम जिलाक पाइकरक मूर्तिक प्रसंगमे निर्मूल ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध होइछ जाहिसँ ई मूल्यवान भ' गेल अछि, कारण एहिपर विजय सेनक नाम जड़ित अछि । एहिसँ अनुमान होइछ जे ई मूर्ति दक्षिणसँ एतय आयल हो आ राजवंश द्वारा पृष्ठपोषित एवं बंग-देशमे अनुकूल कहि सम्भवत: पूजित भेल हो । अथवा ई देवी सेन राजवंशक स्वदेशी धर्मानुकूल कहि क' ओकरा प्रति सहानुभूति आ श्रद्धा रखने होथि । एहि मूर्तिक वर्णन क' कए एहि प्रसंगमे आलोचना कयल जा सकैछ ।

श्रीराम जिलान्तर्गत पाइक ग्राममे सेहो एक मूर्ति आविष्कृत भेल अछि। मूर्तिक एक भाग भग्न अछि तँ ओकर प्रकृत परिचयपर प्रकाश देब असम्भव । तत्पश्चात् भारतीय पुरातत्त्व विभागक *1921-22* सनक वार्षिकी विवरणीमे एकर प्रकृत परिचय उपलब्ध होइछ ।

एकर प्रकृत पक्षमे मूर्ति-लिपि *(Image Insription)* थिक । मूर्तिक निम्न भागमे प्राचीन अक्षरमे एक लिपि उत्कीर्ण अछि । एहि लिपिक माध्यमे मूर्तिक समय निर्धारण कयल जा सकैछ । प्रस्तरक एक स्तम्भपर मनसाक एक मूर्ति खोदल अछि । ई मूर्ति दुइ भूजा, प्रफुल्ल कमलासना, मस्तक दिससँ भग्न, दहिना भागमे एक पुरुष मूर्ति थिक जे सम्भवत: जरत्कारु मुनिक थिक । दहिना हाथसँ ठेहुनपर स्थापित वामा हाथक एक मुठ्ठीमे सर्प-शिशु अछि तथा ओकरा निम्न भागमे प्राचीन लिपिमे उत्कीर्ण अछि ..... राजा विजय सेन ।

लिपिक प्रथम आ शेष भाग विनष्ट भ' गेल अछि । एहिसँ अनुमान कयल जाइछ जे

अछि । इएह कारण थिक जे सर्प-देवताक आराधना सुसानोक संगहि कयल जाइछ । एहि सम्बन्धमे कतिपय लोक-कथा ओतय सेहो प्रचलित अछि ।

अमेरिकन पौराणिकी *(Mythology of the America)* क अन्तर्गत मैक्सिको *(Maxico)* क्वेजल कोर्ट्ल *(Quetzalcoartl)* क सर्प पक्षीकेँ बसात, मानव जीवनक निर्माता, सम्यताक जन्मदाता, प्रत्येक कलाक संरक्षक आ धातु-विज्ञानक अन्वेषकक रूपमे पूजनक परम्परा अछि । ई ओतय वस्तुत: चोलोलन *(Chololan)* देवताक रूपमे प्रसिद्ध छथि । ओहि ठामक पौराणिकीक अनुसारेँ एहि देवताक स्वरूप परम्परागत रूपेँ श्वेत केशाच्छादित वृद्ध, पैघ दाढ़ी आ सुन्दर वस्त्रसँ सुसज्जित रहैछ जनिक सम्पूर्ण शरीर कारी रंगसँ सर्पाकार मुखौटा लागल आ थुथून लाल रंगसँ रंगल रहैछ ।

पेरूक प्राचीनतम जाति सभमे विशेषत: अमेरिकन रेड इण्डियनमे सर्पकेँ अत्यन्त सम्मान पुरस्सर अर्चना करबाक परम्परा प्रचलित अछि । एतय प्रचलित कथानुसारेँ भूमिगत खजानाक देवता उकागुआरी *(Ucaguary)* क एक विशाल सर्पक रूपमे प्रदर्शित कयल गेल अछि जकर मस्तक हरिण सदृश छैक आ नाङरिपर सोनाक चेन जकाँ मढ़ल छैक । एकरा ने तँ माँस छैक आ ने हड्डी तथापि ओ अत्यन्त द्रुतगतिएँ पहाड़क चोटीपरसँ नीचाँ आबि जाइछ तथा ओही गतिएँ पुन: ऊपर चढ़ि जाइछ । एहि सर्प-देवतापर ओहि ठामक अधिवासीकेँ अटूट श्रद्धा छनि जनिका ओ सभ भूमिगत सम्पादक प्रतीक रूपमे पूजन करैत आबि रहल छथि । ओतय ई विश्वास प्रचलित अछि जे ई ईश्वरक प्रतीक छथि तेँ धार्मिक दृष्टिसँ अत्यन्त सम्मानित छथि ।

दक्षिण पूर्व विलिभियाक सिरिगुयानो *(Shiriguanos)* क एक अदभुत कथाक उल्लेख जेम्स जार्ज फ्रेजर कयलनि अछि । कन्याक प्रथम रजस्वला भेलापर एक मास धरि ओकरा नुका क' रखबाक परम्परा अछि । द्वितीय मासमे ओहि घरमे सामान्य उत्सव होइछ, तत्पश्चात् कन्याकेँ सभक सोझाँ आनल जाइछ । तृतीय मासमे एक प्रकारेँ जादू क्रिया होइछ जे सर्प ओतय अदृश्य भयावह रूपमे उपस्थित रहैछ । सम्भवत: प्रजनन प्रक्रियाक संगहि ओकर भावनाक सम्पर्क सामान्य बात थिक ।



अनुष्ठानक आधारपर पालन करबाक निर्देशक अछि आ पुन: भूमि शय्यापर शयन करबाक निर्देशन अछि । श्रावण पूर्णिमासँ अग्रहण पूर्णिमा पर्यन्त प्रतिदिन सर्प भय निवारणक उद्देश्यसँ सर्पक भोज्य वा बलिदान देबाक विधानक उल्लेख अछि । उपर्युक्त चारू मासक बीचमे कोनो दिन व्यतिक्रम हैबाक कोनो उपाय नहि । किन्तु आधुनिक वर्त्तमान सामाजिक परिवेशमे ई प्रथा प्राय: विलुप्त भ' गेल अछि, तथापि नागपंचमीकेँ अनुष्ठानमे ओकर किछु अवशेष अद्यापि वर्तमान अछि ।

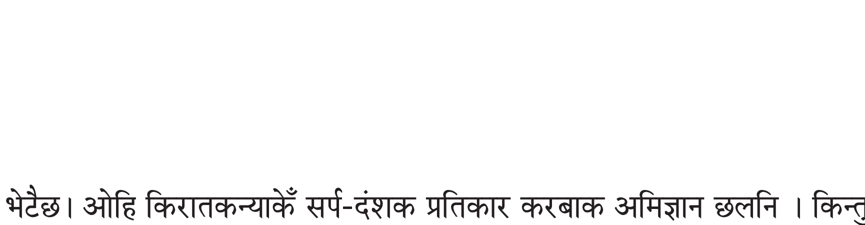
महाभारतक नाग :

प्राग्महाभारतीय युगमे नाग आ सर्पक सुस्पष्ट पार्थक्य सर्वत्र रक्षित रहल। निश्चये वैदिक आ परवर्त्ती साहित्यमे महाभारतक प्राय: समसामयिक कालक रचनादिमे व्यतीत नागक संगे विशेष सम्पर्क नहि भेटैछ । किन्तु एकर अतिरिक्त ओहि समयमे सरीसृपक अर्थ नाग शब्दक हेतु व्यवहृत होइत छल से सर्वथा अपरिचित छल ।

सर्वप्रथम महाभारतमे नाग जाति नामक विस्तृत उल्लेख अछि । सम्भवत: सर्प-पूजनक रूपमे ओ सर्प विशेष कोनो अभिज्ञानधारी छल । एहि क्रममे ओकरा ओहि सर्पसँ प्राय: अभिन्न भ' सकैछ । नाग जातिक आकृति आ प्रकृतिमे आर्य भाषा-भाषी जातिसँ हैबाक कारणेँ ई स्वभावत: स्वतन्त्र छल । ओ सर्प-पूजक छल कहि क' कालक्रमे ओकरापर सर्पक समग्र चरित्र वैशिष्ट्यक आरोप क' देल गेल । ओकर प्रकृति सर्प सदृश छलैक तेँ जे वर्णन उपलब्ध भ' रहल अछि, कारण सर्प माटिमे बिल बना क' बास करैत अछि तेँ ओकरा पतालक अधिवासी कहि क' उद्घोषित कयल गेल अछि । किन्तु ओकरा आर्यवंश संभूत आ ओकर पिता कश्यप मुनि आ माय कद्रू कहि क' सम्बोधित कयल गेल अछि । महाभारतमे ओकरा आर्य कहल गेल अछि तकर विवादक विस्तृत कथा वर्णित अछि । एहि प्रसंगमे संक्षेप मे एतय चर्चा करबाक प्रयोजन अछि ।

महामुनि कश्यपकेँ दुइ पत्नी छलथिन-कद्रू ओ विनता । कद्रूक गर्भसँ प्रमुख नाग वासुकिक जन्म भेलनि आ विनताक गर्भसँ गरुड़ आ अरुणक । वासुकि नाग जातिक





उल्लिखित विजय सेन बंगालक सेन राजवंशक विजय सेन कहि क' मनसाक मूर्ति रूपमे स्वीकार कयल गेल अछि । किन्तु एहि मूर्तिकेँ मनसाक मूर्ति कहि क' अभिहित कयल जाय की नहि से जनबाक प्रयोजन अछि। एहना स्थितिमे एक प्रश्न उपस्थित होइछ जे विजय सेनक नाम एकरा संग सम्बन्धित अछि, कारण अनुमान होइछ जे ई मन्दिर हुनक पृष्ठपोषकतामे निर्मित भेल हो । मन्दिरक अन्य स्वतन्त्र कोनो प्रधान देव-मूर्ति छल, एकर स्तम्भपर अन्यान्य लौकिक देव-देवीक मूर्ति उत्कीर्ण अछि जाहिमे मनसाक मूर्ति अन्यतम थिक । प्राचीन मन्दिरक निर्माणक प्रसंगमे साधारण नियम थिक । मनसा देवीक संग विजय सेनकेँ कोनो प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहि रहबाक कथा प्रचलित अछि । किन्तु एहि सम्बन्धमे भ्रम करबाक अनेक कारण अछि जे विजय सेनक संग मनसा देवीकेँ प्रत्यक्ष सम्पर्कक कल्पना कयल जा सकैछ । सेन राजवंश द्वारा बंग देशक अनुकूलहि हिन्दू धर्म आ हिन्दू भास्करक पुनरूत्थान भेलासँ स्थानीय नाना लौकिक देव-देवी आ पौराणिक मर्यादा लाभ करबाक अभिधान देव-गोष्ठीक अन्तर्भूक्त हैबाक प्रयास कयलक । एहि कारणेँ तत्कालीन युगक बाङ्गलाक हिन्दू-भास्करमे अपूर्व परिचित अनेक नूतन देव-देवीक रूपक लाभ-प्राप्त कयलक जाहिमे मनसा अन्यतम थिक ।

उपर्युक्त समस्त लिपिक प्राय: समसामयिक कालमे वीरभूम अंचलमे अनेक मनसा-मूर्ति निर्मित भेल । कारण वीरभूम अंचलमे लोक-संस्कृतिक धारा सर्प-देवीक पूजाक एक मात्र जे अति प्राचीन प्रथा से नहि, अद्यपर्यन्त अव्याहत रूपेँ ओतय मनसा-पूजा सर्वाधिक प्रचलित अछि । ओहि अंचलक प्राचीन हिन्दू-भास्करक पुनरुत्थान हैबाक पश्चात् स्वभावत: सर्प-देवी प्रधान विषय छल ।

भारतीय पुरातात्त्विक विभागक ओहि वार्षिकी विवरणमे आर एक पूर्णाङ्ग मनसा-मूर्तिक परिचय उपलब्ध होइछ । एकरा संग निश्चित रूपेँ ककरो नाम नहि अंकित अछि तेँ समयक सम्बन्धमे निश्चित रूपेँ किछु नहि कहल जा सकैछ । तखन एहि मूर्तिक गठन भंगिमा आ पाइकमे प्राप्त मनसा-मूर्ति सहितसँ अभिन्नता देखि क' एकर विवेचन कयल जा सकैछ जे ई उभय मूर्ति अनियति कालक व्यवधानमे निर्मित भेल छल । आलोच्य मूर्ति

भेटैछ। ओहि किरातकन्याकेँ सर्प-दंशक प्रतिकार करबाक अमिज्ञान छलनि । किन्तु अथर्ववेदमे हुनकापर तावत धरि देवीत्त्वक आरोप नहि भेल छलैक । ओ साधारण अनार्य किरातकन्या सर्प-विद्याक सम्बन्धमे अनेक रास अलौकिक शक्तिक अधिकारिणी छलीह । परवर्त्ती कालमे चरित्रगत अलौकिकताक कारणेँ ओकरापर देवीत्त्वक आरोप भेल जाहिमे कोनो अस्वाभाविकता नहि । अथर्ववेदमे विषनाशिनी एक आर चरित्रक संग साक्षात्कार होइछ जनिक नाम छलनि धृताची । कतिपय विद्वानक मान्यता छनि जे धृताची ओहि किरात दुहितासँ भिन्न छलीह । किन्तु एहि प्रसंगमे निश्चित रूपेँ किछु नहि कहल जा सकैछ । अथर्ववेदमे सरस्वती देवीक अनेक गुणक मध्यमे ओ विषनाशिनी सेहो छथि । *साधनमाला* मे जाङ्गुलीक जे स्तव-मन्त्र अछि ताहिमे एक स्थानपर *सर्व शुक्ला शुक्लोत्तरीयां सितरत्नालङ्कार भूषिता वीणा वादध स्तीम्* क उल्लेख भेटैछ तथा अन्यत्र मयूर पुच्छ अर्थात् *लेखनी हस्ता* सेहो कहल गेल अछि । जाङ्गुली देवीक वाहन हंस छलनि तथा सरस्वतीक वाहन सेही हंस छनि । प्राचीन भास्करमे दुनू देवीकेँ चारिभूजा वाली कहल गेल अछि । जाङ्गुली देवीक स्तवोपनक सभ गुण आधुनिक परिदृश्यमे विद्याक अधिष्ठात्री देवी कहि क' पूजिता सरस्वती देवीपर लागू होइछ । यजुर्वेदक युगमे संगीत-विद्याक समानहि सर्प-विद्याक सेहो एक अवश्य पाठ-विद्याक रूपमे गणना होइत छल । एहि कारणेँ ओहि युगमे विद्याक अधिष्ठात्री देवी सरस्वतीक परिकल्पनाक संगहि संगीत-विद्याक प्रतीक वीणाक संगहि सरस्वती देवीक हाथ सर्प-विद्याक प्रतीक रूपेँ सर्प स्थान पौने छल । किन्तु वैदिक सरस्वतीक परवर्त्ती संस्कारमे हुनकासँ सर्प-संस्रवेक ई अनार्य अंश परित्यक्त भ' गेल तथापि हुनकापर पुन: महायान बौद्ध-सम्प्रदायक आश्रय ग्रहण क' कए ब्राह्मण-संस्कारक वहिर्भागक अस्तित्त्व रक्षा करय चाहैत छल, जाङ्गुली माताक वृतान्त रहलाक कारणेँ हुनका जानल गेल । एहि प्रकारेँ मूलत: ई एक रहितहुँ जाङ्गुली आ सरस्वतीकेँ एक बौद्ध-तान्त्रिक समाज आ दोसर वैदिक समाज अवलम्बन कयलक जे काल क्रमे स्वतन्त्र भ' गेल ।

जाङ्गुली ओ मनसा :



हुनका सभकेँ सर्पक सम्बन्धमे किछु संस्कारकेँ अपना संगहि नेने आयल होथि । एतय दृष्टान्त स्वरूप उल्लेख कयल जा सकैछ जे अथर्ववेदमे सर्पक जाहि नाम सभक उल्लेख भेटैछ ओकरा संगहि बेबिलोनियाक अनेक सर्प समूहक नामक संगहि समरूपता अछि। तत्पश्चात भारतवर्षमे प्रथमे-प्रथम प्रवेश करितहि देशक अधिवासीक संसर्गमे आबि द्रविड़ जातिमे सर्प-पूजनक परम्परासँ अनुप्राणित भ' एकर सूत्रपात कयलनि। ओहि संस्पर्शक फलस्वरूप अचिर कालक बीचमे रचित अन्यान्य वैदिक संहिता समूहक उल्लेख करब अपरिहार्य भ' जाइछ ।
जे हो, एतबा सत्य थिक जे प्रकृत पक्षमे अथर्ववेदक युगमे सर्पक अनेक रास मन्त्र-समूहक रचना भेल जकर अनुशीलन कयल जा सकैछ । एहि आधारपर अनुमान कयल जा सकैछ जे भारतीय आर्य समाजमे सर्प-पूजनक परम्परा तद्युगीन समाजमे प्राप्त क' लेने छल । वैदिक युगक परवर्त्ती युग अथवा ब्राह्मण युगमे सर्प-विद्या एवं सर्प-वेद दू ज्ञातव्य विषयक उल्लेख भेटैत अछि। एहि आधारपर अनुमान कयल जाइछ जे आर्य समाजक अन्तर्गत सर्प-पूजन विधि -वद्ध भ' गेल छल ।

गृह्यसूत्र आ सर्प :

गृह्यसूत्रमे गार्हस्थ-विधिक जे निर्देश अछि ताहिमे सर्प-पूजनक विस्तृत व्यवहारक उल्लेख भेटैछ । सर्प-पूजनक प्रकरणक हिसाबसँ *आश्वलायन गृह्यसूत्रमे* उल्लेख अछि जे *कलशसँ सतुआ बहार क' कए माटिक पात्रकेँ पूर्ण क' कए ओकरा कोनो पवित्र स्थानपर ल' जा कए पहिने पार्थिव, अन्तरीक्ष, दिव्य, दशदिक् ओ अन्यानय पूज्य सर्प-देवता गणकेँ स्वाहा एहि मन्त्रक आह्वान क' कए नमस्कार कयल जाइछ* आ तत्पश्चात् उपहार प्रदान कयल जाइछ । अधुनातन समाजमे समग्र भारतवासी नागपंचमी व्रतक प्राचीनतम रूप केँ अद्यापि अनुष्ठानित करैत आबि रहल अछि ।

गृह्यसूत्रानुसारेँ प्रत्येक गृहस्थकेँ वर्षा ऋतुक चारिमास सपरिवार भूमि शयनक निर्देश कयल गेल अछि । प्रत्येक गृहस्थकेँ श्रावण पूर्णिमाकेँ एक अनुष्ठानक पालन करबाक निर्देशित कयल गेल अछि । तत्पश्चात, अग्रहण पूर्णिमाकेँ *प्रत्यवरोहन* नामक एक

ब्लैक अफ्रिकाक पौराणिकीक अनुसारेँ दाहोमेय *(Dahomey)* धर्मान्तर्गत वस्तु पूजक लोकनि माहो वा माओ *(Mahou or Mao)* केँ एक देवात्माक प्रतीक रूपमे अर्चना करैत आबि रहल अछि । एतय सेहो इन्द्रधनुषाकार सर्पकेँ ठनकाक देवताक रूपमे पूजन करबाक परम्परा प्रचलित अछि जे परोपकारी आत्माक प्रतीक मानल जाइत छथि । ई ठनकाक देवता सतत मेघाश्रित रहैत छथि जनिका ओहि ठामक अधिवासी लोकनि परितोषित करबाक निमित्त पुजारी लोकनिक कथनानुरूप भिन्न - भिन्न प्रकारक चढ़ौआ चढ़बैत अछि । पश्चिम अफ्रिकाक बहुजन जाति सबमे एहि सर्प-देवताकेँ एक वृत्ताकार कंगनक रूपमे प्रदर्शित कयल जाइछ जे सर्पक नाङरि ओकर मुँहसँ सटल रहैछ । ज्योफ्रेय परीनडर *(Geoffrey Parrinder)* क कथन छनि, *A Snake with its tail in his mouth. Apparently Swallowing itself yet with no beginning or end like a circle and sphere is symbolic of eternity. (Geoffery Parrinder, African Mythology)*. एहन कांस्य कंगन ओहि ठामक कलाक अभिप्रेतक संगहि दामोहक दिव्य शक्ति मानवक निरन्तरता आ शाश्वताक प्रतीक मानल जाइछ ।

दान अयिडो हवेडो *(Dan Ayido Hwedo)* सम्पूर्ण विश्वकेँ सर्प सदृश वृत रूपमे संघटित क' कए ओकरामे एकात्मकताक भाव प्रदर्शित करैछ । अफ्रिकाक पौराणिकीक अनुसारेँ सर्प-देवता शुभ सूचक हैबाक कारणेँ महत्त्वपूर्ण मानल जाइछ ।
पश्चिमी अफ्रिकामे सर्पकेँ मारि क' ओकर खालकेँ पूजित करबाक परम्परा अछि । फरनाण्डो पो *(Fernando Po)* क द्वीप पुज्जक ईसाप्पोजनगोष्ट *(Issappo Negreesof)* क एक धारणा अछि जे विषधर गहुमनकेँ ओ सभ अभिभावक देवताक *(Guardian Deity)* रूपमेँ मान्यता दैत आबि रहल छथि जे नीक-बेजाय, सुख-दुःख, रोग-बलाय जन्म-मृत्यु सब कार्यक, प्रतीक रूपमे मान्यताक अनुसारेँ सर्पकेँ नियन्त्रक मानि श्रद्धा दैत छथि । प्रत्येक वर्ष समारोह पूर्वक ओहि खालकेँ सार्वजनिक स्थानक कोनो विशाल वृक्षक डारिपर ओकर नाङरि नीचाँ क' कए लटकयबाक परम्परा अछि । समारोहक समाप्तिक पश्चात् गत वर्षक नवजात शिशु सभकेँ ओकर नाङरिसँ स्पर्श करयबाक प्रथा

छथि । नगेन्द्रनाथ बसु एहन मूर्तिक अनुसन्धान कयलनि जे ओड़िसाक मयूरभंज जिलान्तर्गत हरिहरपुर ग्रामान्तर्गत प्राचीन दुर्गमे संरक्षित अछि । महायान बौद्ध लोकनि एही देवीक अर्चना करैत छथि । ई मूर्ति द्विभूजा *साधनमाला* क द्विभूजा जाङ्गुलीक मूर्ति निर्माणक विधिक अनुरूप अछि। एहि मूर्तिक अनुरूपहि ओ मयूरभंजक एक आर मूर्तिक अस्तित्त्वक सम्बन्धमे उल्लेख कयलनि अछि ।

जाङ्गुली-ताराक प्रभाव पूर्व भारतक भौगोलिक सीमाक बाहर बहुत दूर धरि विस्तृत छल जकर प्रमाण सप्तस शताब्दीमे वाणभट्ट द्वारा रचित *हर्षचरित* आ द्वादश शताब्दीके प्रथम भागमे रचित एक नाटकक द्वारा जानल जा सकैछ । वाणभट्ट सर्पक अर्थमे जाङ्गुलीक चिर व्यवहार कयलनि *(हर्षचरित, निर्णयसागर प्रेस, बम्बै, चतुर्थ संस्करण, 1943)* । रामचन्द्र द्वारा लिखित नाटक थिक *कौमदीमित्रनन्द (मुनि पुण्य विजय द्वारा सम्पादित जैन आत्मानन्द ग्रन्थ माला, भावनगर 1917)* । ओ जैनाचार्यक शिष्य रहथि । द्वादश शताब्दीक प्रथम भागमे गुजरातक काठियावाड अंचलमे रामचन्द्र एहि नाटकक रचना कयलनि । दश अंकक ई नाटक श्रृंगार रसात्मक नाटक थिक । परवर्त्ती संस्कृत नाटकक आदर्शपर एकर रचना भेल अछि । एहि नाटकान्तर्गत सर्प-विष निवारणार्थ जाङ्गुली देवीक समक्ष अनेक इन्द्रजातिक मन्त्रोचारक कथा वर्णित अछि ।

उपर्युक्त तथ्यक आधारपर ई अनुमान सापेक्ष थिक जे तत्कालीन समाजान्तर्गत जाङ्गुली देवीक पूजन अत्यन्त व्यापक रूपेँ प्रचलित छल । कर्णाट राजा लोकनिक समय धरि मिथिलांचलक समाजमे महायान तान्त्रिक बौद्ध सम्प्रदायक प्रभाव अक्षुण्ण छल । अतएव ओहि समयमे मिथिलांचलक समाजमे सेहो प्राचीन सर्प-देवी जाङ्गुलीक प्रतिष्ठा अत्यन्त व्यापक रूपेँ प्रचलित छल तकर यथेष्ट कारण अछि ।

अथर्ववेदक किरातकन्या :

विद्वत वर्गक मान्यता छनि जे महायान बौद्ध-सम्प्रदायमे एहि सर्प-देवीक कल्पनार्थ वेदक ऋणी हैबाक चाही । अथर्ववेदमे एक सर्प-विद्या पारदर्शनी किरातकन्याक उल्लेख

वीरभूम जिलान्तर्गत मुररै रेलवे स्टेशनक अदूरवर्त्ती भादीश्वर ग्राममे आविष्कृत भेल अछि । ई सम्पूर्ण मूर्ति अक्षत रूपेँ भेटल अछि । देवीक मस्तकपर सात टा साप अपन फण विस्तार कयने अछि, वामा हाथक मुठ्ठीमे एक आर सर्प अछि । सर्प-निर्मित मूर्ति वृक्ष आच्छादित एक पार्श्व हाथमे एक सहचरी *(नेता)* दोसर पार्श्वमे पाइकक मूर्तिक अनुरूप एक पुरुष मूर्ति थिक जे सम्भवत: जरत्कारुक मूर्ति थिक । ललितासन भंगिमामे प्रफुल्ल कमलासनपर देवी आसीन छथि आ शरीर अलंकार सम्भारसँ युक्त अछि । आसनक निम्न भागमे पूजाक एक कलश अछि ताहिपर देवी स्थापित छथि । ई मूर्ति प्राचीन बाङ्गला भास्कर-शिल्पक एक उल्लेख्य उदाहरण थिक । एहि मूर्ति स्तम्भपर किछु नहि अंकित अछि, प्रत्युत पाथरकेँ काटि क' सम्पूर्ण मूर्तिक आकृतिक स्वतन्त्र रूपेँ गठित कयल गेल अछि । एहि मूर्तिक गठनादर्श सर्वांश रूपेँ पाइक मूर्तिक अनुरूप अछि । एहि आधारपर अनुमान कयल जाइछ जे एकादश शताब्दीक निकटवर्त्ती कोनो समयमे एकर निर्माण भेल हैत । राजशाहीसँ धातु निर्मित एक मनसा-मूर्ति आविष्कृत भेल अछि । ई मूर्ति पाल राजाक प्रथम भागमे कहि क' अनुमान कयल जाइछ जाहि संबंधमे निश्चित रूपेँ नहि किछु कहल जा सकैछ । मूर्तिक गठन-भंगिमा अनुपम अछि जे प्रस्तर निर्मित मूर्तिसँ एकर निर्माण कौशल अधिकांश रूपेँ सूक्ष्म अछि । ललितासनपर द्विभूजा देवी सप्तसर्प विवृत फणक नीचाँ आसीन वाम भागमे छोट शिशु जे सम्भवत: अष्टनाग आस्तिकक नर रूप, देवीक दहिना हाथमे पश्चात् दिस एक सपत्र वृक्षक शाखा, सम्भवत: ई सीज मनसाक शाखा थिक । जँ ई कथा सत्य तँ मनसाक प्रस्तर निर्मित मूर्ति समूहक निर्माण कौशलक एहि विशिष्ट आदर्श एतय सर्वत्र प्रचलित छल तकरा संगहि एकर परिकल्पनाक विशेष सामंजस्य नहि । कारण मूर्ति निर्माणक एक स्वतंत्र आदर्शक धारासँ अनुस्यूत भेल अछि । एहि धाराक पूर्ववर्त्ती किंवा परवर्त्ती निश्चित करबाक कोनो उपाय नहि अछि । तखन ई षष्ठी-देवीक मूर्ति हैबाक विचित्रता अछि । कोलकाता म्यूजियमक पुरात्त्व विभागमे एक मूर्ति सुरक्षित अछि । कोलकाताक भारतीय प्रत्यागार एवं ढाकाक प्रत्यागार ओ राजशाही वरेन्द्र अनुसंधान समितिक प्रत्यागार आदि स्थानमे मनसा-देवी ओ षष्ठी-देवीक अनेक रास मूर्ति संरक्षित अछि ।

अछि । एहि परम्पराक मुख्य उद्देश्य अछि जे सर्प-देवता ओकरा सभक सतत रक्षा करथि।

जहिना सेनेगोम्बिया *(Senegambia)* मे अजगर वंशमे उत्पन्न अजगरकेँ आठ दिनक अन्तर्गत देखबाक परम्परा अछि तहिना प्राचीन अफ्रिकाक सर्पवंशक साईलि *(Psylee)* समूहमे आत्म-परिचय एहि तथ्यक रहस्योद्घाटन करैछ जे ओ सर्पक वंशधर जे ओहि वंशमे उत्पन्न सन्तान वास्तविक थिक वा वर्ण शंकर । ओकरा सभक विश्वास छैक जे वर्षा हैबाक पूर्व अफ्रिकाक आकिकूयू *(Akikuyu)* जातिमे सर्प-देवताक पूजाक प्रथा प्रचलित अछि । ओ सभ एक स्थलपर एकत्रित भ' कए नदीमे जा क' सर्पक दर्शन करैछ। दीर्घ अन्तरालक पश्चात ओ सभ तरुणीक विवाह सर्प-देवताक संग करैछ, *For this purpose huts are built by oder of medicine men, who those cansummate the sacrred marriage with the credulous female devotees.* (Golden Bough page 145)

उत्तरी आस्ट्रेलियामे अनुडा जनजातिमे सर्पक रूपमे डालर बर्ड *(Dollar Bird)* क चर्चा भेल अछि जकरा वातावरणकेँ नियंत्रित करबाक दायित्त्व छैक । एकर टोटेमकेँ डबरीमे राखि देलापर ओकरामे निश्चित वर्षा करबाक क्षमता देखल जाइत छैक । जीवित सर्पकेँ पकड़ि क' किछु क्षण डबरामे राखि इन्द्रधनुषक आकृति ओहिपर राखि देल जाइछ तत्पश्चात् किछुए क्षणमे वर्षा होइछ । ओहि ठामक अधिवासीक ई मान्यता छनि जे डालर वर्डकेँ सर्पक संग मैत्री-भाव छनि आ डाबर ओकर वासभूमि छैक तेँ समयानुसारेँ वर्षा करबाक क्षमता छनि । आस्ट्रेलियामे एक धारणा प्रचलित अछि जे सर्पकेँ इन्द्रधनुष सर्प *(Rainbow snake)* कहल जाइछ । सर्प वनमे शिकारकेँ नियन्त्रितकारी जन्तु थिक। ई सर्प गर्भवती महिलाक निमित्त अनिष्टकारी होइछ ।

आयर लैण्ड द्वीपमे मेडिना जिलामे सर्प चौचम जनजातिक विश्वास छनि जे सर्प भूकम्पक देवता *(Marruni)* हुनका सभक आदि पुरुष छथि । स्वभावत: ओ *(Marruni)* सर्पक पूजन करैत छथि ।



एकर अतिरिक्त ॠग्वेदक *10.189* सूक्तक नामसँ सर्प-राज्ञी सूक्त एवं रचयित्रीक नाम - उपक्रमणिकाक अनुसारेँ सर्प-राज्ञी ॠषिका, तैतरीय ब्राह्मणक अनुसारेँ कद्रूवंशीय कसनीक ॠषि, सर्पार्थवाचक एहि पृदाकु, बसात शब्दक प्रयोग ॠग्वेदमे कतिपय स्थल पर भेल अछि । एहि निमित्त सर्पराज्ञी सूक्तमे स्पन्दन वा वाक–विज्ञानक आलोचना नितान्त प्रयोजनीय भ' जाइछ । एकर तृतीय मण्डलक ॠषि विश्वामित्र सूर्य रश्मिक अस्तनिहित स्पन्दन प्रकृतिकेँ *ससर्परी, सर्पदुहिता (453.15.16)* नामसँ अभिहित कयलनि । दशम मण्डलक एक आर सूक्तमे कहल गेल अछि । सूर्य दुहिताक विवाह भेलनि सोमक संग तथा दू लोकसँ विषाद युक्त भ' कए मनक रथ पर चढि क' पतिक गृह गमन कयलनि *(10.85.15)* । सोमक संग सर्पक उपमा ॠग्वेदमे अनेक स्थलपर आयल अछि । एहि प्रसंगमे अनेक विद्वानक कथन छनि जे ॠग्वेदमे परोक्ष रूपेँ सर्पक सर्वाधिक उल्लेख भेल अछि । ॠग्वेदमे *अहिबुध्य* नामक एक अत्यन्त शक्तिमान जीवक एक दुइ बेर उल्लेख भेटैत अछि । एहि प्रसंगमे अङ्गरेज विद्वान लोकनिक मत छनि जे अहिबुध्य एक सर्प-रूपी देव-चरित थिक । किन्तु प्रकृति सर्पक अर्थमे अहि शब्दक व्यवहार आर परवर्त्ती कालमे प्रारम्भ भेल । किछु विद्वानक अनुमान छनि जे वैदिक इन्द्रक चिर शत्रु वृत्र अथवा अहि कोनहु शक्तिमान व्यतीत सर्प आर किछु नहि भ' सकैछ । किन्तु एकर परवर्त्ती रचना यजुर्वेदमे सर्पक विस्तृत उल्लेख भेटैछ । यजुर्वेदमे सर्प सम्पर्कित श्रद्धा बोधक परिचयपर अवश्य प्रकाश देल गेल अछि, किन्तु प्रकृत-पूजा कहि क' कतहु ओकर अल्लेख नहि भेटैछ । अथर्ववेदमे सर्प सम्पर्कित अनेक मन्त्र समूहक उल्लेख भेटैछ । एहि प्रसंगमे दू विषय अनुमान सापेक्ष थिक । प्रथमत: आर्य भाषी समूह भारतमे प्रवेश करबाक पूर्वहि एहि जीवक संग चिरपरिचित नहि रहथि अथवा इहो भ' सकैछ जे जाहि देशसँ ओ सभ भारतवर्षमे प्रवेश कयलनि ओहि देशक अधिवासी सभ एहि जीवसँ तेना भ' कए परिचित नहि रहथि। एहि आधारपर अनुमान करय पड़ैछ जे ओ सभ कोनो शीत प्रधान देश भ' कए एतय प्रवेश कयने होयताह जकरा एकहि बेर



अस्वीकार करब असम्भव । द्वितीयत: आरो देखल जा सकैछ जे आर्य लोकनि जाहि मार्गक अनुसरण क' कए भारतवर्षमे प्रवेश कयलनि ओहि मार्गक मध्यक अंचलमे



अन्यान्य आदर्शपर गठित मनसा-मूर्ति बंगाल आ ओकर पार्श्ववर्त्ती प्रदेशमे सेहो आविष्कृत भेल अछि । ओहिमे हाथीपर आसीन एक मनसा-मूर्ति उल्लेखनीय अछि । ई मूर्ति आसाममे प्राप्त भेल अछि । आसाममे वन्य-हाथीपर सर्पक उपद्रव अधिक अछि । एहि कारणेँ किंवा हाथीक एक नाम नाग *(पूर्वोक्त एक मनसा ध्यानमे मनसा देवीकेँ नागेन्द्रैः कृत शेष रामः कहि क')* उल्लिखित अछि । एहिसँ मनसा-देवीकेँ गजासीन कयल गेल अछि । ई मूर्ति ढाकाक प्रत्यागारमे संरक्षित अछि । एहिसँ अतिरिक्त उत्तर बङ्गमे शिशुकेँ कोरा लेने एक प्रकारक मनसा-मूर्ति आ ओड़िसाक मयूरभंज जिलामे आविष्कृत भेल अछि । किन्तु शिशुकेँ कोरामे नेने जे मूर्ति समूहकेँ मनसा देवीक कहि क' क्यो-क्यो उल्लेख कयलनि अछि जे ओकर प्रकृत मनसा-मूर्ति नहि थिक, प्रत्युत ओ षष्ठी-देवीक मूर्ति थिक । प्राचीन भास्करमे षष्ठी-देवी आ मनसा-देवी एक छलीह । वर्त्तमान समयमे पश्चिम बङ्गमे मनसातला ओ षष्ठीतलाक अभिन्न स्थान अछि ।

मैमन सिंह जिलाक त्रिशाला थानान्तर्गत रसुलपुर ग्राममे धातु-निर्मित एक मनसा-मूर्ति आविष्कृत भेल अछि । मूर्ति एक हाथ ऊँच अछि । एकर उल्लेखनीय वैशिष्ट्य अछि जे एक पार्श्वक उर्ध्वभागमे गणेश आ निम्न भागमे एक नागिन एवं अपर पार्श्वमे उर्ध्व भागमे कार्तिक ओ निम्न भागमे एक नागिनक मूर्ति थिक। देवीक माथपर सात सर्पक फण विस्तारित अछि तया कोरामे स्थित शिशुकेँ आस्तिक सहजहि बुझल जाइछ । देवीक स्कन्धक ऊपर दिस दुइ सीज मनसा वृक्षक शाखा अछि । ई मूर्तिक अन्यतम वैशिष्ट्य थिक । लीलासन भंगिमामे देवी बैसल छथि । हुनक चरणक नीचाँ कोनामे कलश किंवा देवीक कोनो एहन वाहन नहि अछि । ई जरत्कारुक मूर्ति सेहो नहि थिक । मूर्तिक गठनाकृति अनुपम अछि । एहि आदर्शक मूर्ति बंगलादेशक कोनो अंचलमे नहि अछि । पौराणिक हिन्दूधर्मक प्रभाववश अन्यान्य देवीक मूर्ति एकरा संगहि युक्त भेल से कहनिहारक कमी नहि । ई मूर्ति सम्भवत : एकादश शताब्दीक निर्मित बुझना जाइछ । उपर्युक्त मूर्ति समूहक आविष्कारक फलस्वरूप अनेक विषयक प्रसंगमे एक प्रकारक स्थिर सिद्वान्त उपस्थित होइत अछि । एहि आधारपर विद्वत् समाजक मान्यता छनि जे

जाङ्गुली-तारा :

पूर्व भारतक महायान तान्त्रिक बौद्ध-सम्प्रदायमे जाङ्गुली-तारा नामक एक देवीक अस्तित्त्वक संघान प्राप्त भेल अछि । महायान बौद्ध लोकनिक मतानुसार जाङ्गुली देवी अत्यन्त प्राचीन छथि जेना कि भगवान बुद्ध अपन प्रधान शिष्य आनन्दकेँ एहि देवीक पूजनक गोपन-मन्त्रक शिक्षा देने छलथिन जकर उल्लेख तान्त्रिक ग्रन्थादिमे उपलब्ध होइछ। एहि आधारपर अनुमान कयल जाइछ जे अत्यन्त प्राचीन कालक पूर्वहिसँ भारतीय बौद्ध समाजान्तर्गत जाङ्गुली देवीक पूजनक परम्परा प्रचलित छल । बौद्ध-तान्त्रिक-साधनाक सूत्र ग्रन्थ *साधनमाला* मे जाङ्गुली देवीक पूजनक प्रकरण एवं हुनक मन्त्रक प्रसंगमे विस्तृत उल्लेख उपलब्ध अछि । एहि समस्त विषयपर विद्वत वर्ग विचार कयलनि तथा एहि निष्कर्षपर अयलाह जे जाङ्गुलीक संग मिथिलाक सर्प-देवी मनसा वा विषहरीक संग सादृश्य अछि । हुनका सभक अनुमान छनि जे प्रारम्भमे तँ नहि, किन्तु पश्चात् जा क' जाङ्गुली देवीक संगहि मनसा वा विषहरीकेँ मौलिक सम्पर्क भेलनि ।

साधनमाला मे चारि प्रकारक साघनाक उल्लेख भेटैछ । प्रथम दुइ प्रकारक साधना-मन्त्रमे देवीक जे परिचय अछि जाहिसँ स्पष्ट होइछ जे जाङ्गुली सर्व शुक्ला, चतुर्मुजा, एक मुखी शुक्र सर्प-विभूषिता आ वीणापाणि कोन प्राणीक ऊपर हुनक आसन संस्थापित, दुहू हाथमे सर्प आ ऊपर हस्तसँ अभय मुद्रा । द्वितीय साधन-मन्त्रमे देवीक जे परिचय अछि तकर अनेकांश प्रथमहिक अनुरूप थिक तथा एहि देवीकेँ त्रिशूल मयूर पुच्छ *(सम्भवतः लेखनी)* आ सर्प-हस्त एवं उपविष्ट हस्त द्वारा अभय दात्री थिकीह ।

साधनमाला मे यद्यपि जाङ्गुली देवीक एक आर परिचय भेटैछ जे सर्वथा स्वतन्त्र अछि तथापि ओकर मूल प्रकृतिमे कोनो पार्थक्य नहि अछि । ई त्रिमुखी ओ षष्ठभुजा वाली वर्णित छथि । एहिमे पीतवर्णा तथा सर्पक विस्तृत फणक नीचाँ आसीन, तीनू दहिना हाथमे खड्ग वज्र आ वाण तथा तीनू बामा हाथमे पाश नीलोत्पल एवं घनुष घारिणी देवी सर्वालंकार भूषिता आ उज्जवल कुमारी लक्षणाक्रान्ता छथि । महायान बौद्ध तान्त्रिक लोकनि एहि देवीक अनुयायी भ' कए जाङ्गुली देवीक एहने निर्माण करा क' पूजन करैत

युगक असमिया भास्कर्यमे सर्प-पूजनक किछु-किछु निदर्शन उपलब्ध होइत अछि । मंगोलीय जाति सेहो अपेक्षाकृत परवर्त्ती कालमे उत्तर पूर्व मार्गसँ प्रवेश कयलक । विच्छिन्न भावसँ ओकरा सभक एक दुइ जातिक बीचमे सर्प-पूजनक प्रधानता नहि प्राप्त क' सकल । निग्रिटी कहि क' परिचित भारतक प्राचीनतम जातिक लोकक संख्या वर्त्तमान समयमे एतेक कम भ' गेल अछि जे ओकरा सभक धर्म विश्वासक अन्तर्गत प्राचीनतम कोनो वैशिष्ट्यक निदर्शनक अनुसंधान करब सेहो अत्यन्त कष्टसाध्य थिक । विशेषत: वृहत्तर भारतीय विद्वान लोकनिक बीचमे एकर सभक अवदान अत्यन्त नगण्य अछि । किन्तु द्रविड़ जाति लोकनिक वंशघर अद्यापि मध्य भारत आ दक्षिण भारतक विभिन्न अंचलमे बसल अछि ओकरा सभक बीच सर्प-पूजनक परम्परा सर्वाधिक प्रचलित अछि । अतएव एहिसँ अनुमान कयल जा सकैछ जे सर्प-पूजन द्रविड संस्कृतिक एक विशिष्ट अंग थिक जकर व्यापक प्रभावक फलस्वरुप परवर्त्ती कालमे आर्य समाजमे सेहो एकरा अपन सभ्यताक बीचमे बहुलांश ग्रहण करबाक लेल प्रेरित भेल हो । आर्य-सम्यताक प्राचीनतम निदर्शन सब जे उपलब्ध भ' रहल अछि ताहिमे सर्प-पूजनक ऐतिह्य संकेत नहि भेटैछ । किन्तु आर्य जातिक आगमनक फलस्वरूप अनियति काल धरि व्यवधानमे रचित साहित्यिक निदर्शनमे सर्प-पूजनक व्यापक परिचयपर प्रकाश देल गेल अछि । एहि आधारपर अनुमान कयल जा सकैछ जे आर्य लोकनि भारतवर्षमे प्रवेश क' कए अनियति कालक बीचमे द्रविड लोकनिक संस्पर्शमे आबि ओकर निकट सम्पर्कित भ' कए सर्प-पूजनक नूतन संस्कारक दीक्षा ग्रहण कयलनि ।

वैदिक साहित्य ओ सर्प :

प्राचीनतम वैदिक साहित्य अर्थात् ऋग्वेदमे सर्पक अवश्य उल्लेख भेटैछ, किन्तु सर्प-पूजनक कोनो उल्लेख नहि । ऋग्वेदक दशम मण्डलमे दमनामयन ऋषि द्वारा रचित एक सूक्तमे सर्प शब्दक उल्लेख भेटैछ ;

यं ते कृष्णः शकुन अतुतोद पिपीलः सर्पउत वा श्वापदः
(ऋग्वेद 10.16.6)

ब्रिटिश शासनधीन निइगिनिक पश्चिम अंचलमे एक जनगोष्ठीमे प्रचलित अछि जे सर्पकेँ मारलापर ओहि सर्पक समस्त परिवार आक्रामक भ' जाइछ ।

भारतीय पौराणिकीक अनुसारेँ नाग एक अनैतिहासिक जातिक सर्प थिक जे अत्यन्त शक्तिमान, खतरनाक एक सामान्य सर्प सदृश थिक । किन्तु समय-समयपर ई अत्यन्त विस्मयकारी आ परिस्थिति बसात् मानव रूपमे सेहो परिवर्त्तित भ' जाइछ । नागकेँ सर्पराजक रूपमे उद्‌धोषित क' कए ओकरा तक्षक कहल जाइछ । ई भूमिगत राज्यक चमक-दमकक राजा रूपेँ परिचित अछि । किछु राजशाही परिवार अपनाकेँ नागक वंशज कहि संज्ञायित कयलनि । दक्षिण भारतमे नागकेँ सगुनियाँ सर्पक रूपमे पूजा-अर्चनाक प्रथा अद्यापि प्रचलित अछि । ई कहब अत्युक्ति नहि हैत जे आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे ई आध्यात्मिक शक्तिक प्रतीक रूपेँ पूजित होइत छथि । साधारणत: निजी सम्पत्तिक प्रथानुसारेँ एकर वास भूमि अरण्य अछि जतय ओ वृक्षक नीचाँ निवास करैछ तथा स्वतन्त्रता पूर्वक निष्कंटक भ' कए भ्रमण करैछ । ई आब किंवदन्ती बनि गेल अछि जे सर्पक स्वतन्त्रवास भूमि आरक्षित अछि तेँ ओ मानवक हेतु अनिष्टकारी नहि ।

पौराणिकीक अनुसारेँ नागक पत्नी नागिन कहल जाइछ जे यदाकदा सांधातिक एवं आश्चर्यजनक एवं विस्मयकारी स्वरूप प्रदर्शित करैछ, किन्तु एहन परिस्थिति अपवाद रूपेँ होइछ । युग-विधायक विष्णु एकरे छत्रछायामे क्षीर सागरमे विश्रामाश्रित रहैत छथि । शेष नाग ओछाओन छनि आ ओ अपन सातो फाणकेँ विस्तृत क' कए हुनका छाया प्रदान करैत छनि । एकरा संगहि इहो मान्यता अछि जे एहि सरीसृपकेँ अनेक विस्मय कारी शक्ति छैक आ तथ्य थिक जे ई उमयचर भारतीय पौराणिकीकेँ अत्यधिक प्रभावित कयलक अछि ।

विश्व मनीषाक अमूल्य धरोहर लोक साहित्यान्तर्गत लोक गीतादिमेँ सर्प-देवतासँ सम्बन्धित विविध रूपक लोकाख्यानपरक गीत मानवक सामाजिक जीवनक अविभाज्य अंग थिक । एहन गीतादि सभ विषहारी वा नाग वा सर्पसँ सम्बन्धित अछि जे विश्व मनीषाक उपलब्धि थिक । विशेषत: मिथिलांचलमे एकर संख्या सर्वाधिक अछि जकर

पूजनक प्रचलनक शुमारम्भ भेल । सर्पक अधिष्ठाता कोनो नराकृत देवता किंवा देवीक परिकल्पना आर परवर्त्ती कालीन थिक । पौराणिक युगमे जखन वैदिक नैसर्गिक देवता गण नर-नारीक प्रत्यक्ष मूर्तिक रूप ग्रहण करब प्रारम्भ कयलनि तखन आर्य-समाजसँ वहिर्मूत भ' कए पशु-देवतागणक अनुकरणपर सेहो नाना रूपक विचित्र देव-देवीक रूप ग्रहण करबाक परम्परा प्रारम्भ भेल । सिद्धि विनायक गणेश तकर प्रकृष्ट उदाहरण छथि । पौराणिक युगमे देवताक नर-नारी आकृतिक मूर्ति गठन क' कए जखन देवार्चना प्रधान अंग बनबाक प्रश्न उठल तखन अनार्य देवता समूह सेहो उपर्युक्त आदर्शक प्रभावसँ मुक्त नहि भ' पौलनि । एकरे फलस्वरूप सर्प-मूर्तिक परिवते नराकृत देवता ओ सर्पक अधिष्ठात्री नारी-रूपा-देवीक परिकल्पना कयल गेल । ओही समयसँ सर्प-मूर्तिक बदलामे सर्प-देवीक मूर्ति-पूजित होइत आबि रहल अछि। भारतक कोनो अंचलसँ प्रकृत सर्प-मूर्ति-पूजनक प्राचीनता धारा अद्यापि वर्त्तमान अछि । दाक्षिणात्य अंचलमे अद्यापि सर्प- मूर्तिक प्रचलन भारतक अन्य अंचलक अपेक्षाकृत अधिक प्रचलित अछि ।

चतुर्थ शताब्दीमे मिथिला आर्य-साम्राज्य-मुक्त रहितहुँ आर्य-धर्म आ आर्य-संस्कृतिक प्रभाव एहि क्षेत्रपर अवश्य पड़लैक, किन्तु कखनहुँ ओ सुदृढ़ रूपेँ प्रतिष्ठित नहि भ' सकल । पश्चिम भारतमे आर्य गणक आक्रमणक फलस्वरूप पराजित द्राविड़ गण सर्वप्रथम गंगाक दुनू तीर ध' के पूर्व दिशामे अग्रसर भेलाह । कारण तखनहुँ दाक्षिणात्यमे निविड़ अरण्य छल तकर प्रमाण रामायण कथान्तर्गत वर्णित अछि । मिथिला सेहो उत्तर भारतमे द्राविड़ लोकनिक हेतु सर्वश्रेष्ठ आश्रय स्थल बनल । एतय अनेक दिन धरि निरुपद्रव भावें रहि क' महाभारत वा आर्यभूमि भ' कए अपन संस्कारक पालन कयलनि तकर प्रभाव मिथिलांचलक समाजमे अद्यापि वर्तमान अछि । सर्प-पूजन तकर अन्यतम उदाहरण थिक । द्रविड़ समूह पूर्व भारतमे आबि क' मंगोल जातिक संग मिश्रित भ' गेल जकर परिणाम भेल जे उत्तर भारतक बीच संस्कृतिक आदान-प्रदान प्रारम्भ भेलैक । मंगोल जातिक समीप रहितहुँ एहि क्षेत्रमे आगम ओ तन्त्रशास्त्रक प्रचार-प्रसार भेलैक । तत्पश्चात् हिन्दू ओ बौद्ध -धर्ममे ओ सभ अन्तर्भूक्त भ' गेल ।

बंगालमे एकादश शताब्दीक पूर्वहि मनसा पूजाक प्रचलन समाजमे प्रतिष्ठा प्राप्त कयने छल, कारण एहि समयक उपलब्ध भास्करमे मनसाक मूर्ति गठनक एक विशेष आदर्श स्वीकृत भ' गेल छल । एहि ठामक शासक लोकनिक आदेशसँ देव-मन्दिरमे स्तुति गान पर्यन्तमे मनसा देवीक मूर्तिक उत्खनन भेल अछि ।

एकादश शताब्दीक उपलब्ध बाङ्ला भास्करमे मनसा-मूर्तिक व्यापक अस्तित्त्व जानल जा सकैछ जे समाजमे एहि देवीक रीति मत आधिपत्य स्थापित भ' गेल छल । एहि कारणेँ संस्कृत पुराणादिमे हुनक महिमा आ कीर्तिक प्रयोजनीयता देखबामेँ अबैछ ।

क्यो-क्यो जैन देवी पद्मावतीकेँ मनसा-देवीक संग अभिन्न घोषित कयलनि । बाङ्ला देशमे मनसाक एक नाम पद्मावती सेहो कहल जाइछ । एहिसँ अनुमान होइछ जे पद्मावतीक ऐतिह्य धारा आयल जे कालक्रमे मनसाक संग मिलि गेल । ओकरा संगहि कालक्रमे महाभारतसँ जरत्कारुक कथा एहिमे सम्मिलित भ' गेल ।

बाङ्ला-साहित्यक अध्येता लोकनिक मान्यता छनि जे मनसा पूजाक उदय बंगालमे भेल तथा ओकर विस्तार बंगालक निकटवर्ती प्रदेश बिहारमे भेलैक । एहि मतामतक समर्थनमे हुनका सभक कथन छनि जे मनसा-मंगलक प्रत्येक उल्लेखनीय कवि लोकनि एकर उत्पत्ति स्थल राढ़ अंचलकेँ उद्‌घोषित कयलनि । एहि प्रसंगमे पूर्व बंगक मनसा-मङ्गलक अन्यतम श्रेष्ठ कवि नारायण देवक निम्न पंक्तिक अवलोकन कयल जा सकैछ :

पूर्व पुरुष मोर अति शुद्धमति ।
राढ त्याजिया बोर ग्रामे बसति ।।

वर्त्तमान वीरभूम जिलान्तर्गत राढ़मे सर्वाधिक मनसा-पूजनक प्रचलन अछि । एहि जिलाक प्राय: एहन कोनो गाम नहि अछि जतय हुनक एक किंवा एकाधिक मन्दिर नहि अछि । ओहि सभ मन्दिरमे निम्न जातिक लोक मनसा-पूजनक अनुष्ठान करैत अछि । दशहरा, श्रावण-संक्रान्ति, भाद्र-संक्रान्ति आ नागपंचमीक दिन विशेष समारोह पूर्वक पूजनक आयोजन कयल जाइछ ।

गायन श्रावण मासमे मधुश्रावणी व्रतकथान्तर्गत कयल गेल अछि, जाहिमे देवतासँ अनुनय-विनय क' कए अखण्ड सौभाग्यक हेतु अर्चना कयल जाइछ। डा. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन *(1851-1941)* (*An introduction to the Maithili Language of North Bihar Containing Grammer Chrestomeithy and Vocabulary) (1881-82)* मे एहन गीत सभक प्रस्तुत कयने छथि। एहि गीत सभमे प्रेमालिंगनक वर्णन स्पष्ट अछि। एहि गीत सभक अध्ययनसँ अवबोध होइछ जे नाग आ सर्पक प्रति पूर्ण भक्ति-भाव प्रदर्शित कयल गेल अछि। विषहरी अपन पाँचो बहिनिक प्रतीक रूपेँ वर्णित अछि आ नागक अर्थ पुरुष सर्पकेँ सम्बोधित करैछ।

भारतीय पौराणिकीक अनुसारेँ सर्पकेँ देवता रूपमे मानल जाइछ। केरोलियन भारतीयक समक्ष अरण्यचारी जँ कदाचिते सोझाँमे आबि जाइछ तँ ओकरा संग कोनो प्रकारक छेड़छाड़ नहि कयल जाइछ, प्रत्युत ओकरा अपन गन्तव्य दिस जयबाक मार्गकेँ प्रशस्त क' देल जाइछ। ओहि समुदायमे ई मान्यता प्रचलित अछि जे, जँ कदाचित ओकरा मारि देल जायत तँ ओ निश्चित रूपेँ बदलामे ओकर भाय वा मित्र वा कोनो सम्बन्धीकेँ दंशक क' ओकर प्राणक हरण क' लेत। सेमेनोले भारतीयक विश्वास छनि जे एहन सर्पक एक प्रजाति थिक जकरा भयंकर सर्प *(Rattle Snake)* कहल जाइछ जे अपन समगोत्रीकेँ एहि प्रतिशोधक बदला लेबाक प्रेरणा अपन मृत्यूपरान्त दैछ। चरकोकीक समक्ष जखन ई भयंकर सर्प आबि जाइछ तँ ओकरा सर्प-वंशक राजा मानि तदनुरूप सम्मान कयल जाइछ। जँ कदाचित क्यो चरकोकी एहि प्रजातिक सर्पकेँ धोखहुँसँ मारि दैछ तँ सर्पक समक्ष स्वयं वा पुरोहितक द्वारा क्षमा याचनार्थ एक निश्चित नियमानुसार उपस्थित भ' कए क्षमाप्रार्थी होइछ।

भारतमे सर्प-पूजनक उद्भावना :

वैदिक कालक प्रारम्भहिसँ महाभारत किंवा बौद्ध-साहित्यक अवधि धरि सर्पकुलक अधिष्ठात्री कोनो विशेष स्त्री-देवता किंवा कोनहु प्रधान सर्पणी चरित्रक कतहु उल्लेख नहि भटैछ। प्रथमे-प्रथम महाभारतमे नाग राज वासुकिक भगिनी जरत्कारुक उल्लेखक संगहि

परम्पराक संकेत भेटैछ। निर्दिष्ट दिनमे सर्पकेँ खाद्य ग्रहण करबाक निमित्त पुजारी लोकनि सर्पक वास स्थल विशेषत: बिल वा पहाड़ वा जंगल जा क' मन्त्र द्वारा ओकर आह्वान क' पूजन करैत छथि। दाक्षिणात्यक विशेषत: कोनो-कोनो अंचल मे वा कोनो-कोनो मंदिरमे जीवित सर्पकेँ पोसल जाइत छल जकरा प्रतिदिन पूजन कयल जाइत छलैक। गृह्यसूत्रमे नागपंचमी पूजनक विधान निर्दिष्ट अछि जाहिमे जीवित सर्प-पूजनक अतिरिक्त आर किछु नहि कहल जा सकैछ। भारतवर्षमे प्राय: सर्वत्र, विशेषत: मिथिलांचलमे वास्तु-सर्प कहि क' परिचित एक जातिक गृहस्वामी सर्पकेँ गृहस्थ परम श्रद्धाक संगहि पूजा करैत आबि रहल अछि। अद्यापि मिथिलाचांल आ बंगाल वा अन्यत्रहु मृत गहुमन सापकेँ ब्राह्मणोचित संस्कार पूर्ण अन्तयेष्टिक व्यवस्थाक परम्परा अछि। उपर्युक्त समस्त निर्देशक अन्तर्गत अद्यापि जीवित सर्प-पूजनक परम्परा एहि देशमे अव्याहत रूपेँ चल आबि रहल अछि।

सर्प-पूजन आ भारतक आदिवासी :

भारतमे सर्प पूजनक परम्पराक शुभारम्भ कोन जातिक बीचमे प्रथमे-प्रथम उद्भूत भेल ताहि सम्बन्धमे निश्चित रूपेँ किछु नहि कहल जा सकैछ। तथापि कतिपय ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध भ' रहल अछि जाहि आधारपर ई लक्ष्य कयल जा सकैछ जे प्रथमत: सौतार, उराँव, मुण्डा, शवर प्रोटो आस्ट्रेलियम वा आदि अस्त्राल कहि क', परिचित जे आदिम भारतीय जाति समूह थिक जे मध्य-पूर्व भारतमे अद्यापि निवास करैत अछि तकरा बीचमे सर्प-पूजनक कोनो विशेष निदर्शन नहि भेटैछ। अधिकांश रूपेँ सर्प ओकरा सभक भक्ष्य रहलैक तथा ओकरा सभमे एकरा प्रति कोनो प्रकारक श्रद्धाभावक बोध नहि भेलैक। उपर्युक्त समस्त जाति भारतमे सम्भवत: बाहरसँ आयल। अतएव ओकरा सभक बीचमे कोनो दिन सर्प-पूजनक परम्पराक प्रचलन नहि भेलैक। भारतीय मंगोलीय जाति समूहक खासी जातिमे सर्प-देवताक विशेष प्रभाव देखल जाइछ। यद्‌यपि ओकरा सभमे नर बलिक प्रथा अद्यापि प्रचलित अछि जाहिमे सर्वसाधारणक विश्वास छैक। एकरा छोड़ि क' आसामक बोडो मिसमिल प्रभृति जातिक अहिर्बुन्ध्य अंचलमे मध्य

वीरभूम जिलाक संलग्न दक्षिण वर्द्धमान जिलामे चम्पानगर एक ग्राम थिक जे नदीक तटपर अवस्थित थिक जकर नाम बिहुला छैक। बिहुला नदीक तटपर एक मन्दिर अछि। एहि प्रसंगमे एक जनश्रुति अछि जे बिहुला नदीक धार द' कए विषहरी, नागपंचमीमे विषहरी-पूजाक दिन एखनो गामक वधू लोकनि श्वसुरक घरमे नहि रहैछ, प्रस्तुत ओ अपन नैहर चल जाइत अछि। चम्पागामक वधू लोकनि बिहुलाक कथाक स्मरण क' कए चम्पानगरक परित्याग क' दैछ। नैहर जा क' ओ सब उपवास करैछ आ विषहरीकेँ पूजा करैत अछि। *(ताराशंकर वन्दोपाध्याय, नागिनी कन्यार काहिनी, पृष्ठ 253)* अद्यापि प्रतिवर्ष ओहि अवसरपर विराट मेला लगैत अछि। मेलामे चारू भागसँ लोक एकत्रित होइछ। ई जनश्रुति एतेक व्यापक भ' गेल अछि जे एकर प्रकृत ऐतिहासिक तथ्य कहि क' ग्रहण कयल जाइत अछि।

प्राचीन बाङ्गला-भास्करमे वीरभूमसँ अनेक मनसा-मूर्ति आविष्कृत भेल अछि जकर फलस्वरूप ओहिठामक समस्त लौकिक संस्कारमे मनसा-देवीक व्यापक प्रभाव देखल जाइछ। एहि समस्त कारणेँ बाङ्गला-साहित्यक अध्येता लोकनिक मान्यता छनि जे मनसा-मङ्गल-कथामे वीरभूम जिलाक शीर्षस्थ स्थान अछि आ ओहि ठामसँ ओकर विस्तार भेलैक। हुनका सभक कथन छनि जे देवीक पूजाक प्रथम प्रचार एवं महात्म्य विस्तारक कारणेँ काव्यकार लोकनि समयानुरूप एहि पूजाक प्रारम्भ नवम् शताब्दी सुनिश्चित करैत छथि। हुनका सभक अनुमान छनि जे सेन राजवंशक प्रतिष्ठाक संगहि-संग हिन्दू-धर्मक अभ्युत्थानक समय बौद्ध-देवता-देवीगण जखन नूतन परिचय प्राप्त करब प्रारम्भ कयलनि तखन बौद्ध-जाङ्गुली तारा बंगालमे मनसा नामे विख्यात भेलीह। ई एकादश शताब्दीक बात थिक। एहि आधारपर अनुमान कयल जा सकैछ जे द्वादश शताब्दीमे देवीक महात्म्य सूचक संस्कृत पुराणमे आख्यान समूह रचित भेल तथा परवर्त्ती अर्थात् त्रयोदश शताब्दीमे बाङ्गला-मङ्गल-काव्य प्रतिष्ठित भेल।

स्त्री-देवताक परिकल्पना :

भारतीय आर्य समाजमे स्त्री-देवताक कोनो विशेष स्थान नहि छलैक। मोहन-जो-दड़ो

एहि कार्यसँ भूमि सक्कत भ' जाइत छैक जाहिपर ओकर योद्धा सभक पदचिन्ह नहि पड़ैत छल। टेवा *(Tewa)* मे कैक्टस दादी एक दोसराकेँ गीत-गायनक संग देल जाइत अछि। जँ कदाचित ओकरा हाथसँ ई खसि पड़ैत छल तँ ओकरा ओ सभ दुर्भाग्य पूर्ण मानैत अछि। ई यात्रा एक वृत्तक चारूभाग तीन बेर करबाक प्रथा अछि, जाहिमे ओ स्वत: क्रमश: छोट भ' जाइत छल आ चारिम बेर ओ स्वत: विलुप्त भ'अपन लोकक बीच चल जाइत छल। जखन लोक ओकरा देखय जाइत छल तखन ओ यथास्थानपर अन्य दिन जकाँ अभिनव नूतन-स्वरूप धारण कयने रहैत छल।

प्रत्येक होपी हाउसक कोनो कोनमे कैक्टसक एक टुकडी रखबाक प्रथा अछि जाहिसँ घरक नेओ मजगूत होइछ। एहन लोक प्रचलित विश्वास छैक। एकोमा *(Acama)* मे पुरुष लोकनि द्वारा व्यवहार कयल जाइछ जाहिसे पुरुषत्त्वमे विकास होइछ: यथा *The cactus is of special religious significance among Pueblo Amercian Indians. It is one of the plants that "give of them selves" to the people. The Zuni Cactus Society is a war society functioning also for the control of game and the curing of wounds; it approcaches the cactus with a special beaded prayer feather. In the rituals whipping of chiefs being installed, the cactus socities of zuni and Jamez both use cacti. This gives those who are whipped great power and luck in hunting and gambling. Members of the Hans cactus society also whipped each other with cacti to induce bravery and endurance, and to make the ground freeze so that their warriors would leave no tracks. At Tewa cactus Grand-Mother is passed from hand to hand with song within the winter Kiva. If she is dropped it pretends had luck. During this "journey" thrice round the circle she becomes smaller and smaller and in the fourth round she finally vanishes and has returned to her own people. When people go to look there she is growing in her own place as fresh as ever.*

Pieces of cactus are put in the corners of each Hopi House. "to give the houses roots." At Acoma during certain kachina activities men rule themselves against the cactus (carried by other) to attain manliness. (Dictionary of folklores Mythology and Legends. Edited Maria Leah, Newyork, 1949 Page 178).

प्रत्यक्ष रूपेँ वृक्षक बीचमे सर्प-पूजनक परम्पराक पश्चात् प्रस्तर-निर्मित मूर्तिपर सर्प-

एतय अनेक विभिन्न जातिक सर्पक परिचय भेटैछ जे विश्वमे अन्यान्य कतहु नहि उपलब्ध होइछ । एहि कारणेँ कतोक विद्वानक कथन छनि जे आदिम युगहिसँ सर्प एहि देशमे भयक कारणेँ पूजित होइत आबि रहल अछि । एहि आधारपर अनुमान कयल जाइछ जे जीवित सर्पक पूजासँ सर्प-पूजनक परम्पराक सूत्रपात भेल । एहि प्रसंगमे पूर्वहि कहल गेल अछि जे नाग-पूजाक अपेक्षा सर्प-पूजाक सर्वाधिक प्राचीनतम धारा थिक । सर्प-पूजनक वर्त्तमान आचार समूह पूर्ववर्त्ती हिन्दू प्रभावक कारणेँ विधिवद्ध भेल, किन्तु प्राचीनतम आचार-समूहमे एकर कोनो विशेष निदर्शन नहि उपलब्ध होइछ ।

भारतक विभिन्न अंचलमे जीवित सर्पक पूजा ईसा पूर्व शताब्दीमे उत्तर-पश्चिममे प्रचलित छल जाहि प्रसंगमे विशिष्ट प्रमाण सेहो उपलब्ध अछि । विश्व विजेता ग्रीक वीर आलेक्जान्डर *(Alekzandar)* जखन भारत आयल रहथि तखन हुनका संगहि जे सैन्य समूह आयल छल ओहिमे सँ जे क्यो स्वदेश प्रत्यावर्त्तित भेलाह ओ भारतक सम्बन्धमे जे अपन अभिज्ञताक वर्णन कयलनि ताहिमे एलिमेन नामक एक वीर ग्रीक सेनापतिक कथन छनि जे जखन आलेक्जान्डर भारतवर्षमे प्रवेश कयलनि आ एकक पश्चात् एक क्रमश: ओकरापर अधिकार प्राप्त कयलनि तखन ओ अनेक स्थानपर अन्यान्य पशुक संगहि एक जातिक विराटकाय सर्प देखलनि, जाहि सर्पकेँ भारतीय पवित्र ज्ञान कहि क' सभक्ति पूजन करैत रहथि ।

भारतवर्षक अनेक अंचलमे अद्यापि जीवित सर्प-पूजनक परम्परा प्रचलित अछि । भारतवर्षक बाहर ई कोनो नर किंवा नारी आकृतिक सर्पक परिकल्पना क' कए सर्प-पूजनक प्रवृत्ति साधारणत: जीवित सर्पक उद्देश्यहि ई पूजन प्रचलित छल । केवल मध्य एशियाक मेसोपोटामियाक प्रयत्न तात्त्विक अविष्कारक फलस्वरूप एक सर्प-देवी आविष्कृत भेल अछि जकरा दूनू हाथमे सर्प सदृश दुइ सूत तथा गर्दनिमे सर्पाकार घेरा भेटल अछि (*Field Museum of Natural History. Chicago Volume xx1 1931, Page* 62) ।

दाक्षिणात्यक कानाडा प्रदेशमे कोनो-कोनो स्थानपर अद्यापि जीवित सर्प-पूजनक

ओकर विस्तृत परिचय उपलब्ध होइछ, किन्तु हुनकापर कोनो प्रकारेँ देवत्त्वक आरोप नहि कयल गेल अछि । निश्चित रूपेँ महाभारतमे सेहो कोनो नाग चरित्रपर देवत्त्वक आरोपक उल्लेख नहि भटैछ, किन्तु परवर्त्ती कालमे नाग राज वासुकिपर देवत्त्वक आरोप कयल गेल, किन्तु जरत्करुपर कोनो दिन देवत्त्वक आरोप नहि भेलनि। निश्चित रूपेँ परवर्त्ती कालमे नाग देवीक संग अभिन्न सम्बन्धक कारणेँ देवत्त्वक मर्यादा प्राप्त करबामे ई समर्थ भेल होयतीह । महाभारतक कथाक अनुसरण कयल जाय तँ जरत्कारु गर्भसँ आस्तिकक जन्मोपरान्त ओकर प्रधानता अकस्मात विलुप्त भ' गेलैक । प्राग्महाभारतीय युगक *एतरेय ब्राह्मण* मे एक स्थलपर सर्प-राज्ञीक अर्थ ओतय पृथ्वी थिक ने की सर्पकुलक राज्ञी ।

विभिन्न मत :

भारतमे सर्प-पूजनक उद्भावनाक प्रसंगमे विद्वान लोकनिक मतक कोनो अन्त नहि अछि। पाश्चात्य विद्वान फार्गुसन *ट्री एण्ड सर्पेण्ट वर्शिप (Tree and Serpent Worship)* मे उल्लेख कयलनि अछि जे सर्प-पूजन सर्वप्रथम भारतवर्षमे बाहरसँ आयल । हुनक कथन छनि जे तुरानीय जातिसँ ई उद्भूत भेल । तुरानीय जाति भारतमे उत्तर पश्चिम मार्गसँ एतय प्रवेश क' कए सर्प-पूजनक परम्परा प्रचलित कयलक । सर्प-पूजनक संग आर्य जातिक कोनो मौलिक सम्पर्क नहि छलैक । आर्य गण भारत वर्षमे आबि क' तुरानीय जातिक निकट सम्पर्कमे सर्प-पूजनक शिक्षा ग्रहण कयलक । किन्तु एहि प्रसंगमे पाश्चात्य विद्वान डब्लू.एच.हमबली अपन पुस्तक *सर्पेण्ट वर्शिप इन अफ्रिका द म्युजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री (The Serpent worship in Africa the Museam of Natural History)* मे कहलनि जे फार्गुसन अपन ग्रन्थक रचना *1869* मे कयने रहथि आ एहि हेतु ओ जे शर्त्त सब रखलनि ओ कठिनता उत्पन्न करैछ । ओ तुरानीय शब्दक प्रयोग ज्ञानेन्द्रियसँ इतर आर्यक हेतु कयलनि । तुरानीय आर्य लोकनि द्वारा निष्कासित कयल गेल रहथि । ओ ईरानमे बसल पारसी लोकनिक नाम तुरानीयन नामे अभिहित कयलनि जे यायावर भ' कए घासाच्छादित मध्य एशियामे प्रवेश कयलनि । यद्यपि फार्गुसन मूलभूत

तैलंगमे प्रचलित चेमुण्ड नामक कथाकेँ विस्तृत रूपेँ उल्लेख करबाक प्रयोजन नहि । कारण एहिमे पूजित सर्प-देवीकेँ बंगालमे कतहु चेमूंडी सेहो कहल जाइछ । आसामक बोडो नामक इण्डोमंगलीय जातिक एक शाखामे नागफेनीक पूजनक प्रचलन अछि । ओकरा सभक बीच बाधन आ बोड़ीया नामक देवताक संगहि नागफेनी वृक्षक पूजनक प्रचलन अछि ।

प्रसार -मूर्तिपर सर्प-पूजन :

प्रस्तर खोदित नागफेनी वृक्ष आसामक बोडो अंचलमे आविष्कृत भेल अछि । उत्तर आ उत्तर पूर्व बंगालपर बोडो संस्कृतिक अवदानकेँ नहि अस्वीकारल जा सकैछ । एहिसँ अनुमान होइछ जे नागफेनी वृक्षमे मनसा-पूजनक परम्पराक प्रचलन बोडो जातिक अवदान थिक । उद्भिज-विज्ञानक भाषामे एहि जातिक वृक्षकेँ कैक्टस *(Cactus)* कहल जाइछ जकर शताधिक उत्पत्ति *(Genera)* तथा तेरह सय जाति उपलब्ध अछि । नागफेनीक गाछ कैक्टस नामे भारतीय परिचित छथि । मरिया लीच द्वारा सम्पादित *Dictionary of Floklore Mythology and Legends* मे कहलनि अछि जे अमेरिकन प्यूब्लो *(Pueblo)* भारतीयमे कैक्टस नामे जानल जाइछ । ई एक एहन उद्भिज अछि जे आम लोकक हेतु अत्यन्य लाभप्रद थिक । जूनी कैक्टस सोसायटी एक युद्धरत सोसायटी थिक जे विभिन्न प्रकारक क्रीडा-कौतुककेँ नियन्त्रित करैछ, संगहि भिन्न-भिन्न प्रकारक घाओ-घोस सभक एकरा द्वारा उपचार सेहो कयल जाइछ । एहि कोटिक कैक्टसक समक्ष उपस्थित हैबा काल एक विशेष प्रकारक प्रार्थना युक्त पाँखिक संग जयबाक प्रथा अछि । जखन धार्मिक अनुष्ठान द्वारा जातिक मुखियाकेँ प्रतिष्ठापित कयल जाइछ तखन ओकरा कोड़ासँ मारबाक प्रथा अछि जाहिमे कैक्टस द्वारा जूनी *(Zuni)* एवं जेमेज *(Jamez)* कैक्टसक प्रयोग करबाक प्रथा अछि । एहि अनुष्ठान महत्त्व छैक जे ओहि मुखियाकेँ शिकार आ द्यूत क्रीड़ामे ओकरा विशेष शक्ति प्राप्त होइछ । हॉन्स कैक्टस सोसायटीक सदस्य लोकनि एक दोसराकेँ कैक्टस ल' कए घात-प्रतिघात करैछ जाहिमे ओकर सभक विश्वास छैक जे ओकरा सभमे वीरत्त्व एवं सहन शक्तिक अपार विकास होइत छैक तथा

एवं हरप्पाक उत्खननक पश्चात् ई विषय स्पष्ट भेल अछि जे प्रागैतिहासिक युगमे मातृका पूजन *(Cult of Mother godees)* क विशेष प्रचलन छलैक । मोहन-जो-दड़ो युगमे अन्य देवी-देवताक संगहि नाग-पूजन सेहो प्रचलित छल । ओहि समयमे वृक्ष तथा पशु-पूजनक परम्पराक उल्लेख भेटैछ । मिश्र, मेसोपोटामिया, कीट, साइप्रस, फिलिस्तीन, सीरिया, एशिया माइनर, बाल्कान, एल्स, पश्चिमी एशिया, इजियन सागर आदिमे उपलब्ध देवी पूजाक समानहि सिन्धु क्षेत्रमे देवी-पूजा प्रचलित छल । मातृका-पूजनक शुभारम्भ पृथ्वी पूजनसँ भेल । मातृका-पूजन शक्तिक पूजनक प्रतीक रूपमे प्रचलित छल । मोहन-जो-दड़ोक उत्खननसँ भिन्न-भिन्न प्रकारक मातृका-देवीक अनेक मूर्ति उपलब्ध भेल अछि जे एहि विषयक प्रमाण थिक जे तद्युगीन समाजमे हुनक उपासना भिन्न-भिन्न रूपेँ होइत छल । सिन्धुघाटी सभ्यताक अनुशीलनसँ ज्ञात होइछ जे मातृका-पूजाक रूपमे सर्प-पूजनक परम्परा छलैक । सिन्धु घाटीक उत्खननसँ एक मानव प्रतिमा उपलब्ध भेल अछि जकर दुनू भाग विस्तृत सर्पफण अछि ।

उपर्युक्त तथ्यक आधारपर अनुमान कयल जा सकैछ जे आर्य-समूह भारतीय प्राक् आर्य सभ्यतासँ मातृका-पूजनक आदर्श ग्रहण कयने होथि । भारतवर्षमे आर्य-सभ्यता प्रतिष्ठित भेलोपर एतद्देशीय पूर्वतन सभ्यताक जे आदर्श छल ओ आर्य समाजान्तर्गत एकहि बेर विलुप्त नहि भेल प्रत्युत भारतीय पौराणिक साहित्यमे शक्ति-देवताक जे परिकल्पना कयल गेल तकर स्पष्ट प्रतीयमान थिक । मिथिलांचलमे सर्प-देवताक परिकल्पनामे अनार्यधर्म-सम्भूत मातृका-पूजाक अन्यतम विकास दृष्टिगोचर होइत अछि।

आर्य-संस्कार :

समग्र भारतवर्षमे विशेषत: मिथिला, बंगाल, आसाम एवं समस्त दाक्षिणात्य अंचलसँ आर्य-संस्कृतिक कोनो विशेष प्रभाव कार्य रूपेँ परिणत नहि भ' सकल । मिथिला, बंगाल आ आसामक भाषा आ साहित्यपर आर्यक विस्तृत प्रभाव रहितहुँ ओकर आभ्यन्तरीन लौकिक धर्मान्तर्गत प्राचीनतम संस्कारादि अक्षुण्ण रूपेँ सुरक्षित रहल । दाक्षिणात्यमे

तथ्यक उपेक्षा कयलनि जे सांस्कृतिक तत्त्व बिनु कोनो प्रजातीय सम्मिश्रणसँ आयल । जखन ओ घोषणा कयलनि जे अन्ततः सर्प-पूजन एक महत्त्वपूर्ण परीक्षणक विषय थिक जे तुरानीय रक्तक शिरामे ओहि समय वर्तमान छल । *Fergusson wrote in 1869 and his use of terms presents difficulties. He employs the word in the sense of non-Aryan; Turanians being a people who were ousted by Aryan. Persians and settled Iranian gave the name Turanian to momads of the steppe reign of Central Asia …………… Fergusson, however, disregards the fundament fact that culture elements may be borrowed without racial mixture when he claims that eventually the worship of the serpent may become valuable test of the presence of Turaian blood in the vains of the people. (Serpent worship in Africa, The Museum of Natural History. W. H. Hambly Chicago xx1, 1931 Page 18)*

नाग ओ सर्प :

किछु विद्वानक मान्यता छनि जे भारतीय नाग समूह एक जाति विशेष थिक जे सर्पक जातीय अमिज्ञा *(Totem)* व्यवहार क' कए सर्पक संगे ओकरा कोनो प्रकारक सम्पर्क नहि छलैक तथा सर्प ओ नाग एकार्थवाचक शब्दो नहि थिक । किन्तु किछु विद्वत् वर्गक मान्यता छनि जे नाग कहलापर सर्प नर एक जाति विशेष थिक जे अर्द्धनर ओ अर्द्ध नाग जातिक बोध करबैछ । किछु अन्य विद्वान् लोकनिक मत छनि जे भारतवर्षमे जल देवताकेँ सेहो सर्प कहल जाइछ । उपर्युक्त समस्त मतवाद एतय एक देशदर्शी आ अनुमानात्मक थिक जाहिमे ककरो समग्र रूपेँ नहि ग्रहण कयल जा सकैछ । तखन तँ ई विषय सत्य थिक जे प्राचीन भारतीय संस्कार नाग ओ सर्प एकार्थवाचक शब्दो नहि, नाग कहला पर सम्मवतः गन्धर्व, किन्नर, यक्ष एहि श्रेणीक कोनो उपजातिक बोध होइछ आ सर्प कहलापर प्रकृत प्राणी बुझल जाइछ । एहि सम्पर्कमे हिन्दू सभक द्वारा नित्य - स्नान एवं तर्पण मन्त्रादि उल्लेख्य योग थिक । ओहिमे नाग ओ सर्पकेँ परस्पर स्वतन्त्र कहि क' उल्लेख कयल गेल अछि जाहिमे एकर प्रकृतिकेँ परस्पर सम्पूर्ण स्वतन्त्र हैबाक आमास भटैत अछि । मन्त्र थिक :

देवा यक्षास्तथा नागा गन्धर्वोप्सरसोऽऽसुराः ।
क्रूराः सर्पाः सुपर्णाश्च तरवो जिम्भगाः खगाः ।

विद्याधरा जलाधारास्तथैवाकाशमिनः ।
निराहाराश्च ये जीवाः पापे धर्मे रताश्चये ।
तैषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया ।

उपर्युक्त मन्त्रमे द्रष्टव्य थिक जे नागकेँ यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा इत्यादि सहित एकहि संग उल्लेख क' कए सर्पकेँ क्रूर विशेषण द्वारा ओकर स्वतन्त्र अस्तित्वक उल्लेख कयल गेल अछि । क्रूर सर्पकेँ पुनः *जिह्मग* अर्थात् कुटिल गामी सर्प भेलोपर स्वतन्त्र रूपेँ ओकर उल्लेख अछि । किन्तु जाहिमे ओकर उल्लेख अछि ओकरापर रक्षणशील हिन्दू-समाज कोनो प्रकारेँ देवत्त्वक आरोप नहि कयलक । अतएव उपर्युक्त तथ्यसँ प्रमाणित होइछ जे नाग ओ सर्प सर्वथा स्वतन्त्र अस्तित्त्व रखने छल । आर्येत्तर समाजमे यद्यपि सर्प-पूजनक परम्परा प्रचलितो छल तथापि आर्य समाजकेँ एकरासँ कोनो प्रकारक सम्पर्क नहि छलैक जकरा स्पष्ट रूपेँ अनुभव कयल जा सकैछ । महाभारतमे वर्णित नाग एक जाति छल जे आर्य विरोधी छल तेँ ओ सभ आर्यक संग सतत विवादमे संलग्न रहैत छल । तद्युगीन समाजमे ओ देवताक रूपमे पूजित नहि भ' सकल ।

जीवित सर्प - पूजनक परम्परा :

परवर्त्ती कालमे आर्येत्तर समाजमे जीवित सर्प-पूजनक स्वतन्त्र धारा सम्मवतः नाग ओ सर्प एहि दुनू शब्दक अर्थ सादृश्यक कारणेँ, नाग जातिक ऐतिह्यक कारणेँ, एकरामे आबि क' मिल गेल । एकर परिणाम भेल जे समाजमे नाग-पूजनक प्रवर्त्तन भेलैक । एहि तथ्यकेँ स्वीकार कयलोपर महाभारतोक्त नाग जातिक अधिपति एक मात्र वासुकि सर्पराजक रूपमे पूजित भ' पौलनि । अतएव महाभारतक अन्यान्य कोनो नाग-चरित्र सर्प रूपकेँ लाभ नहि प्राप्त कयलक । नागराज वासुकिक भगिनी जरत्कारु मुनिक पत्नी मिथिलामे आबि क' सर्प-देवी मानसा वा विषहरी रूपमे परिवर्त्तित भेलीह । महाभारतक बीचमे तत्कालीन मानव समुदायमे ई एक स्वतन्त्र शाखा मात्र छल जे ओ ओही युगमे सरीसृप रूपमे प्रसिद्धि प्राप्त कयलक । एहि कथाकेँ स्वीकार कयलोपर जे प्राचीन हिन्दू ओ बौद्ध-साहित्य वा भास्कर्यमे सर्प जातिक संख्या अफ्रिकाक अपेक्षा सर्वाधिक अछि ।

आर्य प्रभावक फलस्वरूप मिथिला, बंगाल, आसामपर तँ आरो अचिन्तकर । एकर भाषा एवं साहित्यमे अभ्यन्तरीन लौकिक धर्म संस्कारादिपर द्रविड़ प्रभाव अद्यापि अक्षुण्ण अछि । एकरे फलस्वरूप एतय स्पष्ट रूपेँ देखल जा सकैछ। दाक्षिणात्य प्रभाव भारतवर्षक अनेक प्राचीनतम सामाजिक संस्कारादिक अधिकारी रहल जाहिमे शक्ति वा मातृका-पूजा अन्यतम थिक । एहि कारणेँ मिथिला ओ दाक्षिणात्य व्यतीत भारतवर्षक अन्य कोनो स्थानपर अधिसंख्यक लौकिक स्त्री-देवताक पूजनक परम्परा नहि भेटैछ ।

महाभारतोत्तर युगमे आर्य प्रभावित भारतमे सर्वत्र सर्पकेँ *पुं* देवता नागराज वासुकिक रूपमे पूजन होमय लागल । किन्तु मिथिला आ दाक्षिणात्यक प्रायः सर्वत्र एकरा बदलामे अनेक स्त्री-देवताक पूजनक परम्पराक सूत्रपात भेलैक ताहिमे मिथिलामे नागराज सर्वाधिक उल्लेख्य योग्य थिक ।

जीवित सर्प-पूजनक प्रभावक अवस्थामे विशेष कोनहु वृक्षकेँ सर्पाधिष्ठित वृक्षक पूजाक विवेचन क' कए देखल जा सकैछ । वृक्षक संग सर्पक सम्पर्क अत्यन्त व्यापक आ प्राचीन थिक । दाक्षिणात्यमे अश्वथ-वृक्षक संग सर्पक सम्पर्क रहल अछि । एहि कारणेँ अश्वथ-वृक्षक नीचाँ माटिपर किंवा प्रस्तर-निर्मित नाग-मूर्ति उपहार द' कए किंवा नागक पूजा क' कए अपुत्र वा बन्ध्या नारी सन्तानक कामना क' कए अश्वथ-वृक्षकेँ एक सय आठ बेरि प्रदक्षिणा करैत अछि । एहि वृक्षकेँ सर्पक संगहि उर्वरतावाद *(Fertility Cult)* सँ सम्पर्कित अत्यन्त स्पष्ट रूप आँखिक सोझाँ अछि । एहि आधारपर अनुमान कयल जाइछ जे वृक्षमे जीवित-सर्प-पूजक कोनो जातिक संस्कृतिक संगहि मिलि गेल अछि । एहि कारणेँ एक समयमे सर्प-पूजनक व्यापक प्रचलन भारतमे देखैत छी । ओही समयमे मिथिलामे सेहो वृक्षोपासक जातिक प्रत्यक्ष किंवा परोक्ष प्रभावक फलस्वरूप एतय एक श्रेणीक वृक्षमे सर्प-पूजनक परम्परा प्रवर्त्तित भेल जाहि वृक्षक नाम देल गेलैक विषहरी वृक्ष जकरा स्वूही-वृक्ष सेहो कहल जाइछ ।

स्वूही-वृक्षमे सर्प-पूजन :

स्वूही-वृक्षमे अनेक रोगक प्रतिशोधक गुण छैक जाहि कारणेँ आदिम समाजमे एकर

पूजनक सूत्रपात भेलैक । पश्चात जा क' कालक्रमे ओकरा संग कोनो कारणेँ वृक्षमे सर्प-पूजनक धारा आबि क' सम्मिलित भ' गेलैक । स्वूही किंवा ओकर अनेक प्रतिशब्द संस्कृतमे भेटैछ, यथाः सेहुण्ड, सिंहतुण्ड, बज्जी, बजद्रुम, सुधा, समस्त दुग्धा, स्नूव, एवं गूड़ा इत्यादि । एहिमेसँ अनेक शब्द प्रत्यक्ष रूपेँ एहि देशक भाषामे ग्रहण कयल गेल आ कतेक परवर्त्ती कालमे परिकल्पित भेल । प्रत्यक्ष रूपेँ सर्प-विष नहियो रहलापर अन्यान्य गुणक कारणेँ स्वूही वा सीज वृक्षक तीक्ष्ण रेचक, दीपक, कटू आ गरु थिक । ई शूल, आम्र, अष्टीला, आधुन, कफगुल्फ, उदर, अणलिन्द, उन्माद, मोह, कुष्ट, अर्श, शोथ, मेद, अश्मरी, वणशोध, ज्वर, पिल्हा, विष ओ दूषी विष-नाश करबाक शक्ति छैक । स्वूही क्षीर, उष्णवीर, स्निग्ध, कटुरस ओ लघु गल्म, कुष्ट आ उदर ओ अन्यान्य दीर्घ विरेचनार्थमे ई श्रेष्ठ होइछ । एक मान्यता अछि जे सीज वृक्षकेँ बज्र निवारक क्षमता छैक ।

एहि कारणेँ पैघ शहरमे छतपर सीज-वृक्ष गमलामे लगाओल जाइछ । एहि वृक्षकेँ विष प्रतिशोधक गुण छैक ताहि कारणेँ आदि मानव समाजमे एकरामे श्रद्धा आ विस्मयक बोधक उत्पत्ति भेलैक, कारण दक्षिणात्यमे ई पाला कहि क', परिचित एहि श्रेणीक अनुरूप क्षीर-युक्त-वृक्षमे सर्प ओ अन्यान्य देवी-देवताक पूजनक परम्पराक प्रचलन अछि । *(Religion And Society Among the coorage of south India M. N. Srivastava, Oxford 1952, Page 77)* पश्चात् जा क' वृक्षमे सर्प-पूजनक धारा एहिमे आबि क' मिलि गेल ।

स्वूही-वृक्षक नीचाँमे सर्प-पूजनक धारा मिथिलामे अव्याहत रूपेँ प्रचलित अछि । भारतक विभिन्न अञ्चलमे सीज मनसा जकरा मिथिलामे साह पसीझ वा नागफेनीक नामे जानल जाइछ तकरा भिन्न-भिन्न स्थानपर भिन्न-भिन्न नामे सम्बोधित कयल जाइछ जेना उत्तर प्रदेशमे मेहुण्ड, थूहर एवं सीज तथा मुम्बईमे निवडुङ्ग वा थोर कहल जाइछ । गुजरातमे थोरडात्, डलिया, कटोली, हातलोतधारी, नानो परदेशी, महाराष्ट्रमे निवडुङ्ग, काँटे निबडुङ्ग फेनी चेते निबडुङ्ग, विकांडी, कर्णाटकमे निवडुङ्ग तथा तैलंगमे चेमूण्ड कहल जाइछ । किन्तु बंगालमे एकरा मनसा वृक्ष कहल जाइछ । उपर्युक्त उल्लिखित नाममेसँ ककरो उत्पत्ति संस्कृतसँ नहि भेल अछि, प्रत्युत ई सभ देशज शब्द थिक । एहिमे

विद्यापतिक आश्रय दाता :

ओइनवार वंशक राजा लोकनि मिथिलापर *1324* ई. सँ *1652* ई . धरि शासन कयलनि जनिक अक्षय अनदान विश्व इतिहास स्वर्णक्षरमे अंकित अछि । एहि वंशक राजा लोकनि मिथिलाक राजानीतिक, प्रशासनिक , कला, धर्म, दर्शन आ साहित्यक क्षेत्रमे नव कीर्तिमान स्थापित कयलनि । विशेषत: संस्कृत आ मैथिली भाषा ओ साहित्यक विकासार्थ एहि वंशक राजा लोकनि साहित्य-मनीषी लोकनिकेँ आश्रय द' कए, प्रोत्साहित क' कए साहित्यक विकास यात्राकेँ अभिवर्द्धित करबामे अभूतपूर्व योगदान देलनि । विद्यापतिकेँ ई सौभाग्य भेटलनि जे एहि वंशक देव सिंह *(1410-1413)*, शिवसिंह *(1413-1416)*, लखिमारानी *(1415-17-1428-29)*, पद्मसिंह *(1429-1430)*, विश्वास देवी *(1430-1442)*, हरिसिंहदेव *(1443-1444)*, नरसिंहदेव *(1444-1460-62)* इत्यादि राजा लोकनिक साहचर्य पाबि अपन काव्य-प्रतिभाक संगहि संग संस्कृत आ मैथिली साहित्यक अमूल्य सेवा कयलनि जे अजर, अमर आ अक्षुण्ण अछि ।

महाराज हरिसिंहदेवक मृत्यूपरान्त हुनक पुत्र नरसिंह देव धरि ओइनवार वंशक चौदहम राजाक रूपमे मिथिलाक राजसिंहासनपर आरुढ़ भेलाह । हुनक विरुद्ध छलनि *दर्पनारायण।* मिथिलाक किछु विशेषज्ञ इतिहासकारक भ्रम छलनि जे नरसिंहदेव कर्णाट वंशीय नहि रहथि, किन्तु कन्हदाक उत्कीर्ण अभिलेखसँ एहि भ्रमक निराकरण भ' गेल अछि । ई अपन पिताक समानहि विद्यानुरागी रहथि जनिक भूरि-भूरि प्रशंसा हुनक समकालीन साहित्य -मनीषी लोकनि कयलनि । विद्यापति *दानवाक्यावली, दुर्गाभक्तितरङ्गिणी एवं व्याडीभक्तितरङ्गिणी* क रचना कयलनि संगहि मिसरु मिश्र क *विवाद चन्द्र*, रुचिपतिक अनर्घ *राघव टीका*, वाचस्पति मिश्रक *कृत्यमहार्णव* तथा वर्द्धमानक *गंगाकृत्य विवेक* आदि ग्रन्थादिमे हुनक प्रशस्ति वाचक श्लाघनीय गुण -कीर्तनक आख्यान उपलब्ध होइत अछि । कन्हदाक अभिलेखमे हिनका महादानी एवं धीर-वीर कहल गेल अछि :

मुदामा आ मनसा :

मैंसूरमे साधारणत: ब्राह्मणेत्तर जातिक बीचमे मुदामा नामक एक सर्प-देवीक पूजनक परम्परा अद्यापि प्रचलित अछि । उच्चत्तर हिन्दू समाजक बीचमे आर्य संस्कृतिक प्रभावसँ पुंग देवता नागराजक पूजा विशेष रूपेँ प्रचलित अछि, किन्तु अपेक्षा कृत निम्न समाजमे ई लौकिक स्त्री-देवताक प्रधानता लक्षित होइत अछि । मैंसूरक प्राचीन भास्करमे मुदामाक अनेक मूर्ति आविष्कृत भेल अछि । एहि श्रेणीक मूर्तिक निम्न भाग सर्पाकृत तथा उर्ध्वभाग स्त्री आकृतिक थिक । मत्स्य कन्याक समानहि अर्द्ध-नागिन ओ अर्द्ध-नारी-मूर्तिक वैशिष्ट्य एहिमे लक्षित होइछ । अत्यन्त प्राचीन कालमे मध्य एशियाक स्काइयीय जातिक माध्यमे एला नामक अनुरूप आकृतिक एक नागकन्या पूजित होइत छलीह । स्काइयी लोकनिक भारत-वर्षमे आगमनोपरान्त ओकर पूजनक प्रथाक प्रारम्भ सेहो एतय प्रचलित भेल । कारण महाभारत ओ बौद्ध-साहित्यमे एला नामक एक नागक विस्तृत उल्लेख भेटैछ। एहि आदर्शक नाग-कन्याक मूर्ति भारतवर्षक अनेक अंचलमे उपलब्ध हैबाक प्रमाण भेटैछ ।

ओड़िसाक मयूरभंज जिलामे *पाँचपीर* क अन्तर्गत खिंचि नामक स्थानमे *किञ्चकेश्वरी (कञ्चुकेश्वरी)* कंचुक सर्पक केचुआ वा खिञ्चकेश्वरी नामक एक सर्प-देवीक मूर्ति प्रतिष्ठित अछि । मयूरभंजक अन्तर्गत कोप्तिपन्दा ओ रायबनियामे विराट पाट ठाकुरानी नामक एक सर्प-देवीक परिचय उपलब्ध होइछ । एकर सम्पूर्ण आकृति मैंसूरक मुदामा मूर्तिक अनुरूप अछि । ई मूर्ति समूह द्विभूजा उमय बद्ध-मुठ्ठीमे सर्प-शिशु आवृत अछि आ मस्तकपर विस्फारित सर्प-फणक छत्र तथा मुहपर ध्यानक भंगिमा अछि । ई अनुमान कयल जाइछ जे दक्षिणक मुदामा-मूर्तिक आदर्शक संगहि मिथिला ओ बंगालके प्राचीन मनसा-मूर्ति समूहक संग तुलना क' कए देखल जाय तँ ओकर ऊपरका भागक गठनाकृति प्राय: अभिन्न थिक । अतएव एहि आधारपर अनुमान कयल जा सकैछ जे प्राचीन भास्करमे एहि प्रकारक सर्प-देवीक निर्माणक आदर्श दक्षिणसँ मिथिला आ बंगालमे प्रचलित छल, तखन मिथिला आ बंगालक ओहि समयक स्थानीय देवी-मूर्तिक

उपचारक वस्तुसभक आभवमे कहल गेल अछि:

जँ उपचारक कोनो वस्तु नहि जुड़य तँ **नारद** कहने छथि निर्मल जलसँ ओकर पूर्ति करी।।४०।।

आब आमरण-पूजा । **गौड़ादि संग्रहमे** कहल गेल अछि :

तकरा बाद अंगदेव, अस्त्र आ वाहन सभक पूजा करी ।।४१।।

पाद-पल्लव-नख-श्रेणी, मयूखावलिः दाता तत्तनयो मयोक्त विधिना भूमण्डलं पालयाद् धीरः श्री नरसिंह भूप तिलकः कान्तोधुना राजते । (जर्नल आफ द बिहार एण्ड उड़ीसा सोसायटी 20-17)

हिनका भूपति तिलक, वीर, कामन्दक मायाक राजनीतिक विचारक अनुगामी आदि विशेषणसँ अलंकृत कयल गेल अछि ।

विद्यापति हिनकहि आज्ञा पाबि न्यायिक कार्यवाही सम्बन्धी ग्रन्थ *विभागसार* क रचना कयलनि जाहि आधारपर हिनक राज्यक शासन व्यवस्था संचालित होइत छलनि । अद्यापि हिन्दू उत्तराधिकारक हेतु एकर प्रामाणिकता अक्षुण्ण अछि । आरम्भमे मंगल श्लोकक पश्चात् अछि :

राज्ञो भवेशाद्धरिसिंह आसीत्तत्सूनुना दर्प नारायणेन ।
राज्ञाः नियुक्तोऽत्र विभागसारं विचार्य विद्यापति रातनोति ।।
(विभागसार/ 2)

विद्यापति दुर्गाभक्तितरङ्गिणीक अन्तर्गत हिनक चर्चा कयलनि:

अस्ति श्रीनरसिंहदेव मिथिला भूमण्डला खण्डलोभूभृन्मौलि-
किरीट रत्ननिंकर प्रत्यचिंताड़्घ्रिद्वयः
(दुर्गाभक्तितरङ्गिणी 12)

प्रस्तुत कृति व्याडीभक्तितरङ्गिणीक रचना सेहो विद्यापति अपन आश्रय दाता दर्पनारायणक आज्ञा पाबि कयलनि ताहि प्रसंगमे संदेहक कोनो गुंजाइश नहि कारण ओ स्वयं अपन आश्रयदाताक रूपमे ओइनवार वंशक महाराज दर्पनारायणक चर्चा कयलनि:

अनुरक्तं यदन्दुर्गाभक्तितरङ्गिणयाम् अनुसंधेयं ग्रन्थ गौरवा-
शङ्क यात्र पुनर्नलिखितमिति । इति समस्त प्रक्रियालंकृत-
भूपतिवर - वीर- श्री दर्पनारायण देवेन समय विजयिनत ज्ञप्त
श्री विद्यापति कृतौ श्री व्याडिभक्तितरङ्गिण्यां

निर्माणक आदर्शक प्रभाव एहि ठामक मूर्ति सभपर कतेक पड़ल जकर फलस्वरूप इहो भ' सकैछ जे नागक संसर्गमे कनेक अंशक परित्याग कयल गेल । एहि प्रसंगमे विस्तृत आलोचना आगाँ कयल जायत ।

चिन्नैई शहरक प्रादेशिक सरकारक प्रत्यागारमे भिन्न-भिन्न प्रकारक अनेक रास नाग-मूर्ति संरक्षित अछि । एहिसँ भिन्न चिन्नैईक समुद्रक उपकूल अंचलक भ्रमण कयलापर अश्वथ-वृक्षक नीचाँ सरीसृपाकृत नाग-मूर्ति प्राय: सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ । बंगला देशक नागघट, पटे, मेढ़वा करण्डीमे नाग-नागिनक रूपमे हमरा सभक परिचय होइत अछि जाहिमे किछुओ व्यतिक्रम नहि, प्रत्युत सूक्ष्म रूपेँ देखलापर लोकक‍ेँ आश्चर्य होइत छैक।

दाक्षिणात्यक लौकिक धर्मक इतिहासक पर्यालोचनोपरान्त ज्ञात होइछ जे मुदामासँ भिन्न लौकिक सर्प-देवीक पूजन ओतय अद्यापि प्रचलित अछि । कानडा प्रदेशक एक स्थानपर पूजित मञ्चास्मा नाम उल्लेखनीय अछि । मञ्चास्मा प्रकृत रूपमे कोनी देव-देवीक नाम नहि, प्रत्युत ई निश्चये एक अदृश्य सर्पक नाम थिक । तखन ई नाम स्त्री अर्थ ज्ञापक कहि क' ई देव-कल्प सर्पकेँ स्त्री-सर्प कहि क' कल्पना कयल गेल अछि । एहि सर्पिनीपर देवत्त्वक आरोपक कल्पना क' कए वर्षमे एकबेर *(नाग पंचमीकेँ छोड़ि क')* एहि उद्देश्यसँ पूजन कयल जाइछ । पूजा स्थल मञ्चस्मा स्थानक नामे प्रख्यात अछि । पूजा स्थलपर एक छोट सन घर अछि जतय निश्चित रूपेँ कोनो देव-मूर्ति नहि, प्रत्युत वाल्मीकि स्तूप आकृतिक एक छोटसन स्तूप अछि । एहि स्तूपक सम्मुख पूजा-निवेदन करबाक परम्परा अछि । ओतय जनश्रुतिमे विश्वास अछि जे सर्प साधारणत: वाल्मीकि स्तूपपर निवास करैत अछि आ अदृश्य सर्पिणीकेँ वाल्मीकि वासिनी कहि क' कल्पित कयल गेल अछि ।

एहि प्रसंगमे कतिपय विद्वानक मान्यता छनि जे मञ्चस्मा प्रादेशिक उच्चारणक कारणेँ *मनसा अम्मा* अर्थात् *मनसा माताक* रूपमे परिगणित भ' गेल अछि । ओहि क्षेत्रमे *च क स* सदृश उच्चारण कयल जाइछ तकर परिणाम स्वरूप मनचा अम्मा वा मनसामापर आबि

बंगालमे दुर्गा-पूजा होइत आबि रहल अछि तहिना मनसा वा विषहरी-पूजनक विधि *व्याडीभक्तितरङ्गिणी* सेहो ओतय प्रचलित भेल ताहिमे आश्चर्यान्वित होयबाक कोनो सम्भावना नहि दृष्टिगत होइछ । बंगालमे मनसा-पूजा वा विषहरी-पूजा जे अद्यापि प्रचलित अछि तकर मूल विधि मिथिलावासी कालजयी कवि विद्यापति द्वारा रचित सत्य थिक जाहिमे मिथिला आ बंगालक एक सांस्कृतिक योग सूत्रक संधान पाओल जाइछ । बंगालमे प्रचलित मनसा-पूजाक विधि आ बंगला देशक वरिशाल जिलाक रहयानि मिथिला आयल से अनुमान सापेक्ष अछि ।

नामकरण

व्याल संस्कृतक विशेष शब्द थिक जकर अर्थ होइछ निर्दय, दुष्ट, हिंस्रक पशु, अनिष्टकारी, द्वेणी एवं श्वापद इत्यादि । माघ *शिशुपाल वध मे व्याला दिषा येतृभिरुन्मदिष्णवः (12-28)* भारवि *किरातार्जुनीम् मे यंता गज व्यालेभिषापराद्धा (17.25)* तथा भतृहरि *व्यालं बाल मृणालातुभिरसौ रौद्धं समुज्जेमते (2.6)* एहि शब्दक प्रयोग कयलनि । उच्चारण विकृतिक कारणेँ व्याल शब्द व्याडमे परिवर्तित भ' गेल जकर स्त्रीलिंग रूप थिक व्याडी । उपर्युक्त अर्थक परिप्रेक्ष्यमे सर्प व्याल भ' सकैछ, किन्तु मनसा किंवा विषहरी कथमपि नहि । विद्यापति सर्पक निमित्त एहि शब्दक प्रयोग कयलनि जनिक पूजन मनसा वा विषहरी वा नाग-पूजनक विधिक उल्लेख कयलनि जे मानव जातिक हेतु भयंकर अनिष्टकारी ओ दुष्ट हिंस्रक वन्य-पशु थिक । उपर्युक्त सन्दर्भमे आसामक कामरूप कवि मनोहर ओ दुर्गावर *बाहुड़ा* वा *बाहुरा* शब्दक प्रयोग कयलनि जकर शाब्दिक अर्थ थिक घुमक्कड़ पर्यटक । ओड़िया भाषामे बहुड़ा बताह वा पागल वा सनकलकेँ कहल जाइछ । सर्प सेहो बसात सदृश चंचल आ सतत अस्थिर रहनिहार वन्य-पशु थिक । उपर्युक्त पृष्ठभूमिमे भक्त-प्रवण कालजयी महा महाकवि विद्यापति सर्प-पूजनक पद्धतिक जे व्यवस्था देलनि तकरा ओ *व्याडीभक्तितरङ्गिणीक* संज्ञासँ अभिहित कयलनि ताहिमे कोनो आश्चर्य नहि ।

तरङ्गः प्रथमः । श्री व्याडीचरणेमद्भक्तिरस्तु ।
(व्याडीभक्तितरङ्गिणी फोल्इओ 14)

उपर्युक्त पंक्तिक अवलोकनोत्तर ई स्पष्ट भ' जाइछ जे एहि अभिनव ग्रन्थक रचना विद्यापति महाराज नरिसंह दर्पनारायणक आज्ञासँ कयने छलाह जे निर्विवाद थिक । एकर रचना ओ *1455* ई. क लगपासमे कयने होयताह से अनुमान सापेक्ष थिक । एकर रचनाक पाछाँ हुनक उद्देश्य छलनि जे समकालीन मिथिलांचलक सामाजिक जीवनमे धार्मिक प्रवृत्तिक आधिक्य छल तकर संकेत हिनक कतिपय संस्कृत गन्थ एवं पदावलीमे उपलब्ध होइछ । कारण धर्मशास्त्रक क्षेत्रमे कालजयी कविक केहन योगदान भेल ताहि प्रसंगमे अद्यपर्यन्त यथार्थ रूपेँ चर्चा नहि भेल अछि । धर्मशास्त्रक विकास आ विस्तारमे मिथिलाक योगदान अक्षुण्ण रूपेँ विश्वमे सर्वविदित अछि ताहि परिप्रेक्ष्यमे विद्यापतिक अवदान अद्यापि उपेक्षित अछि, कारण ओ एहि विषयसँ सम्बन्धित दानवाक्यावली, शैवसर्वस्वसार, शैवसर्वस्वसार-प्रमाणभूत-संग्रह, गंगावाक्यावली, विभागसार, दुर्गाभक्तिरङ्गिणी, व्याडीभक्तितरङ्गिणी, वर्षकृत्य, जन्मदिन कृत्य एवं गयापत्तलक आदि दस ग्रन्थक रचना कयलनि । किन्तु दुर्भाग्यक विषय थिक जे अद्यापि धर्मशास्त्रक विकासमे हिनक अवदानक मूल्यांकन मिथिलांचल वा मिथिलेत्तर क्षेत्रक अनुसन्धाता लोकनि वास्तविक रूपेँ नहि क' पौलनि अछि।

मूल रूपेँ विद्यापति रहथि ओइनवार वंशक राजा लोकनिक राजपण्डित । एहि कारणेँ, राज्य कुलक समस्त धार्मिक कृत्यमे पौरहित्यक दायित्त्वक निर्वाह करय पड़ैत छलनि । एहि विषयमे समय-समयपर राजा वा रानी वा अन्य राज्याश्रितक जिज्ञासाक शान्त्वर्थ उत्तर देमय पड़ल होयतनि । एहि दृष्टिएँ धर्मशास्त्र सम्बन्धी जाहि-जाहि ज्ञातव्य विषय रहैत छल तकरा ओ नियमानुसार प्रकरणबद्ध क' ओकरा ग्रन्थ-रूप देलनि। कोना पूजा करबाक चाही, पूजामे संकल्पक प्रयोजन पड़ैछ अत: एहि संकल्प-वाक्यक विशाल संग्रहकेँ दानवाक्यावली, शिववाक्यावली, एवं गंगावक्यावलीक रचना कयलनि । दुर्गाभक्तितरङ्गिणी ओ व्याडीभक्तितरङ्गिणी सेहो एही श्रेणीक ग्रन्थ थिक जाहिमे ओ अपन आश्रयदाताक नामोल्लेख क' कए ग्रन्थक रूप देने होयताह ताहिमे सन्देह नहि । वैह पश्चात् जा क' सर्वजनोपयोगी हैबाक

(फोल्इओ ११ क)

गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचारा दशक्रमात्
गन्धादयो नैवेद्यान्ता पूजा पञ्चोपचारिका ।।३७।।
मधुपर्केत्यत्र पठित्वा स्नानीयेति व्यवहरन्ति । गन्ध पुष्प मात्रोपचारस्तु ब्रह्मपुराणे :
अनेनैव विधानेन गन्धपुष्पे निवेदयने ।।३८।।
केवलं पुष्पोपचारस्त्वाग्नि पुराणे :
घ्यात्वा प्रणवं पूर्वन्तु तन्नाम्नासुसमाहित: ।
नमस्कारेण पुष्पाणि विन्यासेतत पृथक-पृथक ।।३९।।
उपचार भावे राघवभट्ट:
सर्वोपचारवस्तुनामलाभेवावनैवहि ।
निर्मलेनोदके नाथ पूर्णतेत्याह नारद: ।।४०।।
अथाभरण पूजा गौड़ादि संग्रहे :
अङ्गस्त्र वाहने तस्या पूजयेच्च तत: परं ।। ४१ ।।

अनुवाद:

गन्धसँ नैवेद्य तँ (अर्थात् गन्ध, पुष्प, धूप, दीप आ नैवेद्य) - ई सभ पूजाक दस उपचार थिक ।।। ३७।।

एहिमे मधुपर्कक जगह स्थानीय देबाक व्यवहार अछि । केवल गन्ध आ पुष्पक सेहो प्रकार अछि, जेना **ब्रह्मपुराणमे** कहल गेल अछि :

एही विधिसँ गन्ध आ पुष्प चढ़ाबी ।।। ३८।।

केवल पुष्पवाला उपचार सेहो **अग्निपुराणमे** अछि:

ध्यान क', चित्त स्थिर क' ओं आ नम: लगाय नाम ल' लए प्रत्येक देवताकेँ फूल चढ़ाबी।।३९।।

आ अशुद्ध पाठ देलनि जे ओकर अर्थ-बोधमे कठिनता उत्पन्न करैछ ।

(च) प्रोफेसर आशुतोष भट्टाचार्य *बाङला मङ्गल काव्येर इतिहास* मे प्रयुक्त पाण्डुलिपि आ हमरा लग उपलब्ध पाण्डुलिपिक जखन हम मिलान करैत छी तखन ओ हमरा अधिक प्रामाणिक ओ शुद्ध पाठ प्रतीत होइछ ।

(छ) व्याडीभक्तितरङ्गिणीक अन्य कोनो पाण्डुलिपि मिथिलांचलमे अनुपलब्ध अछि । एहि परिप्रेक्ष्यमे ढाका विश्वविद्यालयान्तर्गत उपलब्ध पाण्डुलिपिकेँ प्रामाणिक मानल जा सकैछ । सम्पूर्ण पाण्डुलिपि संस्कृतमे अछि आ आरम्भिक मात्र सोलह ताल पत्र उपलब्ध अछि जे प्रथम तरङ्ग नामे सम्बोधित अछि । प्रतिपाद्य ग्रन्थक द्वितीय तरङ्गक कोनो अता-पता नहि अछि ।

व्याडीभक्तितरङ्गिणीक पाण्डुलिपिक अभिज्ञान जखन बाङला साहित्यक अनुसन्धता लोकनिकेँ भेलनि तखन कतिपय विद्वान आक्षेप कयलनि जे मनसा-पूजा मिथिलांचलक अपेक्षा बंगालमे सर्वाधिक प्रचलित अछि तेँ एकर रचना मिथिला वासी विद्यापति कोना कयलनि ? एहिमे पूजन प्रकृतिक जे अनुसरण कयल गेल अछि ओकरे आधार मानि क' बंगलामे अद्यापि मनसा पूजनक परम्परा चलि आबि रहल अछि । वर्त्तमान बंगला देशक वरिशालि जिलामे मनसा पूजा विशेष धूमधामसँ सम्पन्न अनुष्ठानकेँ *रहयानि* कहल जाइछ तकरो चर्चा एहिमे भेल अछि । अतएव मनसा पूजाक ई विधि बंगलादेशमे रचित हैबाक उपर्युक्त आभिजात्यक कारणेँ एहिमे विद्यापतिक नाम जोड़ि देल गेल अछि । किन्तु बाङला - भाषा-भाषी वर्गक मान्यता सर्वथा सन्देहास्पद अछि। एतय स्मरण रखबाक चाही जे नवद्वीपमे स्मृति एवं न्याय-शास्त्रक अध्ययन-अध्यापन केन्द्र स्थापित हैबाक पूर्व बंगाली छात्रगण उपर्युक्त विषयक अध्ययनार्थ मिथिला अबैत छलाह जकर अनेक ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध अछि । एहि ऐतिहासिक सूत्रक आधारपर ई प्रमाणित होइछ जे मिथिलासँ अनुलिपि क' कए व्याडीभक्तितरङ्गिणीक पाण्डुलिपिकेँ बंगाली छात्रगण ल' गेल होयताह तेँ ओतय ई सर्वाधिक प्रचलित भेल ताहिमे कोनो आश्चर्य नहि । जहिना विद्यापति द्वारा रचित दुर्गा-पूजाक विधि *दुर्गाभक्तितरङ्गिणीक* आधारपर अद्यापि सम्पूर्ण

क' स्थिर भ' गेल अछि । एहि प्रसंगमे क्षितिज मोहन सेनक कथन छनि जे ई मनसा माँ मिथिला आ बंगालमे मनसामाता वा मनसा देवीक रूपमे उत्पत्ति भेल अछि । *(बाङ्ला मनसा पूजा, प्रवासी, आषाढ़1329, पृष्ठ 391)* । एहि मतक समर्थन कयलापर कतिपय ऐतिहासिक तथ्यक उल्लेख क' कए ओ कहलनि जे एकादश शताब्दीक मध्य भागमे कर्णाट ओ सेन राज्य दक्षिणात्यसँ मिथिला आ बंगाल आबि क' अपन शासनक स्थापना कयलनि । एहिसँ पूर्व ओ लोकनि सम्भवत: मञ्चादेवीक समर्थक रहल होथि । एतय हुनक प्रतिष्ठाक स्थापनाक संगहि-संग सम्भवत: एहि मञ्चादेवीक जनप्रियतामे वृद्धि भेल हो । एहिसँ पूर्व मिथिलांचलमे जाङ्गुली देवी पूजित होइत आबि रहल छलीह । किन्तु बौद्ध-धर्मक विलोप भ' गेलापर ओहि स्थानकेँ मञ्चादेवी स्थान ग्रहण कयलनि । ई मञ्चा देवी ब्राह्मण शास्त्रकारक हाथमे पड़ि क' अनियति कालमे मनसा देवीक रूपमे परिवर्त्तित भ' गेलीह । जँ एहि मतमे सत्यता अछि तँ मिथिला वा बंगाल मनसा देवी द्राविड़ बौद्ध ओ ब्राह्मण एहि तीनूक स्वतन्त्र सम्प्रदायक धर्मगत आदर्शक शंकर-संसृष्टि थिक । मञ्चास्मासँ मनसा माता शब्दक उत्पत्ति हैब असम्भव नहि, किन्तु एहिसँ ई कथा नहि प्रमाणित होइछ जे कानाडा प्रदेशक एक ग्राम्य सर्प-देवता मिथिला आ बंगाल आबि क' मनसा देवीक रूपमे परिणत भ' गेलीह । कर्णाट आ सेन राजवंशक संगहि मञ्चादेवीक सम्पर्कक कल्पना कतेक दूर धरि संगत हैत तकरा विशेष रूपेँ विश्लेषण करबाक प्रयोजन अछि । एहि सिद्धान्तकेँ स्वीकार करबासँ पूर्व मञ्चास्माक प्रकृतिक सम्बन्धमे एक स्पष्ट धारणा बनयबाक आवश्यकता अछि। जखन कर्णाट लोकनिक मिथिलामे एहि देवताकेँ प्रचारित कयलनि तखन अपन देशमे हुनक व्यापक प्रतिष्ठा आ प्रचार-प्रसार वांछनीय थिक । किन्तु मञ्चास्माक कोनो मूर्ति नहि उपलब्ध होइछ । कर्णाट प्रदेशक तोरिथारक चक्र प्रशृति नामसँ परिचित अनेक अदृश्य जाति वाल्मीकि स्तूपपर सर्प-देवताक उद्देश्यसँ पूजा करैत आबि रहल अछि ।

कर्णाट राजा लोकनि रहथि राजपूत वंश संभूत । दाक्षिणात्यमे राजपूत ओ अस्पृश्य जातिक बीचमे केहन सम्पर्क अछि ओ सर्व विदित अछि । अतएव सर्प-देवीक प्रसंगमे मञ्चास्माक संग कर्णाट राज वंशक कल्पना करब नितान्त भ्रामक हैत । एहि आधारपर

स्नान, वस्त्र, आभरण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, स्तुति - ई थिक सोलह उपचार । ।।३६।।

प्रपञ्चसारमे कहल गेल अछि:

अर्घ्य, पाद, आचमन, मधुपर्क, आचमन,

कारणेँ प्रचलित भेल । व्याडीभक्तितरङ्गिणी तकर प्रकृष्ट उदाहरण थिक। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे प्रयोजन एहि विषयक थिक जे हुनक समस्त अप्रकाशित कृतित्त्वकेँ प्रकाशमे आनल जाय आ ओहि सम्बन्धमे विद्वत-वर्ग ओकर यथार्थताक संग मूल्यांकन करथि । हुनक जयन्तीक नामपर लाखक लाख टाका प्रति वर्ष मिथिलांचल वा मिथिलेत्तर क्षेत्रमे व्यय कयल जाइत अछि, किन्तु हुनक अप्रकाशित ग्रन्थ समूहकेँ प्रकाशित क' के सर्व सुलभ करबाक दिशामे कोनो प्रयास नहि कयल जा रहल अछि जे मैथिली साहित्यक भविष्यक हेतु चिन्तनीय विषय थिक ।

□ □

अनुमान कयल जाइछ जे कर्णाटवंशक द्वारा मिथिलांचलमे मनसा देवीक नामे मञ्चास्मा-देवीक पूजा प्रचारित भेल से युक्ति संगत नहि प्रतीत होइछ । अतएव कर्णाटक स्थापनोपरान्त दाक्षिणात्यक मच्चास्मा नाम आबि मिथिलांचलमे मनसा देवीक रूपमे रूपान्तरित भेल सेहो नहि कहल जा सकैछ । जँ मञ्चास्मासँ मनसा माताक उत्पत्ति भेल अछि तकर एक आर सूत्र अछि जकर मध्यस्थतता द्वारा ई नाम मिथिलांचलमे आयल तकरा स्वीकार कयल जा सकैछ । तकर प्रमुख कारण थिक मिथिलाक सपेरा दल । पूर्वहि उल्लेख कयल गेल अछि जे एक समयमे मिथिलांचलक सपेरा दल साप पकड़ि क' ओकर खेल देखा क' भारतक विभिन्न अंचलमे परिभ्रमण करैत छल । अनेक अंचलमे मध्य युगमे प्रादेशिक साहित्यन्तर्गत मिथिलाक सपेराक उल्लेख भेटैत अछि । *आइने-ए-अकबरी* मे सेहो मिथिलाक सपेरा दलक उल्लेख भेटैछ । एत्पश्चात् उत्तर ओ मध्य प्रदेश होइत गोरखनाथक शिष्य कहि क' परिचित योगी सम्प्रदाय भुक्त एक श्रेणीक सपेरा मिथिलासँ कामरूप कामाख्या धरि भ्रमण करैत छल । कारण ओकरा सभक विश्वास छलैक जे कामाख्या सिद्धि-पीठ थिक आ ओतय नहि गेलापर सर्प-मन्त्र सिद्धि नहि भ' सकैछ । एहिसँ प्रमाणित होइत अछि जे मिथिलाक मनसा नाम मध्य भारतसँ एतय प्रचार-प्रसारमे सहायता देलक किंवा मध्य भारतसँ मिथिला अनलक । अतएव मञ्चास्मा शब्द जँ मनसा रूपमे मिथिला आयल तखन मिथिलाक सपेरा दलक मध्यस्थतासँ आयल जाहिमे कर्णाटवंशक मध्यस्थता कतहु दृष्टिगत नहि होइछ ।

मिथिलामे प्रचलित मनसा नामक प्रसंगमे दुइ सम्भावना दृष्टिगत होइछ । प्रथमत: हरियाणाक पूजिता सर्प-देवी मनसाक प्रत्यक्ष प्रभाव वा द्वितीयत: कर्णाट प्रदेशक ग्राम-देवी मञ्चास्माक प्रभाव । किन्तु एहि दुनूक बीचमे कोनो प्रभाव नि:संशय रूपेँ ग्रहण करबाक योग्य नहि ।

सर्वप्रथम संस्कृतक पद्मपुराण, देवीभागवत, ब्रह्मवैवर्त पुराण आदि कतेक अपेक्षाकृत आधुनिक उपपुराणादिमे सेहो मनसा नामक संग साक्षात्कार होइत अछि । उपर्युक्त पुराणादि प्राय: द्वादश शताब्दीक पूर्ववर्त्ती रचना नहि थिक । ओहि सभमे मनसाक संक्षिप्त

स्वेच्छया ढाका विश्वविद्यालयक पाण्डुलिपि प्रभागकेँ दान द' देलनि जे *M.S. No K-531* मे संरक्षित अछि जकर लेखक रूपमे ग्रन्थारम्भहिमे विद्यापतिक नाम अंकित अछि ।

(ख) व्याडीभक्तितरङ्गिणीक उक्त पाण्डुलिपिक प्रसंगमे सूचना भेटैछ गणेशचरण बसुक *न्यू इण्डियन एण्टीक्वेरी (New Indian Antiquary, Volume - VIII No. 3 पृष्ठ 49-57)* मे प्रकाशित अछि ।

(ग) उक्त पाण्डुलिपि प्रसंगमे विस्तृत विवरण आ विश्लेषण प्रकाशित भेल *भरनाक्यूलर जर्नल ऑफ ढाका (इतिहास, बंगाब्द 1375 - 1968 ई पृष्ठ 154-196)* मे।

(घ) प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरी *(1924-1985)* अपन अनुसन्धानात्मक ऐतिहासिक ग्रन्थ *मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति (Mithila in the Age of Vidyapati 1976)* एकरा प्रकाशमे अनलनि जकर स्रोत - संधानक प्रसंगमे हुनक कथन छनि जे ढाका विश्वविद्यालक तत्कालीन इस्लामिक हिस्ट्री विभागक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डा. ए.बी.एम. हबिबुल्लाक सहयोगसँ उक्त पाण्डुलिपि प्राप्त कयलनि जकरा ओ तत्कालीन भागलपुर विश्वविद्यालयक प्राक्तन प्रोफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष डा. वीरेन्द्र श्रीवास्तवक सहयोगसँ सुधारि क' एपेण्डिक्स - २ मे प्रकाशित कयलनि । उक्त पुस्तक अङरेजीमे लिखित रहबाक कारणेँ जनसामान्य पाठक धरि नहि पहुँचि पौलक ।

(ङ.) ढाका विश्वविद्यालयक पुस्तकालयाध्यक्षसँ कतेक वर्ष धरि पत्राचारोपरान्त हमरा व्याडीभक्तितरङ्गिणीक पाण्डुलिपिक फोटो प्रति उपलब्ध भेल जकरा विगत अनेक वर्ष धरि पढ़बाक प्रयास क' कए ओकरा बङ्गाक्षरसँ देवनागरीमे लिप्यन्तरण कयल । हम जखन उपलब्ध पाण्डुलिपिकेँ प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरी द्वारा प्रयुक्त पाण्डुलिपि संग मिलान करैत छी तखन स्थल-स्थलपर भिन्नताक दिग्दर्शन होइछ । जतेक दूर धरि प्रोफेसर चौधरी द्वारा प्रयुक्त पाण्डुलिपिक प्रश्न अछि हमरा जनैत बङ्गाक्षरक ज्ञानक अभावमे ओ ओकरा गम्भीरता पूर्वक अध्ययन नहि क' पौलनि तेँ स्थल-स्थल पर भ्रामक

व्याडीभक्तितरङ्गिणी

मैथिल कवि विद्यापति विरचित ।

(राजा दर्पनारायण सिंह - एर आमले)

। स्तुति ।

ॐ नमो गणेशाय: । अध घटस्थापनविधि: ।
प्रथमत: सूर्य्यायार्घ्यं दत्त्वा स्वतिवाचनं कुर्यात् ।
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषाविश्व वेदा:
स्वस्ति न स्ताक्ष्र्योऽरिष्टनेमि: स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दघातु । १ ।
ॐ स्वस्तिन: स्वस्ति ।
वेतालश्च पिशाश्च राक्षसाश्च सरीसृपा: ।
अपसर्पन्तु ते सर्वे वैष्णववास्त्रेण ताड़िता: ।
सूर्य: सोमो यम: काल: सन्ध्ये भूतान्यह: क्षपा ।
पवनो दिक्पतिर्भूमिकाशं खचराम (रा:) ।
ब्राह्मं शासनमास्थाय कल्पध्वमिह सन्निधिम् । २ ।

अनुवाद:

मैथिल कवि विद्यापति द्वारा रचित । राजा दर्पनारायण सिंहक राज्य कालमे। स्तुति। गणेशकेँ प्रणाम । आब घट-स्थापन विधि । पहिने सूर्य देवताकेँ अर्घ्य द' कए स्वस्ति वाचन करी ।

इन्द्र आ वद्धश्रवा हमर कल्याण करथु । ताक्ष्र्य आ अरिष्टनेमि हमर कल्याण करथु । वृहस्पति हमर मंगल करथु । स्वस्ति, स्वस्ति, स्वस्ति ।। १ ।।
बेताल, पिशाच, राक्षस आ सरीसृप ई सभ विष्णुक अस्त्रसँ आहत भ' दूर पड़ाथु । सूर्य, चन्द्र, यम, काल, दूनू सन्ध्या, पाँच भूत, दिन, राति, पवन, दिशा सभक पति, भूमि, आकाश, आकाशचारी जन्तु आ देवता ई सभ ब्रह्माक अज्ञानुसार एतय उपस्थित होथु ।।२।।

(फोल्इओ १० ख)

अथवा मन्त्रबीजेन यथोक्त विधिना सुधी: ।।३ ३ ।।
तथा च तन्त्रान्तरे:
पूरयेत् षोड़शमिर्वायुं धारयेताचतुगणै: ।
रेचयेत् कुम्भकार्धेन शक्त्यायं वीर्य कै: ।।
तदशक्तौतच्चतुर्थमेवं प्राणस्य संयम: ।
प्रणायामं विना मन्त्रपूजने नहि योग्यता ।।३४।।
अथ कराङ्गन्यास: । शारदायाम्:
अङ्गहीनस्य मन्त्रस्य येनैवाङ्गनि कल्पयेत ।। ३ ५ ।।
अथ षोड़शोपचारा: । कृत्यचिन्तामणौ :
आसनं स्वागतं पाद्यामर्घ्यमाचनीयकम् ।
मधुपर्काचमनस्नानवस्त्राभरणानि च ।।
गन्धे पुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं वन्दनं तथा ।।३ ६ ।।
प्रपञ्चसारे:
अर्घ्यपाध्याचमनक मधुपर्काचमनान्यपि ।

अनुवाद:

मूलमन्त्र, ओंकार वा बीज मन्त्रसँ विधिवत् तीन बेर प्रणाम करी । ।। ३ ३ ।।
आन तन्त्रमे कहल गेल अछि:
प्राणायाममे, सोलह बेर मन्त्र पढ़ैत काँढमे वायु भरी, तकर चतुर्गण मन्त्र पढ़ैत वायुकेँ रोकी, आर कुम्भक (श्वास रोध) केर आधा कालमे ओहि वायुकेँ शनै:-शनै: छोड़ी (अर्थात् १ ६; ६ ४; ३ २) एहि अनुपातमे) ।।३४।।
तत्पश्चात् करन्यास । **शारदामे** कहल गेल अछि :
जे मन्त्र अङ्गहीन हो तकर अंग स्वयं कल्पित करी । ।।३५।।
तत: पर सोलह उपचार । **कृत्यचिन्तामणिमे** कहल गेल अछि : आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय,

संग कोनो प्रकार सम्पर्क छैक वा नहि तकर कोनो संकेत नहि भेटैछ । भारतक जाहि अंचलमे प्राचीन लौकिक धर्मक ऊपर ब्राह्मण धर्म प्रतिष्ठित भ' गेल छल, ओहि स्थानपर अनार्य-देवताक संग आर्य-देवताक विरोध उपस्थित भेल । एहि विरोधक कथा प्रत्येक प्रादेशिक भाषामे लिपिवद्ध अछि । संस्कृत पुराणादिमे एहि प्रकारक कथासँ भराक्रान्त अछि ।

अस्मवरुक कथा गतानुगतिक ग्राम्य-देवता ओ पौराणिक-देवताक कलहक वृतान्त ल' कए रचित भेल । देवता लोकनिक दिससँ कलहक बीचमे एतय कोनो मानव-मानवीय जीवनक भाग्य आनि क' जोड़ि देल गेल अछि । अतएव मनसाक कथापर एहि कथाक कोनो प्रभाव नहि परिलक्षित होइत अछि । विशेषत: मिथिलांचलक मनसाक कथापर जँ दाक्षिणात्यक कोनो-ने-कोना अंचलक लोक-साहित्यमे एहि अपूर्व विषय-वस्तु रक्षित रहैत । एहि विषयक गौरवक कारणेँ साधारणक बीच ई अत्यन्त सहजहि प्रभावक लाभ प्राप्त करैत । किन्तु दाक्षिणात्यक विचित्र एवं समृद्ध लोक-साहित्य संग्रहमे कतहु चाँद-सौदागर आ बिहुलाक कथाक कोनो प्रकारक उल्लेख नहि भेटैछ, प्रत्युत एहिपर मिथिलाक दावी अग्रगण्य अछि ।

पाण्डुलिपिक आविष्कार :

व्याडीभक्तितरङ्गिणीक पाण्डुलिपिक अभिज्ञानक निम्नस्थ स्रोत थिक:

(क) ढाका विश्वविद्यालयक स्थापनोपरान्त पुस्तकालयक पाण्डुलिपि प्रभागकेँ अत्यधिक वैभवशाली, समृद्धशाली ओ गौरवशाली बनयबाक उद्देश्यसँ महामहोपाध्याय डा. हरप्रसाद शास्त्री *(1853-1931)*, जे उक्त विश्वविद्यालयक स्थापनहिसँ संचालन समितिक कर्णधार रहथि, उक्त क्षेत्रक परिभ्रमण क' कए प्राचीन पाण्डुलिपि आदिक अन्वेषणार्थ, संकलनार्थ, संग्रहणार्थ सचेष्टता आ तत्परता देखौलनि । एहि क्रममे हुनका पूर्व-बंगालक मैनन सिंह जिलाक एक विद्यानुरागी भूस्वामी कृष्णदास आचार्य चौधरीक व्यक्तिगत पाठागारमे व्याडीभक्तितरङ्गिणीक पाण्डुलिपि अन्तर्भुक्त छल जकरा ओ

परिचयसँ ई अनुमान होइछ जे एहि देवताक पूजा समाजमे बेसी दिनसँ परिवर्त्तित नहि भेल । तखन एकर पूजनक परम्परा शताधिक वर्ष पूर्व प्रवर्त्तित भेल जे अनुमान कयल जा सकैछ ।

एहि सिद्धान्तक मिथिलाक अनेक पुरातात्त्विक आविष्कारक धारा द्वारा समर्थित कयल जा सकैछ । मिथिला आ ओकर समीपवर्त्ती अंचलमे असंख्य मनसा मूर्ति आविष्कृत भेल अछि जकर निर्माणक समय दशम शताब्दीसँ द्वादश शताब्दीक बीच अनुमान कयल जाइछ ।

जरत्कारु ओ मनसा :

महाभारतमे कोनो स्थानपर वासुकिक भगिनी जरत्कारुकेँ सर्प-कुलक अधिष्ठात्री देवी वा सर्प-माता कहि क' उल्लेख नहि कयल गेल अछि । सर्प-माताक माने महाभारतमे एक मात्र कश्यप मुनिक पत्नी कद्रूक उल्लेख अछि, जरत्कारुक नहि । महाभारतमे नाग-वंशक जरत्कारुकेँ कोनो विशेष श्रद्धा भक्ति नहि भेटलनि तकरहु कतहु उल्लेख नहि । हँ, एक स्थलपर मात्र दुइ कथानार्गत वासुकि कर्तृक जरत्कारुक सम्वर्द्धना कयल गेल अछि। किन्तु हुनका वासुकि भगिनी कहि क' नहि, प्रत्युत हुनक गर्भस्थ सन्तान आस्तिक कर्तृक जनमेजय द्वारा अनुष्ठित सर्प-यज्ञ ध्वंस होयबाक रूपमे जानल जाइछ ने कि वासुकिक भगिनी होयबाक तकर कालोचित सम्वर्द्धना स्थापित कयल गेल । महाभारतमे एक मात्र श्लोकमे हुनक उल्लेख अछि :

सानवमानार्थ दानैश्च पूज्या चातु रूपया : ।
सोदरां पूजयामास स्वसारं पन्नगोत्तम : ।।

आस्तिकक जन्मोपरान्त जरत्कारुक क्षणिक प्रधानता लुप्त भ' गेल । एहना स्थितिमे वासुकिक भगिनी जरत्कारुकेँ सहसा मनसा नाम ग्रहण क' कए सर्प-कुलक अधिष्ठात्री देवीक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक कोनो तर्क संगत कारण नहि उपलब्ध होइछ । ई अनार्य देवी मनसा समाजमे आर्य प्रभाववश महाभारतक कथाक पृष्ठभूमिमे अपनाकेँ स्थापित

(फोलइओ १०क)

इत्यादिभिद्याय :

आवाहणादि कर्मानी रक्षाञ्च प्रणवेन तु ।। ३१ ।।
आदिपदेन संस्थापन सन्निधापनसन्निबोधनानि बोध्यानि ।
यावद्यागासानन्तु सन्निध्यं परिकल्पयेत् ।
दत्त्वा पाद्यादिकां पूजां स्वाद्वन्नञ्च निवेदयेत ।
जप्त्वातु विधिवन्नत्वा ततो देवं विसर्ज्जयेत् ।
एष कर्मक्रम : प्रोक्त : सवेषां यजनक्रमे ।। ३२ ।।

अत्र विसर्जयेदित्यन्ते न मूलपूजामभिधाय एष क्रम इत्यनेन च सर्वेषां देवानां पूजने आकाङ्क्षितभूतशुद्धयादिकमुपचार दानात्परिमिति दृश्यते । तत : मूलमन्त्रेण बीजेन प्रणवेन प्राणायाम : । तथा च कालीहृदये :

प्राणायामं त्रयं कृत्वा मूलेन प्रणवेन वा ।

अनुवाद :

इत्यादि कहि आगाँ कहैत छथि:

आवाहन आदि कर्म तथा रक्षा ओंकारसँ करी । एतय आदि शब्दसँ स्थापन, सन्निधापन (लग आनब), सन्निबोधन (अभिमुख करब) अभिप्रेत अछि ।।३१।।

घरक जेहन विस्तार हो तदनुसार देवताक सांनिध्य (सम्मुख स्थापना) करी । पाद्य आदि द' पूजा करी आ स्वादु अन्न चढ़ाबी । जप क' विधिवत् प्रणाम करी। तखन विसर्जन करी । ई क्रम सभ देवताक पूजामे राखल जाय।।३२।।

एतय विसर्जयेत धरि प्रधान पूजा कहल गेल अछि । आगाँ एष-क्रमसँ अभिप्रेत अछि जे एहिना आनो देवता सभक पूजा करी । भूतशुद्धि आदि कर्म उपचार (दान) केर बाद होइत देखल जाइत अछि ।

तकरा बाद मूल मन्त्रसँ बीजसँ तथा ओंकारसँ प्राणायाम करी, जेना कि **कालीहृदय** कहल गेल अछि ।

(फोल्इओ २ क)

। प्रमाण तरङ्ग: ।

लोकवादाश्च तत्रोक्ता.............
आकाशाद्दैव तानाश्च........सौहृदात...........
पृथिव्यां प्रति लोके च लोकवादा इतीरिता : ।।3।।

ते च सर्व भूत डाकिन्याद्यार्ति शान्त्वर्थं लौकिकौषध मन्त्रादयो विषहरी मङ्गलचण्डिकागीतादयश्च । ते च प्रसिद्धा : लोकवादा यथा :

लक्ष्मीघरेण नौर्दत्ता यस्मान्मधुकराऽमिघा ।
तस्मान्मनोरमां नावं कृत्वा तत्र प्रपूजयेत् ।।
मृन्मयीं प्रतिमां कृत्वा देवताद्यै : समावृताम् ।
घट्टयित्वा विचित्राञ्च प्रजयेद् गीतनर्त्तनै : ।।4।।

। प्रमाण तरङ्ग ।

अनुवाद :

एतय लोकवाद (लोकाचार / रूढ़ि) क सम्बन्धमे कहल गेल अछि ...... मनुष्यकेँ सौख्य आ मोक्ष देनिहार देवतागण आ वैतालगण आकाशसँ पृथिवीपर उतरैत छथि - एहन लोक धारणा अछि ।। ३ ।।

ई सभ लोकवाद थिक - साप, भूत-प्रेत आ डाइनिक उपद्रव शान्त करबाक लौकिक विधि आ मन्त्र आदि, विषहरा, मंगल चण्डिका आदिक गीत । इहो सभ प्रसिद्ध लोकवाद थिक: लक्ष्मीघर एहि निमित्त मधुकरा नामक एक नाओ देलथिन । एक सुन्दर नाओ बनाय ओहिमे पूजा करी ।......... माटिक प्रतिमा बनाबी आ ओकर चारूकात देवता आदिक प्रतिमा स्थापित करी तथा प्रतिमा सभकेँ मनोरम रूपमे सजाबी.......।।४।।

क' कए आभिजात्य वर्गक बीच प्रतिष्ठा प्राप्त करबामे सफलता प्राप्त कयलक ।

पूर्वहि कहल गेल अछि जे महाभारतमे मनसा नामक कोनो देवीक उल्लेख नहि भटैछ तैं तदनुकूलहि हुनक कोनहु चरित्रक संग साक्षात्कारसँ कोनो लाभ नहि भ' सकैछ । महाभारतक दीर्घकालक पश्चात् परवर्त्ती कालमे उपपुराणादिक रचना भेल तखन अनार्य समाजसँ आयल ई देवी आर्य समाजमे कोना प्रवेश प्राप्त क' सकल । पूर्वोक्त भास्करमे कोनो प्रमाण नहि उपलब्ध होइछ, किन्तु अर्वाचीन पुराणादिमे एहि विषयक प्रमाण उपलब्ध होइत अछि । एहि पुराणादिमे मनसा-जन्मक विस्तृत कथा वर्णित अछि जाहिमे सर्प-देवीकेँ आभिजात्य वर्गमे कोनो दृष्टिएँ बदनाम नहि हो, ताहि कारणेँ नाग कुलक पिता काश्यपक संग सम्बन्धक कल्पना कयल गेल अछि, यथा :

पुरानागभयाक्रान्ता वभूर्वूमानवा भूवि ।
यान् यान् खादन्ति नागाश्चन ते जीवन्ति नारद : ।।
मन्त्रांश्च ससृजे भीत : कश्यपे ब्राह्मणार्यित : ।
वेदेवीजानुसारेण चोपदेशेन ब्राह्मण : ।
मन्त्राधिष्ठातृदेवी तां मनसा ससृजेतत : ।
तपसा मनसा तेन वभूव मनसा च सा ।

प्राचीन ओ मध्ययुगमे मिथिलामे शैव-धर्मक प्रभावक फलस्वरूप मनसा-पूजाक प्रचलन भेल जे मनसा शिवक कन्या छलीह, किन्तु संस्कृत उपपुराणादिमे महाभारतक प्रभावक फलस्वरूप मनसा नाग-पिता कश्यप कृतक सृष्टि कहि क' सर्वत्र उल्लेख कयल गेल अछि । एक उपपुराणमे कहल गेल अछि :

सा च कन्या भगवती कश्यपस्य च मानसी ।
ते नैव मनसा देवी मनसा या च दीव्यति ।।
मनसा ध्यायते या च परमात्मन्नीश्वरम् ।
तेन या मनसा देवी तेन योग्येन दीव्यति ।।
जगदेगौरीति विख्याता तेन सा पूजिता सती ।

लेबाक विचारलनि । वसन्त रोगसँ ग्रसित भ' समस्त नगरवासीक प्राणान्त होमय लागल, किन्तु शिव-विभूतिक स्पर्श होइतहि पुन: जीवन लाभ करय लालग । एकर परिणाम भेल जे अस्मवरुक सकल मनोरथ व्यर्थ भ' गेलनि आ घुरि क' वापस चल गेलीह । एक बेर पुन: पुजारीगण जखन शिवार्चनाक हेतु पुष्प चयन करबाक हेतु हुनक नगरमे अयलाह तखन ओ सभकेँ बन्दी बना लेलनि आ प्रतिहिंसासँ निवृत्त भेलीह ।

उपर्युक्त सन्दर्भमे ई एक विचारणीय प्रश्न अछि । एहि सन्दर्भमे एक बातकेँ विशेष रूपसँ मनमे राखब उचित हैत जे दाक्षिणात्यक कोनो सामाजिक आचार किंवा ओहि ठामक भाषाक कोनो शब्द मिथिलांचलक सामाजिक जीवनक आचार किंवा मैथिली भाषा आ साहित्यमे प्रचलित अछि से देखि क' जे दाक्षिणात्यसँ परवर्त्ती कालमे एतय आयल एहन धारणा करब समीचीन नहि हैत । कारण, द्राविड़ संस्कारकेँ सेहो निजत्त्व प्राचीनता छैक । मैथिली भाषा आ साहित्यमे द्राविड़ शब्द प्रचलित अछि, यथा *पूजा, पुष्प* आदि । अतएव क्यो जँ अनुमान करथि जे पुष्प द्वारा देवार्चना करबाक परम्परा परवर्त्ती कालमे द्रविड़ प्रदेशसँ एतय आयल हो, से नितान्त हास्यस्पद प्रतीत होइछ। अतएव मैथिली भाषा आ साहित्यमे प्रचलित द्राविड़ शब्द समूह अपेक्षाकृत आधुनिक कालमे दाक्षिणात्यक कोनो अंचलसँ एतय आयल हो इहो अनुमान करबा समीचीन नहि हैत । विशेषत: ई कहल जा सकैछ जे कर्णाट राजा लोकनिक संगहि दाक्षिणात्यक अनेक लौकिक संस्कार एतय आयल तकरो पूर्ण रूपेण समर्थन नहि कयल जा सकैछ । कारण पूर्वहि कर्णाट राजा लोकनि ब्राह्मण धर्मावलम्बी रहथि । हुनका सभकेँ दाक्षिणात्यक लौकिक संस्कार सभक संग परिचय रखबाक कोनो कारण नहि, किंवा से रहितहुँ हुनका सभक संगहि जे संस्कार समूह छलनि तकरा एतय आनि क' प्रतिष्ठित करबाक हेतु उत्सुक रहथि से बात कोनो स्थितिमे स्वीकार नहि कयल जा सकैछ। ओ सभ ब्राह्मण संस्कारक पृष्ठपोषक रहथि । कर्णाट राजा लोकनिक समयमे मिथिलांचलक समाज नूतन आर्य-संस्कारक दीक्षा ग्रहण कयलक । अतएव कर्णाट राजा लोकनिक संगहि-संग मिथिलाक लौकिक देव-देवी समूह दाक्षिणात्यसँ एतय आयल होथि से समर्थन योग्य नहि । अतएव मनसाक कथाक

(फोल्ड्इओ २ ख)

देवताद्यैरित्यत्रादिशब्दात् सिद्धनागकिन्नरगन्धर्वयक्षराक्षसादीनामपि परिग्रहस्तेषां पूज्यता चोक्ता ।

अधमा विंशहस्ता नौश्चत्वारिंशच्च मध्यमा ।
उत्तमा षष्टिहस्ता च शतहस्तोत्तमोत्तमा ।।
चतुर्दशकरान्न्यूना नौका परिकीर्तिना ।
सन्निधौ भूतनाथस्य विपुलायार्श्च नर्तने ।।
ये ये समागता द्रष्टुंतांस्तत्थाने प्रपूजयेत् ।
ब्रह्माणं माधवं रुद्रं वाणीं लक्ष्मीञ्च पार्वतीम् ।।
कार्तिकेयं गणेशञ्च कालीयं पन्नगाष्टम् ।। ५ ।।

अनुवाद:

एतय **देवताद्यैरित्यत्रादि** द्वारा कहल गेल अछि जे सिद्ध, नाग, किन्नर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदिक ग्रहण जानू, आर एहिसँ इहो सूचित होइत अछि जे हुनको लोकनिक पूजा कयल जाय ।

बीस हाथक नाओ अधम थिक, चालीस हाथक मध्यम आ साठि हाथक उत्तम आ एक सय हाथक अति उत्तम । नाओ कमसँ-कम चौदह हाथ दीर्घ हैबाक चाही । भूतनाथ आ विपुलाक समक्ष नाचमे चौदह गोट परम-भव्य दीप बारी । पूजा देखय जे-जे आबथि तनिक सत्कार क' कए पूजन करी । ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, कार्तिकेय, गणेश, कालिय, आष्टनाग ।। ५ ।।

(फोल्ड्इओ ९ ख)

पूरकं कुम्भकं कृत्वा रेचकञ्च समाहित: ।
कृत्वोङ्कारेण दोषायांस्तु हन्यात् कायादिसम्भवान् ।।२८।।
आदिपादेन वाङ्मनसोरूपादानं ।
वायव्याग्नेयमाहेन्द्रवारुणीभिर्यथा क्रमं ।
किल्विषं धारणामिश्च हन्यात् शुद्धर्थमात्मन: ।
शोषणे दहने स्तम्भे प्लावने च यथाक्रमं ।
वाय्वग्नद्रीयजलाख्यामिधरिणाभि: कृते सति ।
ध्यायेद्धिशुद्धमात्मनं प्रणवेणार्कवत्स्थितं ।
देहं तेनैव सञ्चित्य पञ्चभूतभयं परम् ।। २९ ।।
तेनैव प्रणवेन । सञ्चित्य संघट्टय ।
स्थूलं सूक्ष्मं तथाङ्कनिस्वस्थानेषुप्रकल्पयेत् ।। ३० ।।

अनुवाद:

पहिने शरीरकेँ शुद्ध करी तखन यज्ञ । यत्नपूर्वक पहिने कुम्भक नामक प्राणायाम करी, तखन रेचक, आ तकरा बाद ओंकार मन्त्रसँ शरीर आदिक विकारकेँ दूर करी । ।। २८ ।।

एतय **आदि** शब्दसँ वचन आ मन अभिप्रेत अछि ।

तदुपरान्त आत्माक शुद्धिक हेतु शोषण, दहन, स्तम्भन आर प्लावन एहि चारि क्रियामे क्रमश: वायु, अग्नि, इन्द्र आ वरुणक धारणा द्वारा कल्मष (मल आ पाप) केँ दूर करी (अर्थात् पापकेँ वायु सोखलनि, अग्नि जरओलनि, इन्द्र दबओलनि आ वरुण धोलनि एहन भावना करी) ।। २९ ।।

ओंकारक उच्चारण क' ध्यान करी जे आत्मा शुद्ध भ' सूर्य-जकाँ धर्मक रहल अछि । एहिना पञ्चतत्त्वमय देहकेँ सेहो शुद्ध करी ।

तेनैवक अर्थ थिक ओंकारहिसँ ।

स्थूल, सूक्षम आ मध्य एहि तीन प्रकारक शरीरक कल्पना करी। ।।३०।।

अस्मवरु :

अस्मवरुक कथा एहि प्रकारेँ अछि । अस्मवरु एक ग्राम-देवी छथि जे ब्रह्मा, विष्णु आ शिव प्रसूत भ' कए जन्म ग्रहण कयलनि । एहि तीन देवीक बासक निमित्त तीन पुरीक निर्माण क' देलनि आ कहि देलनि जे हुनका छोड़ि क' अन्य ककरो पूजा करबाक निषेध क' देलनि । अस्मवरुकेँ जखन एहि विषयक जानकारी भेलनि तखन ओ ओकरा अमान्य घोषित क' कए अपनाकेँ देवताक रूपमे पूजाक प्रवर्त्तन कयलनि । देवीकेँ जखन एहि विषयक जानकारी भेलनि तखन ओ क्रुद्ध भ' कए ओहि तीनू पुरीकेँ ध्वंस करबाक संकल्प कयलनि । श्रृगालक आरोहरणक विचार क' कए सर्प-रूप यज्ञ-सूत्र धारण क' कए देवी शिवपुरी दिस अग्रसर भेलीह । एक द्वादश मस्तकक विराट काय सर्प शिवपुरीक द्वारक रक्षा क' रहल छल । किन्तु कोनो कारणेँ देवीकेँ ओकरापर क्रोध नहि भेलनि । ओ पुरीक बीचमे प्रवेश क' कए, एक-एक क' कए शिव, विष्णु आ ब्रह्मा तीनू जनक वध क' देलनि आ पश्चात् जा क' पुन: जीव दान द' कए हुनका सभक पूजन करबाक आदेश द' कए वापस आबि गेलीह । एहि बेर अस्मवरुक दृष्टि पड़लनि जे हुनक एक भक्त एक राजा शिवार्चना आरम्भ कयलनि । ओ हुनका मनमे भय उत्पन्न क' देलनि। ओ जरतीर वेश धारण क' कए कान्हपर फलक एक पथिया ल' कए राज प्रासादक सम्मुख उपस्थित भेलाह । किन्तु द्वारिगण हुनकापर प्रहार क' कए भगा देलकनि। एहि बेर देवी एक लिंगायतक छद्म वेश धारण क' कए नगर बीचमे अनयासे प्रवेश पाबि गेलीह । तत्पश्चात् ओ एक तोता रूप धारण क' कए एक स्तम्भपर बैसि गेलीह। पुजारी लोकनि शिव-अर्चना करबाक लेल गेलाह जनिक पूजन सामग्री अकस्मात् खसि पड़लनि । एहि घटनाकेँ अमङ्गलकारी जानि क' चारूदिशामे दूत प्रेषित कयल गेल । तोतावेशिनी अस्मवरु शिवक समीप उपस्थित कयल गेलीह । शिव ओकर निर्मम भावसँ हत्या करबाक आदेश देलनि । किन्तु घातक लोकनिक सकल चेष्टा व्यर्थ भ' गेल । अस्मवरु अपन यथार्थ स्वरूप उद्घाटित क' कए नगरवासीकेँ पूजनक आदेश देलनि । ओ सभ स्त्री-देवताक पूजन करब अस्वीकार क' देलक । देवी एकर प्रतिशोध

शिवशिष्या च या देवी तेन शैवी प्रकीर्तिता ।।

एहि प्रकारेँ मनसाक जन्मोपरान्त ओ वेदादिक अध्ययनार्थ कैलाश पर्वतपर भगवान शंकरक समीप गेलीह आ ओतय सहस्त्रवर्ष धरि कठोर तपस्या द्वारा चन्द्रधरकेँ सन्तुष्ट क' कए हुनका लग रहि क' महाज्ञान प्राप्त कयलनि। साम वेदक पाठ कयलनि तथा कृष्ण मन्त्रक दीक्षा पौलनि तत्पश्चात् हुनक आदेश पाबि पुष्कर तीर्थमे तपस्या द्वारा कृष्णकेँ सन्तुष्ट कयलनि :

त्रियुगञ्च तपस्तुप्तु कृष्णस्य परमात्मन : ।
सिद्धा रभुवसा देवी ददर्श पूरत : प्रभुम ।।

एहि प्रकारेँ सिद्धि प्राप्त कयलाक पश्चात् कृष्ण ओ शंकर दुनू मिलि क' मनसाकेँ पूजन कयलनि :

प्रथमे पूजिता या च कृष्णेण परमात्मना: ।
द्वितीये शङ्करेणैव कश्यपेन पुरेण च ।।
मनुना मुनिना चैव नागेन मानवादिना ।
वभूव पूजिता सा च त्रिषुलोकेषुसुव्रता ।

एहि प्रकारेँ मनसा देवी त्रिलोकमे पूजित भेलीह । तत्पश्चात् कश्यप जरत्कारु मुनिक संग हुनक विवाह करौलनि :

जरत्कारु मुनीन्द्राय कश्यपस्तां ददौ पूरा ।
अयाचि मुनिश्रेष्ठा जग्राह ब्राह्मणज्ञया ।।

एतय मनसाक लौकिक कथाक संगहि संग महाभारतोक्त वासुकिक भगिनी जरत्कारुक कथाकेँ मुनिक संगहि एकत्र मिश्रित क' कए देखाओल गेल अछि। मनसाक प्रणामक प्रचलित मन्त्रमे जरत्कारु ओ मनसाकेँ एक क' कए दर्शाओल गेल अछि :

जरत्कारु मूने : पत्नी भागिनी वासुकिरपि ।

पूजामे शारीरिक शुद्धिक हेतु पहिने भूत शुद्धिक विधि कहल जाइत अछि । **भविष्य पुराण** मे कहल गेल अछि :

(फोल्डइओ ३ क)

जरत्कारुमास्तिकञ्च मर्त्यं चन्द्रधरं तथा ।
स्वर्णरेखाञ्च तत्पत्नीं पुत्रं लक्ष्मीधरं तथा ।
तत्पत्नीं विपुलाञ्चापि श्रीधराख्यं द्विजं तथा ।
यशोधरञ्च दैवज्ञं कर्णधारञ्च दुर्लभम् ।

अग्रे गणेशं नौकाया : पत्तीनष्टौ मनोहरान् ।
भाण्डारिणश्चास्य धरान् मध्येऽग्रे मूलके तथा ।
नेत्राख्या रजकीञ्चैव सुगन्धाञ्च तथापराम् ।
सुरेश्वरीं तथा दुर्गां देवीं दिक्षु समन्तत : ।
इन्द्रादि लोकपालांश्च सायुघांश्च सस्ववाहनान् ।

अनुवाद :

जरत्कारु, आस्तिक, मर्त्य, चन्द्रधर, हुनक स्त्री स्वर्णरेखा, हुनक पुत्र लक्ष्मीधर तथा हुनक स्त्री विपुला, श्रीधर नामक ब्राह्मण, यशोधर नामक ज्योतिषी, दुर्लभ नामक नाविक, आगाँमे गणेश, आठ लोकपाल, मध्यमे भण्डारी आ अस्त्रधारी, छोर पर आ आदिमे नेत्रा नामक धोबिन, सुगंधा नामक धोबिन, सुरेश्वरी, दुर्गा आ नाना देवीगण तथा चारूकात आयुघ ओ वाहन सहित इन्द्र आदि लोकपाल ।

आस्तिकस्य : मुनिर्माता मनसादेवी नमोस्तुते ।।

उपपुराणासिमे मनसाक जे वृत्तान्त उपलब्ध अछि ओहिमे महाभारतोक्त जरत्कारु एहि प्रकारेँ अभिन्न देखल जाइछ ।

मनसाक संगहि महाभारतोक्त जरत्कारुक सम्पर्क स्थापित हैब कहल गेल अछि जे मिथिलांचलमे प्रचलित कथाक माध्यमे महाभारतक आदि-पर्वक अन्तर्गत समस्त नाग कथा संक्षिप्त रूपेँ निश्चित स्थान प्राप्त कयलक अवश्य, किन्तु कोनो दिन मूल कथाक अंग नहि बनि सकल ।

मनसा-कथा :

नागरानी मनसाक कथाक अत्यन्त जटिल आ दुरूह थिक । धर्म-सम्प्रदायसँ सम्बद्ध सृष्टिक उत्पत्तिक आख्यानसँ एकर कथानक अत्यन्त क्षीण अछि । केतका मनसाक पर्याय आ मनसा शिवक कामेच्छासँ ओकर उत्पत्तिक संकेत भेटैछ । मूल रूपेँ मनसा एक व्यभिचारिणी देवी रहल होयतीह । शिवक संग हुनक व्यभिचारक कथाक संकेत बाङ्गला साहित्यान्तर्गत भेटैछ । एकरा अन्तर्गत बिहुला विषहरीक कथाक सेहो सर्वाधिक महत्त्वपूर्व आख्यानक संकेत भेटैत अछि ।

मनसा-कथाक विभिन्न आख्यान आ पौराणिकी सभमे समर्थन कयल गेल अछि:

१. देवी जन्म, चण्डीक संग संसर्ग आ समझौता तथा जरत्कारुक संग विवाह ।
२. मनसा द्वारा उपासकक अन्वेषण चरवाह मुसलमान आ पुन: मलाह द्वारा दाप-चाप ।
३. अन्तत: चाँदो द्वारा ओकर देवत्त्वक परिचय । कथाक अन्तिम भागमे बिहुलाक लोकप्रिय आख्यान जकर, स्वरूप अंशत: लोककथा आ अंशत: प्राचीन पुराणक कथाक आधारपर निर्मित भेल अछि ।

कमल पत्रपर शिवक स्खलित वीर्यसँ मनसाक जन्म भेलनि तेँ हिनक नाम पद्मा वा

सुरसा देवीक साधक लोकनि दुर्गापूजनक समानहि हिनक प्रतिमाक निर्माण क' कए कलश स्थापना क' कए हिनक पूजन करैत अछि तकरा पाछाँ पूजक लोकनिक उद्देश्य रहैछ जे मृत्यूपरान्त ओ स्वर्ग प्राप्त करैत छथि तथा हुनक पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र सभ नीरोग रहि लक्ष्मीवान् बनैत हुनका सभकेँ डाकिनी वा सर्पक भय नहि रहैछ ।

व्याडीभक्तितरङ्गिणी मे चाँद सौदागरक पत्नी सनकाक उल्लेख भेल अछि जकर मूल संस्कृत शब्द थिक स्वर्ण रेखा । भाषा-विज्ञानक नियमानुसार ध्वनिगत परिवर्त्तनक स्वाभाविक नियमानुसारी सर्वसाधारण लोकक मुखसँ सनका वा मुनकाक रूप धारण कयलक अछि, किन्तु एहिमे अन्यत्र कतहु मनसाक उल्लेख नहि भेल अछि जे एकर प्राचीनतत्त्वक विशेष निदर्शन करैत अछि । अतएव मनसा-पूजनक पद्धतिक दृष्टिसँ प्रतिपाद्य ई मूल्यवान थिक ।

किछु विद्वानक मत छनि जे चाँद सौदागर दाणिणात्य कोनो स्थानक अधिवासी रहथि । अतएव हुनका लोकनि अनुसारेँ लखिन्दर आ बिहुला दक्षिणसँ मिथिला आयल रहथि । एहि मतवादकेँ जँ गम्भीर रूपेँ अनुसरण कयल जाय तँ दक्षिणक समुद्र योग अत्यन्त निविड़ अछि । तेलुगू भाषामे सिजमानसकेँ चेमड़क नामे अभिहित कयल जाइछ। सीज मनसा गाछक नीचाँ मनसा देवीक पूजनक प्रचलन अछि । बंगालमे प्रचलित मनसा-मङ्गल-कथान्तर्गत चाँद सौदागरकेँ ताच्छित्य कहि क' प्रकाशित क' कए चेमूड़ी कहि क' उल्लेख कयल गेल अछि । किन्तु बाङलामे चेमूड़ी शब्दक कोनो अर्थ नहि होइछ। एहि आधारपर अनुमान कयल जाइछ जे तेलुगूसँ एहि कथाकेँ आनल गेल अछि संगहि-संग मनसाक समस्त कथा ओतहिसँ आयल अछि । दाक्षिणात्यक आधुनिक लोक-साहित्यमे प्राय: मनसाक अनुरूप एक कथा प्रचलित अछि । ओकरा शिव सहित अस्मवरु नामक एक लौकिक देवीक विवादक कथा प्रचलित अछि । एहि कथाक संग मिथिलाक मनसाकेँ कोनो सम्पर्क छैक वा नहि तकर सत्यताक परीक्षण अनिवार्य भ' जाइछ ।

(फोल्इओ ३ ख)

पूजाहोमादिकं कुर्याद् युग्म दिवसं द्विजै: ।
यथाकामं यथाशक्ति बलिदानं विधानत: ।
नीराजनञ्च कर्त्तव्यं तौर्य्यभकपुर: सरम् ।
नद्याञ्च स्थापयेद्देवीमुड़पे चोत्तमे तत: ।
दक्षिणां विधिवद्दत्त्वा गीतवाद्यै: समापयेत ।
दर्शनाच्च विचित्राया वाग्दृष्टि हरणं भवेत् ।
नौर्वेनाम्ना च गौहारी विख्याता सा महीतले ।
योऽर्च्चयेत् सुरसां देवीं व्रतस्थो भक्तिभावत: ।
इहेष्टकामान् संप्राप्य देहान्ते स्वर्गमुत्तमम् ।
पुत्रपौत्र प्रपौत्रान्तं लक्ष्मीनैरज्यभाग् भवेत ।

अनुवाद :

हिनका सभक पूजा, होम आदिक पश्चात् द्विजगणकेँ अर्चना क' कए आर अयुग्म (तेसर, पाँचम आदि) दिनमे यथाशक्ति वासना आ शक्तिक कामनाक अनुसार यथाशक्ति विधान पूर्वक बलिदानक पश्चात् वाद्य वृन्दक संग आरती करी । तदुत्तर देवीकेँ उत्तम नाओपर स्थापित करी । तखन विधान-पूर्वक दक्षिणा प्रदान क' कए गीत वाद्यक संग पूजाक समापन करी । विचित्राक दर्शनसँ बोल ओ आँखिक हरण भ' जाइत अछि । पूजाक ई नाओ **गोहारी** नामसँ प्रसिद्ध अछि । जे क्यो एहि सुरसा देवीकेँ भक्तिक संगहि संयत भ' कए पूजा करताह से एहि जन्ममे सभ कामनाक पूर्त्ति पाबि मुइलापर उत्तम स्वर्ग पौताह । ओ पुत्र, पौत्र आ प्रपौत्र पाबि धनवान ओ निरोग होयताह ।

(फोल्इओ ९क)

अत्र फलजनकपूर्वैक्यात् कर्मणोऽपैक्यं अन्यथा संकल्प: । वाहनविसर्जनदक्षिणा भेद: स्यात् । ततश्च श्वो यियक्षुणाधिवासिदिने इङ्गधिकारायतद्बीजभूतकाम्यप्रधानाधिकारसम्पादक: पुष्पतिल जलत्याग सहितकामाभिलाषपूर्वक: प्रधान: सङ्कल्प: कार्य इति द्वैतनिर्णयम्।
भङ्गारस्नानादिमन्त्रास्तु लौकिक एव। श्रृङ्गार स्वर्णकर्करी।
भद्रकुम्भ पूर्णकुम्भ भृङ्गार: कनकालूका ।
..... कर्कयालूर्गलन्ति केत्परं ।।२७।।
इत्यमर: । पूजायां कार्याशुद्धर्यं प्रथमतो भूत शुद्धिप्रकारमाह ।
भविष्य पुराणं:
गत्वायायतनं शुद्धं अर्कं शुद्धंतनुर्यजेत ।

अनुवाद :

एतय यद्यपि अधिवास, आवाह्न आदि कर्म फूट-फूट थिक, तथापि सभक फल देनिहार पुण्य एक अछि, अत: ई सभ कर्मो एक मानल जायत । जँ से नहि तँ संकल्प, आवाहन, विसर्जन सभक दक्षिणा फूट-फूट होइत अछि । अत: अगिला दिन अनुष्ठान कयनिहार व्यक्ति अधिवास-दिन ओहि कर्मक पात्रता प्राप्त करबाक हेतु तिल आ जलक त्याग करैत कामनाक उल्लेख पूर्वक प्रधान संकल्प करथि, जाहिसँ ओहि कर्मक मूल उद्देश्य स्वरूप मुख्य कामना विषयक अधिकार प्राप्त होयतनि, ई बात **द्वैतनिर्णयमे** कहल गेल अछि ।

भृंगास्नान आदि कर्मक मन्त्र लौकिक होइत अछि ओकर शास्त्रमे उल्लेख नहि अछि । भृंगार थिक स्वर्ण कलश । देखू **अमर कोश** :

भद्र कुम्भ, पूर्ण कुम्भ, श्रृंगार, कनकालुका, कर्करी, आलू, गलन्तिका - ई सभ स्वर्ण कलशक नाम थिक । ।।२७।।

भेटैछ। एहिसँ अतिरिक्त देवीक रूपमे सुगन्धाक चर्चा अवश्य भेल अछि। पूर्व बंगालमे कोनो-कोनो स्थानपर मनसा देवीकेँ नामे सेहो अभिहित करबाक परम्परा अनुवर्त्तमान अछि। अन्यत्र एहि देवीकेँ राधेश्वरी नामे सेहो उद्घोषित कयल जाइछ।

मनसा देवीक मूर्ति निर्माणमे पटुआक संगहि-संग खढ़-पातक प्रयोग कयल जाइछ। यथार्थत: मूर्ति सभक आकार प्रकार विभिन्न रूपेँ, विचित्र रूपेँ निर्माण करबाक परम्परा अछि। मूर्ति निर्माणक एहि कलाकेँ *विचित्रा* कहबाक परम्परा चल आबि रहल अछि। उत्तर बंगाल आ विशेषत: आसामक गोआलपाड़ा जिलान्तर्गत विचित्रत रूपेँ मूर्ति निर्माण करबाक परम्परा अद्यापि वर्त्तमान अछि। एतय विचित्रा शब्दक प्रयोग अर्थात् विचित्र व्यञ्जनी आकारक मूर्ति निर्माण करबाक पाछाँ विस्तृत सर्पक प्रतीक थिक। एहि प्रसंगमे विद्यापति प्रतिपाद्य ग्रन्थानार्गत चर्चा कयलनि अछि:

दर्शनाञ्च विचित्राया वाग्दृष्टिहरणं भवेत्।
नौर्वैनाम्ना च गोहारी विख्याता सा महीतले।
(फोल्इओ 3 ख)

विद्यापति एहि कृतिमे *घटयित्वा विचित्राञ्च (फोल्इओ 2 क)* चर्चा कयलनि अछि जाहिसँ आभास भेटैछ जे तत्कालीन मिथिलांचलमे मनोरम सदृश साजि क' लाठी, भाला, गराँस, तरुआरि आदि विभिन्न अस्त्रसँ सुसज्जित भ' कए तथा ओकर प्रदर्शन क' कए समारोह पुरस्सर विचित्र रुपेँ एहि पूजनक अवसरपर कयल जाइछ।

मिथिलाक समानहि बंगालमे मनसाकेँ *सुरसा* नामसँ सेहो अभिहित करबाक परम्परा चल आबि रहल अछि। विद्यापति *गौडमैथिलकृत्यादि* एक श्लोक एहि ग्रन्थान्तर्गत उद्धृत कयलनि अछि:

प्रतिमायाञ्च चित्रे वा मण्डले वा घटेऽपि वा।
प्रपूयेत् सुरसां देवीं दुर्गाविद भुवि साधकाः।।
(फोल्इओ5क)

पद्मावती पड़ल जनिक भरण-पोषणक दायित्त्वक निर्वाह नागराज वासुकि माय द्वारा भेलनि। सर्व प्रथम हिनक पूजक लोकनि कुशल शिल्पी रहथि। नाग लोकनि अपन रानीक रूपमे उद्घोषित कयलनि आ हुनका सभक विष-भण्डार हुनके अधीनमे छलनि। मनसाक जल-क्रीड़ा काल अकस्मात् शिवक नजरि हुनकापर पड़लनि आ बिनु बुझनहि जे ओ हमर बेटी थिकीह ओ प्रेम-निवेदन क' देलथिन। शिव अपन परिचय द' कए हुनका अपन घर चलबाक निवेदन क' देलथिन। यद्यपि शिव हुनका घर ल' जयबाक हेतु प्रस्तुत नहि रहथि, कारण ओ जनैत रहथि जे ई बात हुनक पत्नीकेँ अनसोहाँत लगतनि तथापि ओ हुनक अनुनयक विरोध नहि क' पौलनि आ गोपनीय ढंगे हुनका अपन घर ल' अनलथिन। किन्तु चण्डीकेँ एहि विषयक जानकारी भेलनि तखन ओ लगले हुनका अपन सौतिन जानि हुनका संग सौतिनिया डाह आ झगड़ा करब प्रारम्भ कयलनि। एहि झगड़ाक अत्यन्त दुखद परिणाम भेल जे मनसा अपन एक आँख गमा देलनि। शिव मनसाकेँ घरसँ निष्कासित कयलनि तत्पश्चात् गृह-कलह शान्त भेल। शिव मनसाक संग एक दीर्घ यात्रापर बहार भ' कए एक अरण्यमे पहुँचलाह। अरण्यक बीचमे एक पहाड़ी छलैक जकरा चोटीपर एक सघन वृक्षक छाया छलैक। ओतय ओ सभ विश्रामार्थ बिलमलाह। एही बीचमे मनसाकेँ नीन आबि गेलनि। शिव एहि अवसरक लाभ उठा क' ओतयसँ घसकि गेलाह। असहाय कन्याकेँ छोड़ि क' बिदा होयबाक काल करुणार्द भ' हुनक आँखसँ एक बिन्दु नोर खसि पड़लनि, जकर परिणाम भेल जे *नेता* वा *नेत्रवतीक* उत्पत्ति भेलनि जे मनसाक सलाहकार बनलीह। फेर ओ अपन स्वेद कणसँ घमाइक निर्माण कयलनि जे दुनूक संरक्षक पुरुष भेलाह। एहि प्रकारेँ शिव अपन अन्तरात्माक सन्तोषार्थ क' कए घर वापस आबि गेलाह।

देव समाजमे एक समस्या उत्पन्न भ' गेल। यथासमय दूध नहि भेटलाक कारणेँ देवगण कपिलाक नवजात बाछा बालुका सागरक सब जल पीबि गेल जकर फलस्वरूप देव समाजमेँ जल-संकट उत्पन्न भ' गेल। देवगण शिवक परामर्शपर कपिलाकेँ पनहौलनि आ समुद्र दूधसँ भरि गेल। किन्तु एतवहिसँ समस्याक समाधान नहि भेलैक। सागरपर उड़ैत एक सुग्गा नेतरिक फड़ खसा देलकैक, जे ओ एक ऋषिक हेतु नेने जाइत छल। ओ

नामक पहिल अक्षर सभ देवताक बीज कहबैत अछि।।। २५।।

ओना **तन्त्र** मे कहल गेल अछि:

ओंकार तथा विन्दुक मध्य स्थित नामक पहिल अक्षर बीज थिक जे पूजा मे ऋद्धि आ सिद्धि दैत अछि।।। २६।।

(फोल्इओ ४ क)

डाकिन्यादिभयं नास्ति न च सर्पभयं तथा।

गौडमैथिलकृत सारे च -

सुरसां प्रपूयेत यस्तु कालीयाद्यष्टपन्नगैः।
भुक्ता तु विविधान् भोगानन्ते स्वर्गे प्रमोदते।
क्वचिन्नैव तु सर्पस्य भयं प्रापनोति सोर्चकः।। ६।।
तस्माद्वित्तार्द्विनैरुज्यपुत्रपौत्रप्रपौत्रकम्।
तेन सर्पापाच्छायान्ति पुत्रपौत्र प्रपौत्रावधिवित्त नैरुज्याप्तिः

अनुवाद:

हुनका ने डाइन आदिक भय रहतनि, ने सर्पक।

गौड़मैथिलकृत्यसार मे कहल गेल अछि:

जे कालिय आदि आठ नागक संग सुरसाक पूजा करताह से एहि संसार मे विविध सुख भोगि अन्तमे स्वर्ग पओताह। जे ई पूजा करताह तनिका कहियो सर्प-भय नहि रहतनि। ओ धन-धान्य, आरोग्य आ पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र पओलाह।।६।।

एही संकल्प वाक्यमे सभ विपत्तिक शान्ति, पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र पर्यन्त धन-सम्पत्ति आ आरोग्यक प्राप्ति,

तेतरिक फड़ एतेक बेसी अम्मत छलैक जे बालका सागरक दूध दहीमे परिवर्त्तित भ' गेल। देवता लोकनि पुन: असमञ्जसक स्थितिमे आबि गेलाह । दही दूधमे कोना परिवर्त्तित हैत, एहि हेतु हुनका लोकनिकेँ समुद्र-मन्थनक अतिरिक्त आन कोनो उपाय नहि छलनि ।

पौराणिक आख्यानानुरूपमे जे श्रेष्ठ वस्तु सभ बहरायल तकरा विष्णु, इन्द्र आ अन्य देवता लोकनि परस्पर आपसमे बँटबारा कयलनि । जखन शिव आ असुर लोकनि प्रत्यागत भेलाह तखन हुनका सभक हेतु किछु नहि बचलनि । पुन: समुद्र-मन्थन प्रारम्भ भेल जाहिसँ विष बहरायल । विष बहरैलासँ विश्व-विनाशक आशंका उत्पन्न भ' गेलैक । देवतागण शिवसँ विषपान करबाक अनुरोध क' कए सृष्टिक रक्षाक अनुनय कयलथिन । शिव विषपान कयलनि आ मूर्च्छित भ' कए खसि पड़लाह । अचेतनावस्थामे आयल शिवकेँ प्राण प्रदान करबाक निमित्त मनसा बजाओल गेलीह । ओ आबि क' शिवकेँ पुनर्जीवित कयलनि आ पुरस्कार स्वरूप हुनका देव-सभामे स्थान भेटलनि । किन्तु देवी बनबाक निमित्त विवाह अनिवार्य छल । तेँ हुनक विवाह जरत्कारु ऋषिक संग कयल गेलनि जे हुनकासँ भयभीत भ' कए किछुए दिनमे ओ परित्याग क' पड़ा गेलाह । एही बीचमे हुनका एक पुत्र भेलनि जनिक नाम पड़ल आस्तिक । ओ जनमेजयकेँ नागयज्ञ सम्पन्न करबासँ रोकलनि । ई कथा महाभारताश्रित अछि वा पौराणिक एहि अंशक अन्त एतहि भ' जाइत अछि ।

देवता लोकनिक देवत्त्व मानव द्वारा सुनिश्चित कयल जाइत अछि । कोनो देवताकेँ ता धरि देवत्त्व नहि प्राप्त होइत छनि जा धरि मानव द्वारा हुनक पूजन-अर्चन नहि कयल जाइछ। एहि निमित्त मनसा मानव उपासकक अन्वेषणक हेतु आतुर भ' गेलीह ।

एक दिन मनसा अपन सखी नेत्रवती वा नेताक संग वृद्धा ब्राह्मणीक भेषमे पृथ्वीपर अवतरित भेलीह आ पशुक हेँजकेँ चरबैत चरवाहक बीच पहुँचि गेलीह आ अपन पूजा करबाक हेतु कहलथिन । हुनक स्वरूप देखितहि चरवाह सभ डेरा गेल आ हुनका डाइन योगिन बुझि ढ़ेपा - चेपा फेकय लागल । एहि घटनापर क्रोधित भ' मनसा ओकरा सभकेँ

नेत्राख्यां रजकीञ्चैव सुगन्धाञ्च तथा पराम् ।
सुरेश्वरीं तथा दुर्गा देवीं दिक्षु समन्ततः ।
इन्द्रादिलोकपालांश्च साधुधान सस्ववाहनान् ।
(फोल्इओ ३क)

लक्ष्मीधर अर्थात् लखिन्दरकेँ देवता लोकनि मधुकर नामक सुन्दर नाओक निर्माण क' कए देलथिन, जाहि उपलक्षमे हुनका ओकर पूजा करय पड़लनि तथा एहि पूजनोत्सवमे ओकरे व्यवहार करय पड़लनि । समस्त देवतादि परिवृत मृन्मयी प्रतिभा बना क' ओकरा विचित्र रूप देलथिन जनिक पूजन-नृत्यक संगहि-संग गीत गायनक संग प्रारम्भ भेलैक । पूजा स्थलपर जहिना देवलोकमे महादेवक समक्ष बिहुला नृत्य क' कए आयल रहथि तहिना नृत्यक आयोजन कयल जाइछ । ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, कार्तिक, गणेश, काली, अष्टनाग, जरत्कारुक पुत्र आस्तिक, (मृत्यु लोकमे) चन्द्रधर अर्थात् चाँदो, हुनक पत्नी बिहुला, ब्राह्मण श्रीधर, दैवज्ञ यशोधर, कर्णधार दुर्लभ, नाओक आगाँ गणेश, बीचमे अष्टमनोहर मलाह एवं अस्त्रधारी भण्डारीक प्रहरीगण नाओक बीचमे, आगाँ आ पाछाँ रहैछ । एहिसँ अतिरिक्त अन्यान्य मूर्तिक निर्माण करय पड़ैछ जाहिमे रेजकी (नेता), सुगन्धा, सुरेश्वरी (गंगा), दुर्गादेवी एवं हुनक चारूभाग अपन-अपन आयुधक संग इन्द्रादि लोकपालक मूर्तिक स्थापना कयल जाइछ ।

विद्यापति एहि कृतिमे पौराणिक आ लौकिक परिवेशमे प्रचलित कथादिक चर्चा कयलनि अछि जाहि आधारपर कल्पना कयल जा सकैछ जे एकर प्रचलन मिथिलांचलमे अनादि कालहिसँ होइत आबि रहल अछि जकर व्यापक प्रचार-प्रसार बंगालमे भेलैक । विद्यापति एहि कथान्तर्गत सर्प-पूजन पद्धतिमे मनसा वा विषहरीक जाहि नाम सभक उल्लेख कयलनि अछि ओ सभ प्राय: मिथिलांचलमे अद्यापि प्रचलित अछि । एहिमे अतिरिक्त दैवज्ञ रूपमे यशोधरक चर्चा अवश्य भेल अछि । मिथिलांचलक परम्परानुसार भद्रलोकक नामक अन्तमे *धर* शब्द बहुप्रचलित प्रयोग होइछ । एहि कारणेँ एहिमे लक्ष्मीधर, चन्द्रधर एवं यशोधरक उल्लेख भेटैछ । चाँदोक स्त्रीक नामक उल्लेख नहि

(फोल्इओ ४ ख)

सर्पभयं प्राप्य भाव: (?) ऐहिकविविधभोगप्राप्तिपूर्वकस्वर्गावस्थितत्वकामो मनसा देवी प्रीतिरित्यभिलाष: ।
अथ रयहानि: ।

दर्शनापायते यस्यारयहानिस्तु अखिलां ।
रयहानिरिति प्रोक्ता प्रतिमा भव्यदायिनी ।।७।।
शुद्धिदीपिकायां ।
मृगलघु वर्णे वारुणे विष्ण दवे
मरुदंदिति घनिष्ठे शोमने वासरे च ।
12/21/26/4/14/-129/8/1/
13/24/22/25/17/23/
त्रिदश मदन भने द्वादशे शीत रश्मौ
विवुध कृतितिरतिष्ठी नाड़ीनक्षत्र हीने सामान्यदेवताघटनम् ।।८।।

अनुवाद:

सर्प-दंशक शंकाक अभाव, एही जीवनमे नाना प्रकारक भोगक प्राप्तिक संग-संग अन्तमे स्वर्गलाभक एहि सभक कामना अथवा मनसा देवीक प्रीतिक कामना उल्लेख कयल जाय।

तत्पश्चात् **रयहानि** मे कहल जाइत अछि:

जनिक प्रतिमाक दर्शन भेलासँ रयहानि होइत अछि से रयहानि कहबैत छथि आ मंगल दायिनी एवं कल्याणकारिणी कहबैत छथि ।।७।।

शुद्धिदीपिका मे कहल गेल अछि : अस्पष्ट ।

ढाका-पाठमे सम्भवत: अंक द्वारा एकर व्याख्या कयल गेल अछि : 12/21/26/4/14/-129/8/1/ 13/24/22/25/17/23/ सामान्य देवता गढबाक विधि ।।८ ।।

(फोल्इओ ८ ख)

दीव्यतीति मनसा देवी । दिवेरच् प्रत्ययान्तान्वदादित्वादि ।
तथा श्रीपति:
पङ्कजं मनसा देवी पद्मनाभो युधिष्ठिर: ।२३।
इत्यादि । तेन ॐ मनसा देव्यै नम इत्येव मन्त्र:
मनसा देवीति पञ्चाक्षरनामत्वात् ।
तथा च ब्रह्मपुराणम्:
ओङ्करादि समायुक्तं नमस्कारान्त कीर्तितम् ।
स्वनाम सर्वसत्वानां मन्त्रइत्यमिघीयते ।।२४।।
तथा:
व्रषा मनो स्वनामाद्यक्षरं बीजं सर्वेषाममिघीयते ।।२५।।
तत्रान्तरे च:
ॐ कारं । विन्दु मध्यस्थानाधेयमामद्य मक्षणम् ।
देवतानां स्वबीजं ततपूजायामृद्धिसिद्धिदम् ।।२६।।

अनुवाद:

दीव्यति (चमकौत अछि) से मनसा देवी । एहिमे दिव् धातुसँ पाणिनिक अनुसार अच् -प्रत्यय भेलापर देव शब्द बनल । देव शब्द नदादि गणमे पठित अछि, तेँ स्त्रीलिंगमे - ई प्रत्यय लागल । **श्रीपति** मनसा देवीक उल्लेख कयने छथि :

पङ्कजं मनसा देवी पद्मनाभो युधिष्ठिर: ।।२३।।

इत्यादि । तदनुसार **ॐ मनसा देव्यै नम:** इएह मन्त्र भेल, कारण जे देवताक नाम पाँच अक्षर बाला अछि तदनुसार **ब्रह्मपुराणमे** कहल गेल अछि :

आदिमे ओंकार आ अन्तमे नमस्कारसँ युक्त नाम (सभ उपास्य देवक) मन्त्र कहबैत अछि। ।।२४।।

तथा

ओ लौकिक मन्त्रक संगहि संग *विषहरिण मङ्गल चण्डीगीताश्च* आदिक उल्लेख करैत कहल गेल अछि जे *ते च प्रसिद्धा लोकवादा* अर्थात् विषहरी मङ्गल चण्डिकाक प्रसंग तत्क्षेत्रीय एहिसँ सम्बन्धित गीत समूह लोकवाद कहि क' प्रसिद्ध अछि । एकर प्रमाण स्वरूप व्याडीभक्तितरङ्गिणीक मूल श्लोकक अवलोकन कयल जाय:

लक्ष्मीधरेण नौर्दत्ता यस्मान्मधुकराऽमिधा ।
तस्मान्मनोरमां नावं कृत्वा तत्र प्रपूजयेत ।।
मृन्मयी प्रतिमां कृत्वा देवताद्यौ समवृताम् ।
घटटित्वा विचित्रात्र्य पूज्यते गीत नर्त्तनैः ।।
(फोल्इओ 2क)

x x x

सन्निधौ भूतनाथस्य विपुलायाञ्च नर्त्तने ।
ये ये समागता द्रष्टं तांस्तत्स्थाने प्रपूजयेत् ।
ब्रह्माणं माधवं रुद्रं वाणीं लक्ष्मीञ्च पार्वतीम् ।
कार्तिकेयं गणेशञ्च कालियं पन्नगाष्टकम् ।
(फोल्इओ 2ख)

x x x

जरत्कारु मास्तिकञ्च मर्त्यं चन्द्रधरं तथा ।
स्वर्णरेखाञ्च तत्पत्नीं पुत्र लक्ष्मीधरं तथा ।
तत्पत्नीं विपुलाञ्चापि श्री धराख्यं द्विजं तथा ।
यशोधरञ्च दैवज्ञं कर्णधारञ्च दुर्लभम् ।
अग्रे गणेशं नौकायाः पातीनष्टौ मनोरहरान् ।
भण्डारिणश्चास्त्रधरान् मध्येऽग्रे मूलके तथा ।

अपन यथार्थतासँ परिचय करयबाक हेतु माल-जाल सभकेँ एक गहीर पोखरिमे खसा देलनि । पशु-समूहकेँ ओहिसँ बहार करबाक हेतु चरवाह सभके मनसाकेँ सन्तुष्ट करय पड़लनि । मनसा पशु-समूहकेँ ओहि पोखरिसँ बहार क' कए पीबाक हेतु दूध माँगलथिन। पात्रक अभावमे दूध दूहबाक हेतु अपन हाथक पथिआ देलथिन। चरवाह सभ ओहने गायकेँ दुहलक जे बिसुकल छल आ ओहि दूधकेँ मनसाकेँ पीबाक हेतु देलथिन । मनसा सब दूध पीबि गेलीह । चरबाह समूहकेँ हुनक अलौकिक शक्तिक ज्ञान भेलनि । ओ सभ प्रतिवर्ष ज्येष्ठ दशमी (मइ-जून) मासमे हुनक पूजा करब प्रारम्भ कयलनि । एक छोटसन पात्रमे पसीझ गाछ राखि देवीक प्रतिनिधिक रूपमे सुनिश्चित भेल । मनसा-पूजा द्वारा ओकरा सभक उत्तरोत्तर वृद्धि भेलैक ।

किन्तु नव देवीक उपासनाक फलस्वरूप मुसलमान किसान चरवाह सभक संग संघर्ष प्रारम्भ भेलैक । मनसा एहि अवसरक सदुपयोग क' कए दुनू दलक बीचक संघर्षमे हुनक विजय भेलनि । अन्ततः मुसलमान किसान हसन आ हुसेन हुनक महत्ताकेँ स्वीकार कयलनि आ हुनक उपासना मन्दिरक निर्माण क' कए करय लगलाह । जाहिमे हुनक जालू आ मालू दुनू मलाह सेहो सम्मिलित भ' गेलाह । नदी तलमे हुनक जालमे मनसासँ सम्बद्ध दुइ पवित्र स्वर्ण-पात्र भेटलनि जकरा ओ अपन मायकेँ उपासना करबाक हेतु देलनि। हुनक उपासनोपरान्त ओ परिवार धन-धान्य सँ समृद्ध भ' गेल । मनसाक दोसर भागक इएह कथानक थिक ।

मनसाक अमीष्ट छलनि जे उच्चत्तर वर्गमे विशेषतः धनी-व्यापारी वर्गमे हुनक उपासना होइन । व्यापारी बनिया चाँदो शिवक कट्टर भक्त रहथि। हुनका परम ज्ञान-सिद्ध छलनि आ शिव प्रसन्न भ' कए अपन मस्तकक एक जटा गुच्छ आ दुकूलसँ सम्मानित कयने छलथिन । एहि कारणेँ चाँदो कोनो देवताक निमित्त प्रतिस्पर्धी भ' गेल रहथि । मनसाक अभिलाषा छलनि जे चाँदो सेहो हुनक पूजा-अर्चा करथि । किन्तु एहि निमित्त ओ प्रत्यक्ष प्रस्ताव रखबामे असमर्थ छलीह । चाँदोक पत्नी जालो-मालोक मायसँ मनसाक पवित्र पात्र सभहिक उपासना सीखि गेल रहथि । चाँदो एहि विषयसँ अवगत नहि रहथि । एक दिन

(फोल्इओ ८ क)

तेन ॐ मनसा देव्यै नमइत्यष्टाक्षरो मन्त्रः । मं मनसा देव्यै नमः इति वा ।
ॐ विषहरायै नमः इति सप्ताक्षरः । विं विषहर्यै नमः इति वा ।
तत्राधिवासः निर्णयामृते हयाशीर्षपञ्च रात्रेः ।
अधिवासे गृहे देवः शय्यां शेते यथाविधि ।
वाससाहोद्यते यस्मादधिवासः स उच्यते ।।
एक रात्रं द्विरात्रं वा त्रिरात्रमपि वा तथा ।
कर्तृवृत्यनुसारेण्य कुर्यात् सद्योऽधिवासनम् ।। २२ ।।
संस्कारोगन्धमाल्याद्धोर्यः स्यात्तदधिवासनम् इत्यमरः ।

अनुवादः
एहिसँ ई जानल जाय जे नाग-पूजा मनसा (अर्थात् मनहि मन मन्त्र पढ़ैत) कयल जाय । तेँ **ओं मनसा देव्यै नमः** अथवा **ममनसा देव्यै नमः** ई अष्टाक्षर मन्त्र भेल आ ओ विषहर्यै नमः अथवा **विं विषहर्यै नमः** ई सप्ताक्षर मन्त्र भेल । अधिवासक विवेचन **निर्णयामृतमे, हयशीर्ष पञ्चरात्रमे** कयल गेल अछि:

जे यजमान अधिवास गृहमे शय्यापर विधिवत् सूतैत छथि, अथवा जेँ एहिमे वसु (धन) क उघाइ होइत अछि तेँ ई अधिवास कहबैत अछि । अनुष्ठान कर्त्ता यथाशक्ति एक राति, दू राति वा तीन राति लगातार अधिवास करथि ।। २२ ।।

अमरकोश कहैत अछि चन्दन, माला आदिसँ सहायब थिक अधिवास । मनसा देवी एहि शब्दक व्युत्पत्ति थिक जे मनसा (मन सँ) ।

(फोल्इओ ५ क)

हेमाद्रौकाशी खण्डेः
सैवर्णी राजती ताम्री मृन्मयी वा विशेषतः ।
यथाशक्ति प्रकर्त्तव्या प्रतिमा ऋद्धिवृद्धये ।। ९ ।।

गौड़मैथिलप्राच्यादिकृत्य सारेः
प्रतिमायाञ्च चित्रे वा मण्डले वा घटोऽपि वा ।
पूजयेत सुरसां देवीं दुर्गाविदभुवि साधकाः ।। १० ।।
दुर्गावदित्यति देशाद्वलि दानाचारः । तथा च
निरामिषेण योऽभ्यर्च्चेज्जगद्गौरीं मुनेः प्रियाम् ।
तस्य संवत्सरे हानिर्नित्यं स्यात् तु पदे-पदे ।। ११ ।।
एतेन यच्छागादि बलिदानं नास्तीत विशारदादिमिरुक्त तद्धेयम् । तत्रैवः
पञ्चभ्यां गुरुवारे च रविवारेऽर्कसंक्रमे ।

अनुवादः
हेमाद्रि काशी खण्डमे : सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य वृद्धिक कामनासँ देव-प्रतिमा अपन विभवक अनुसार स्वर्णक, रजतक, तामाक वा माटिक मूर्ति, मूर्तिकार द्वारा निर्माण कयल जाइछ ।। ९ ।।
गौड़मैथिलकृत्यसार मे कहल गेल अछि :
साधकगण जहिना दुर्गाक तहिना सुरसाक पूजा प्रतिमामे, चित्रमे, मण्डलमे वा घरमे करथि ।। १० ।।
पृथ्वीपर सुरसा देवीकेँ दुर्गा-पूजनक अनुसारेँ करैत छथि तेँ **दुर्गावत्** कहल गेल अछि, ताहिसँ ई बुझबाक चाही जे एहूमे बलिप्रदान प्रभृति आचारक प्रतिपालन करबाक चाही/कहलो गेल अछि:
जे क्यो जगद् गौरी मुनि-प्रिया सुरसाक पूजा निरामिष करताह तनिका वर्ष भरि

चाँदो देखलनि जे हुनक पत्नी पवित्र पात्रक पूजा-अर्चामे संलग्न छथि, ताहिपर कुद्ध भ' कए ओ एक लात मारलनि जाहिपर मनसा क्रोधित भ' गेलीह । ओ नाना प्रकारेँ चाँदोकेँ प्रताड़ित करबाक उपक्रम कयलनि, किन्तु ओहि प्रयासमे हुनका सफलता नहि भेटलनि। तत्पश्चात् हुनक नेता हुनका प्रस्ताव देलथिन जे शिव द्वारा प्रदत्त उपहार आ परम ज्ञानक ओ अपहरण क' लेथि । एहि परामर्शानुसार मनसा एक सुन्दरीक वेशमे परिणत भ' कए उपस्थित भेलीह आ अपन परिचय सारि कहि क' देलथिन आ अन्तत: हुनका भ्रष्ट करबामे सफल भ' गेलीह । धर्माचरणक मार्गसँ भ्रष्ट भेलाक फलस्वरूप चाँदो अपन अलौकिक उपहार आ परम-ज्ञानकेँ सुरक्षित नहि राखि पौलनि ।

यद्यपि मनसाक निदेशानुसार नाग सभ चाँदोक छओ पुत्रकेँ दंश मारि क' हत्या क' देलथिन, तथापि मनसा देवीक प्रभुत्त्वकेँ नहि स्वीकारलनि । किछु वर्षोपरान्त हुनक कनिष्ठ पुत्र लखिन्दर जखन छेटगर भेल, तखन ओकरा लेल चाँदो एक अत्यन्त प्रवीण वधूक अन्वेषण करब प्रारम्भ कयलनि । ओ कन्या बिहुला छलीह जे एक व्यापारीक अनगणित पुत्र सभमे सँ एक मात्र कन्या छलीह तनिका संग विवाह सुनिश्चित कयलनि । यद्यपि चाँदो एहि विषयसँ पूर्ण अवगत रहथि जे मनसा हुनक वंश-परम्पराकेँ समाप्त करबाक संकल्प कयने छथि, तथापि हुनक घातक आक्रमणसँ भयभीत भ' नव-दम्पतिक सोहागक निमित्त एक एहन मोह-कक्षक निर्माण करबौलनि जाहिमे बसात पर्यन्त नहि प्रवेश पाबि सकैछ । चाँदोक उपर्युक्त योजनाक क्रियान्वयनार्थ गृह-कार्यमे लागल जन-मजूर आ कारीगर लोकनिकेँ प्रलोभन द' कए मनसा फुसिया लेलनि आ एक सूझ्या प्रवेश करबाक योग्य भूर छोड़ि देलक । ओहि भूर द' कए मनसाक सूक्ष्मतम आ अधिक घातक नाग प्रवेश क' कए बिहुलाकेँ गर्माधानक अवसरक पूर्वहि लखिन्दरकेँ डसि लेलक जाहिसँ हुनक प्राणान्त भ' गेलनि । चाँदोक वंश परम्पराक अन्तिम आ सर्वाधिक प्रिय पुत्रक कारुणिक निधन भ' गेलनि । तथापि चाँदो टससँ मस नहि भेलाह । नाग-दंशसँ मृत्यु भेनिहार व्यक्तिक दाह-संस्कार शास्त्र वर्जित अछि, कारण नाग पूजाकेँ अग्नि-सम्प्रदायसँ विरोध छैक । लखिन्दरक मृत्यु जँ नाग दंशसँ भेल छलनि तँ हुनक दाह-

प्रकाशित कयलनि ।

यद्यपि बाङला भाषा-भाषी साहित्यक अनुसन्धाता लोकनिकेँ एकर परिज्ञान बहुत पूर्वहिसँ छलनि तँ कोलकाता विश्वविद्यालयक तुलनात्मक भाषा-विज्ञान विभागक प्राक्तन खयरा प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डा. सुकुमार सेन *(1900-1992) बाङला साहित्येर इतिहास (आनन्द संस्करण, पञ्चम मुद्रण, 1999)* मे सेहो विद्यापति कृत *व्याडीभक्तितरङ्गिणी* क चर्चा कयलनि तथा उपर्युक्त ग्रन्थक आरम्भिक अंशकेँ उद्धरण स्वरूप उद्धृत कयलनि।

व्याडीभक्तितरङ्गिणी विशुद्ध संस्कृत भाषामे लिखित अछि । एकर रचयिता मिथिलावासी विश्वकवि विद्यापतिकेँ कहल गेल छनि । एहि कृतिक रचना विद्यापति अपन परिणत अवस्थामे कयलनि । एहिमे सर्प-पूजन वा मनसा-पूजन वा विषहरी-पूजनक विधि-व्यवस्था वर्णित अछि आ से *दुर्गाभक्तितरङ्गिणी* जकाँ विराट रूप धारण कयने अछि । एहूमे ओ दुर्गाभक्तितरङ्गिणी जकाँ आधार ग्रन्थ आ ग्रन्थकारक उल्लेख कयलनि अछि ।

ग्रन्थ ओ ग्रन्थकार :

शुद्धिदीपिका (४ख), गौडमैथिलकृत्यसार (५क), विशारद (५क), छन्दोग परिशिष्ट (५ख), जैमिनि (६क), देवीपुराण (७क एवं ७ ख), गरुड़पुराण (७ ख), अमरकोश (७क एवं ८क). निर्णयामृत (८क), ब्रह्मपुराण (८ख एवं ११क), श्रीपति (८ख), हयशीर्षपञ्चरात्र (८क), द्वैतनिर्णय (९क), भविष्यपुराण (९क एवं १३क), कालीहृदय (१०क) शारदातिलक (१०ख एवं १२क) कृतचिन्तामणि (११क), गौड़ादिसंग्रह (११क), प्रपञ्चसार (११क), भट्टभाष्य (१२ क), महातन्त्र प्रकाश (१२ ख), यज्ञपार्श्व (१२ क एवं १२ ख), राघवभट्ट (१२ क), विष्णुधर्मोत्तर (१२ख), गोमिलपुत्र (१३क), महाकपिलपञ्चरात्र (१३क), शान्तिदीपिका (१३क) एवं दुर्गाभक्तितरङ्गिणी (१४क) आदिक उल्लेख अछि ।

मिथिला आ बंगालमे ई पूजा अत्यन्त धूमधामसँ कयल जाइत अछि सर्प-पूजनक प्रसंगमे

डेग-डेग पर नित्य हानि होइत रहतनि ।। ११ ।।

विशारद आदिक कथन अछि जे एहि पूजनोत्सवमे छागर आदिक बलिदान नहि होयबाक चाही । उपर्युक्त वचनसँ तकर खण्डन होइत अछि । ओतहि कहल गेल अछि : वृहस्पति युक्त पंचमीकेँ रविवार युक्त संक्रान्तिकेँ,

(फोलइओ ७ ख)

पर वचनं गारुडेऽपि :

अनन्तो वासुकि: पद्मो महापद्मोऽथ तक्षक: ।
कुलीर: कर्कट: शङ्खो ह्यष्टौ नागा: प्रकीर्तिता ।। २० ।।

तथा :

कलीयं धृतराष्ट्रच पिङ्गलं माणिभद्रकम् ।
तथैवैरावतं नागं धनञ्जयमथार्चयेत् ।।
चतुर्दश समाख्याता वरदा: कामरूपिण : ।। २१ ।।

अत्र पूजयेन्मनसा देवीमिति ।

देवी पुराणे दर्शनान्मनसात्विदं :

अनुवाद :

गरुड पुराणमे कहल गेल अछि:

अनन्त, वासुकि , पद्म, महापद्म, तक्षक, कुलीर, कर्कट आ शंख ई आठ नाग थिकाह।।२०।।

तथा

कालिय, धृतराष्ट्र, पिंगल, माणिभद्र, ऐरावत आ धनञ्जय एहू छओ नागक पूजा करी । उपर्युक्त आठकेँ मिला क' चौदहो नाग कामरूपी (इच्छानुसार रूप धारण कयनिहार तथा वर प्रद छथि) ।। २१ ।।

देवी पुराण मे कहल गेल अछि: **पूजयेत् मनसा देवीम् ।**

तत्पश्चात् जे कथा उपलब्ध अछि ओहिपर मोटामोटी मिथिलांचल एवं बाङ्गला उपाख्यानक प्रभाव परिलक्षित होइछ, कारण भोजपुरी मैथिली आ बाङ्गला एकहि प्राकृत मूलक भाषासँ उत्पन्न भेल अछि, तेँ पद-विन्यास एवं वाक्य-विन्यासमे किंचित मेल अछि। मैथिली आ बाङ्गला सहित भोजपुरीमे सेहो पयार छन्दक उन्मेष भेल तेँ पयार सदृश सुगठित आ सरल अछि । किन्तु बिहुलाक कथामे किछु अंश एहन अछि जे उपेक्षित एवं अपरिहार्य विकृति रहितहुँ मैथिली आ बाङ्गलाक कथाक समानान्तर अछि ।

व्याडीभक्तितरङ्गिणी :

व्युत्पन्न कारयित्री ओ भावयित्री प्रतिमासँ समलंकृत कालजयी विश्वकवि-महाकवि विद्यापति *(1360-1448)* कोन-कोन विषयपर की-की रचना क' कए संस्कृत प्राकृत, अवहट्ठ आ मैथिली साहित्यक प्रवहमान सरिताकेँ सम्पोषित कयलनि तकर यथार्थताक अभिज्ञान अद्यापि मैथिली भाषा-भाषी आ साहित्य-मनीषी पुरोधाकेँ नहि भ' पौलनि अछि, जाहि हेतु गहन अनुसन्धानक प्रयोजन अछि जे एहि दिशामे मिथिलांचल आ बंगालक गाम-गाम घूरि क' प्राचीन पाण्डुलिपि सभक अन्वेषण करथि । एहि दिशामे जहिना-जहिना अनुसन्धान भेल अछि तहिना-तहिना अनुसन्धानोत्तर कतिपय हुनक नव-नव कृतित्त्व पाठकक सम्मुख आयल अछि । बीसम शताब्दीक पञ्च दशकोत्तर अनुसंधानोत्तरक परिणाम थिक जे हुनक एक अभिनव अमूल्य कृति प्रकाशमे आयल अछि ओ थिक *व्याडीभक्तितरङ्गिणी* । ई श्रेय छनि बाङलाक प्रख्यात अन्वेषी साहित्य-मनीषी आ कोलकाता विश्वविद्यालयक बाङला साहित्य एवं आधुनिक भारतीय भाषा ओ साहित्य विभागक प्राक्तन रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डा. आशुतोष भट्टाचार्य *(मृत्यु 1984)* केँ जे चेतना समिति *(1954)* द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व-समारोहक अवसरपर विद्यापति कृत व्याडीभक्तिरङ्गिणीक प्रसंगमे स्मारिका *(1972)* मे प्रथमे-प्रथम मैथिलीभाषी जनमानसकेँ उक्त ग्रन्थक सम्बन्धमे सूचना देलनि जकर अभिज्ञान मैथिलीभाषी नहि छलनि । ओ अपन संदर्भ ग्रन्थ *बाङला मङ्गल काव्येर इतिहास (दशम संस्करण, 2002) क परिशिष्टक* मे उपर्युक्त ग्रन्थक पाण्डुलिपिकेँ अविकल

संस्कार नहि कयल गेलनि तथा हुनक शवकेँ नदीमे प्रवाहित कयल गेल ।

तथापि शोक-ग्रस्त परिवारक मनमे ई क्षीण आशा बनल छलैक जे मृत व्यक्ति कोनो व्यक्तिक परिचर्या वा धार्मिक भिक्षु तान्त्रिक शक्तिसँ ओ पुनर्जीवित भ' सकैछ । अतएव लखिन्दरक शवकेँ काठक बाकसमे बाल्लुका नदीमे प्रवाहित क' देल गेल । बिहुला अपन पतिकेँ आँखिक ओटसँ बाहर जाय देबाक आकांक्षिणी नहि छलीह । अतएव ओहि पेटीमे ओहो बैसि गेलीह। नदीक तीव्र प्रवाहमे हुनका कठिन शक्तिक मोकाबिला करय पड़लनि। काठक बाकस भसिआइत-भसिआइत त्रिवेणी पहुँचि गेल । ओतय ओ देखलनि जे एक धोबिन अपन पुत्रकेँ मारि क' कपड़ा धोयलक आ पुन: ओकरा जीवित क' कए वासप चल गेल । ओ धोबिन देवता लोकनिक धोबिन आ मनसाक सखी *नेता* छलीह । दोसर दिन बिहुला हुनका संग कोनो रूपेँ मैत्री कयलनि आ ओकरा एहि बातक हेतु प्रस्तुत क' लेलनि जे ओ हुनका देव-सभामे ल' जाथि आ हुनक परिचय अपन भजीती कहि क' देथि जे एक दक्ष वादिकाक संगहि कुशल नर्त्तकी सेहो छथि । बिहुला देव-सभामे उपस्थित भेलीह जतय हुनका नृत्य करबाक हेतु कहल गेलनि । शिवक संगहि सब देवतादि लोकनि हुनक नृत्य कौशलसँ प्रसन्न भ' गेलाह । एहिपर ओ अद्योपान्त वृतान्त कहि सुनौलथिन तथा वचन बद्ध भेलीह जे ओ अपन श्वसुरसँ मनसाक पूजा-अर्चा करौतीह जकर प्रसादात हुनक सब पुत्र पुनर्जीवित भ' जयताह । ओतयसँ प्रत्यागत भेलाक पश्चात् ओ चांदोकेँ मनसा पूजा-अर्चाक हेतु बाध्य कयलनि ।

पुराणानुसार धर्म देवसँ अभिप्राय थिक आख्यान आ कर्मकाण्डक कथा सेहो अत्यन्त जटिल अछि । एहिमे वैदिक आ पूर्व-वैदिक रीति-रेवाजक संगहि विविध अनार्य सम्प्रदाय आ पौराणिकी सभक मिश्रणसँ एकर कथा भिति निर्मित भेल अछि । धर्म ऋग्वेदक अंशत: वरुण आ अंशत: यम छथि आ आंशिक रूपेँ परवर्त्ती वेद सभ ईरानी परम्परा सूर्य सेहो छथि आ आदि देव जे मृत्यु सृष्टि रचनाक आरम्भ करितहि भ' गेल छलनि जनिक सम्बन्ध पूर्व वैदिक लोक कथासँ अछि । एहि विषयक पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध अछि जे धर्म आ हुनक पत्नी केतका मनसा जे वैदिक यमयमीक प्रतिरूप छथि । कोनो समयमे उत्तर पूर्वी

(फोल्इओ ७ क)

अथ देवीपुराणम् :

सुप्ते जनार्दने कृष्णे पञ्चभ्यां भवनाङ्गने ।
पूजयेन्मनसादेवीं स्नुही विटप संस्थिताम ।। १८ ।।

पल्लवोऽस्त्री किसलयं विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम इत्यमर कोषात् ।

देवी सपूज्यमनत्वा च न सर्पभयामाप्नुयात् ।
पञ्चम्यां पूजयेन्नागानन नवाध्यान महोरगान् ।। १९ ।।

क्षीरं सर्पिस्तु नैवेद्यं देवं सर्पविषापदं ।

अनुवाद :

देवी पुराण मे कहल गेल अछि:

भगवान विष्णुक शयनक बाद जे कृष्ण पक्षक पञ्चमी (साओन मासमे) पड़य ताहि दिन अङनहिमे स्तुही (दूधी) क गाछक डारिपर विराजमान मनसा देवीक पूजा करी।।१८।।

विटप केर अर्थ थिक डारि, जेना कि **अमरकोशमे** कहल गेल अछि: पल्लव (पुंलिंग/ नपुसंक), किसलय (नपुंसक) ओ विटप (पुलिंग / नपुसंक) वृक्षक विस्तार थिक / अन्यत्र कहल गेल अछि:

मनसा देवीक पूजा करी आ हुनका प्रणाम करी । एहिसँ सर्प भय दूर होयत । पञ्चमीकेँ अनन्त आदि आठ नागक पूजा करी । हुनका दूध आ घी चढ़ाबी तथा सर्प विषनाशक वस्तु सभक नैवेद्य दी। ।। १९ ।।

(फोल्इओ ५ ख)

दशम्याञ्चे त्रयादश्यां शुक्ल पक्षे तथा परे ।
वैशाखादिषु मासेषु पूजयेत सर्वशान्तिदाम ।। १२ ।।

एतेत श्रावणमास्येव पूजनमिति मतमपास्तम् ।

तत्रैव :

पद्म पत्रे च नैवेद्यं दध्याद् देव्यै करण्डिकाम् ।। १३ ।।

पूजाया : फलश्रवणात् प्रतिमानिर्माणस्य प्रयास बाहुल्यात् फलभूयस्त्वम् । तथा च छन्दोगपरिशिष्टे :

यत्र स्यात् कृच्छ्रबाहुल्यं श्रेयसोऽपि मनीषिण: ।
भूयस्त्वं ब्रवते तत्र कृच्छ्रेयेह्य वाप्यते ।। १४।।

अनुवाद :

वैशाख आदि मासमे शुक्ल-पक्षक पञ्चमी तथा त्रियोदशीकेँ सकल अनिष्टक नाशिनी भगवती सुरसाक पूजा करी ।। १२ ।।

एहिसँ केवल श्रावण मासमे नाग-पूजा करी ई मत खण्डित होइत अछि । ओतहि कहल गेल अछि :

देवीकेँ पुरैतिक पात पर करण्डिका नैवेद्य देल जाय ।। १३ ।।

पूजाक फल तँ कहले गेल अछि : प्रतिमा बनयबामे जतेक अधिक प्रयास कयल जाय ततेक अधिक फलबूझू । जेना कि छन्दोगक परिशिष्टमे कहल गेल अछि :

जतय प्रयास अधिक ततय मनीषी गणक कथन छनि जे फल अधिक, कारण जे प्रयासे (कष्टे) पुण्य जनक होइत अछि ।। १४ ।।

भारतमे ग्राम्य-देवताक रूपमे पूजित होइत छलीह ।

भोजपुरीक मनसा कथा :

मिथिलांचलक अतिरिक्त बिहुला लखिन्दरक कथा भोजपुरी अंचलक ग्रामांचलमे सेहो एकर गीत प्रचलित अछि तथा एहि भाषामे लिखित *बिहुला कथा (मुंशी गुलाम लाल द्वारा संशोधित आ प्रह्लाद द्वारा प्रकाशित सचित्र बिहुला कथा अर्थात् विषहरी चरित्र सत्य, सुधाकर प्रेस पटना द्वारा प्रकाशित)* मे उपलब्ध कथान्तर्गतमे किछु नूतनत्त्वक संगहि-संग मोटा-मोटी मिथिलांचल आ बाङ्गला-साहित्यान्तर्गत प्रचलित कथाक समरूप थिक। भोजपुरी कथान्तर्गत मनसा एक व्यक्ति नहि, प्रत्युत् हुनक पाँचो भगिनी पौराणिक *पञ्चाप सरस:* थिक । ओहिमे मैना अर्थात् मदना ओ विषहरी प्रधान थिक । चारि बहिन मे *दो* तोला *(दो तोला भवानी वा दो तोला कुमारी)* दो तोला जे तोतलाक विकृत रूप थिक । उत्तर पूर्व बंगालमे मनसा-मङ्गल मनसाक नामान्तर, *तोतला*, वा *तोतल* महायान-तन्त्रक मन्त्रक रूपमे ताराक इएह रूप थिक । देवी विषहरी, जया *(विषहरी)* ओ पद्मा कुमारी हुनक सहचरी ।

कोकलापुर शहरान्तर्गत महादेव मठमे शिव आ पार्वती निवास करैत रहथि । उक्त नगरान्तर्गत सोनादह पोखरिक घाटपर महादेव प्रतिदिन स्नानार्थ जाथि । एक दिन स्नान करबा काल महादेवक जटासँ पाँच टा केश टूटि क' खसि पड़लनि जे पाँच पद्म-पुष्पमे जा क' लसकि गेल जाहिसँ पाँच विषहरीक जन्म भेलनि । कमल दहमे बारह वर्ष घरि ओ सभ झुम्मरि खेलयलनि आ पश्चात् जा क' कुम्भीक आधिक्यक फलस्वरूप ओकरा ठेलि क' पतालमे वासुकि नागक समक्ष उपस्थित भ' कए अपन-अपन परिचय जानबाक हेतु गेलीह ताहिपर वासुकि कहलथिन, *अहाँ सभक धर्म पिता महादेव आ धर्ममाता पार्वती छथि*। एहि विषयसँ अवगत होइतहि ओ सभ सोनदह प्रत्यावर्तित भ' कए नुका रहलीह । एक दिन महादेव ओहि पुष्प सभकेँ चयनित क' अनलनि आ घरक एक कोनमे राखि भाङ्ग, धथूरक सेवन क' कए ध्यानास्थ भ' गेलाह । भानस भात शेष भेलापर पर्वतीक नजरि ओहि पुष्प सभपर पड़लनि। पार्वती जहिना पुष्प सभकेँ हाथमे लेलनि तहिना पाँचो

बहिन विषहरी हुनका, माँ ! माँ ! माँ ! माँ ! माँ कहि क' हुनक कोरामे कूदि गेलीह । सौतिनक भयसँ आक्रान्त भ' कए पार्वती हुनका सभकेँ मारि पीट क' घरसँ बाहर क' देलनि । एहिपर मैना विषहरी क्रोधित भ' गेलीह आ सुताओ नागकेँ आदेश देलनि जे जा क' पार्वतीकेँ दंश मारू । नागक दंश मारितहि पार्वती प्राण त्यागि देलनि । जखन महादेवक ध्यान-भग्न भेलनि तखन दौड़ि क' पार्वतीक लग गेलाह आ मंत्री केशव मन्त्र पूत जल ल' कए विष झाड़बाक उपक्रम करय लगलाह । किन्तु मन्त्र प्रभाव हीन भ' गेल । पाँचो बहिनि विषहरी महादेवकेँ अत्यन्त व्यग्र आ व्यथित देखि क' पार्वतीकेँ प्राणापन्न कयलनि । एहि घटनापर महादेव प्रसन्न भ' कए वरदान देलथिन । मैना विषहरी महादान माङ्गलथिन जे मर्त्य-भुवनमे चाँद सौदागरक घरमे हुनका सभक पूजनक अनुष्ठान हो । ताहिपर महादेव तथास्तु कहलथिन । किन्तु चाँदोक घरमे ओ सभ पूजन अनुष्ठानक अनुमति नहि पौलनि जाहिसँ ओ सभ क्षुग्ध भ' गेलीह । मर्त्य-लोकमे पूजन पयबाक उद्देश्यसँ विषहरी चौपाइ नगर प्रत्यागत भेलीह । किन्तु चाँदो सभकेँ भगा देलथिन, तथापि विषहरी संघिक आशाक परित्याग नहि कयलनि । चाँदोक पत्नी सोनिका नाओ सभक पूजनार्थ नदीक घाटपर गेल छलीह । विषहरी ओतय जा क' हुनका पकड़बाक प्रयास कयलनि, किन्तु चाँदो पूर्वहि पहुँचि क' सभकेँ पुन: भगा देलथिन । वेगरतित भ' कए पाँचो बहिन इन्द्रक ओतय उपस्थित भ' कए प्रार्थित भेलीह जे हमरा सभकेँ पुन: पृथ्वीपर प्रेषित क' कए उद्धार कयल जाय । एहिपर इन्द्र राजी भ' गेलाह । इन्द्रक नटुआर्कें ल' कए पूजा प्रसाद पयबाक उद्देश्यसे आ सभ मर्त्य-भुवनमे अवतरित भेलीह । तत्पश्चात् विषहरी स्वयं एक बेर हनुमानकेँ प्रेषित क' कए चाँदोक मनयबाक उपक्रम कयलनि । विषहरीक क्रोधसँ भयाक्रान्त भ' कए चाँदो वाणिज्य-व्यापारमे लागि गेलाह। जखन व्यापारसँ प्रत्यागत भेलाह तखन देखलनि जे सोनिका विषहरीक पूजा अर्चा क' रहल छथि । ओ एक लात मारि क' कलशकेँ फोड़ि देलनि आ कहलथिन, अहाँक छओ पुत्र त्रिवेणीमे डूबि गेल । किछु अन्तरालक पश्चात् चौपाइ नगरान्तर्गत सोनिकाक गर्भसँ इन्द्रक नटुआ लखिन्दरक रूपमे जन्म लेलनि तथा हुनक पत्नीक रूपमे उज्जैनमे मोनिका साहुनीक गर्भसँ बिहुला भूमिष्ट भेलीह ।

(फोल्इओ ६ क)

अत्र यद्यपि सकृत् कृते कृत: शास्त्रार्थ इति न्यायेन सकृत पूजाकरणा देव फलसिद्धिर्जायते। तथापि फल बाहुल्य दिनत्रयाधिकं प्रत्यहं पूज्येत ।
तथाहि जैमिनि :

फलस्य कर्मनिष्पत्तिलोर्केवत् परिमाणत: । १५ ।।

यथा लौकिक कर्षणादीनां बाहुल्ये पुन: फलाधिक्यं तथा वैदिक कर्मणामपीत्यन्वय: ।

एवं कर्म कुर्वतां यत्तादृशं फलं न दृश्येत तत कलिस्वभावात् ।

अनुवाद :

यद्यपि शास्त्रमे कहल गेल अछि न्यायक अनुसारेँ एक बेर पूजा कयलासँ शास्त्रक विधान पालित भ' जाइत अछि, तदनुसार एकबेर पूजा कयल जाय, तँ फल सिद्धिक लाभ निश्चये प्राप्त भ' जाइत अछि, तथापि अधिक फल कामनासँ तीन दिन धरि प्रतिदिन पूजा कयल जाय।

जैमिनि कहैत छथि :

लौकिक कार्यहि जेकाँ कर्मसँ फलक उत्पत्ति अनुपातिक होइत अछि। (अर्थात् लोक जाहि परिमाण मे कर्म करैत अछि, ओकरा ओही अनुपातमे ततेक फल प्राप्ति होइत छैक) ।। १५ ।।

जेना लौकिक कार्यमे खेतकेँ अधिक जोतने अधिक उपजा होइछ तहिना वैदिक कर्मक सम्बन्धमे जानब आ ओकरहि अनुरूप कर्म करब । एहि प्रकारेँ कर्म कयलो उत्तर जँ कदाचित फल नहि भेटय तँ ओतय कलिक प्रभाव बुझबाक चाही ।

(फोल्इओ ६ ख)

तथा च विष्णुपुराणम् :

यदा यदा सतां हानिर्वेदमार्गानुसारिणाम् ।
तदा तदा कलेर्वृद्धिरनुमेया विचक्षणै : ।।
आरम्भाश्चावसीदन्ति यदा धर्मभृतां नृणाम् ।
तदाऽनुमेयं प्राधान्यं कलेर्मैत्रेय पण्डितै : ।। १६ ।।

मण्डलन्तु गौड़मैथिलकृत्यसारे :

स्थण्डिले हस्त मात्रे च मण्डलं चतुरस्त्रकम् ।
चतुष्कोणं चतुर्द्वारं रक्तपद्म विभूषिताम् ।
पूजयेन्मनसादेवीं तत्र नागाष्टकै : सह : ।। १७ ।।

अनुवाद:

जेनाकि **विष्णु पुराण** मे कहल गेल अछि:

जखन-जखन वेद प्रतिपादित मार्ग पर चलनिहारो लोकक अहित होइत देखल जाइछ तखन-तखन ई बुझि जयबाक चाही जे कलियुग प्रौढ़ भेल जा रहल अछि। जखन धर्मनिष्ठ लोकक प्रयासकेँ विफल होइत देखी, तखन बूझि जाइ जे हे मैत्रेय, कलिक प्रधानता भ' गेल अछि । ।। १६ ।।

मण्डलक वर्णन **गौड़मैथिलकृतसारमे** कयल गेल अछि:

पीड़ी पर एक हाथ आयत आकरक मण्डल बनाबी, जाहिमे चारि कोण आ चारि द्वार हो आ ओकरा लाल कमलक फूलसँ सजाबी । एहि मण्डलपर आठ नाग सहित मनसा देवीक पूजा करी । ।। १७ ।।

शान्तिर्वामदेव्यगानादि: । अवधारणमच्छि द्रावधारणान्तरं कार्यं न तु पाठ क्रमादर:।

वृथा विप्रवचो यस्तु गृहणाति मनुज: शुभे ।
अदत्वा दक्षिणां वापि स याति नरकं ध्रुवमिति ।।५४।।

इति नारदीयात् । विसर्जनान्तरन्तु नद्यामुडोपादिस्थापयेन्न तू जले ।

नद्याञ्च स्थापयेद्देवी मुडुपोचास्वबे तत: ।।५५।।

इति लोकवादात् । तदशक्त । स्थले च । अथा च कामरूपत्वादति दक्षिणात्यै: काल विषहरीत्वे नाव्यहार्ज कृष्ण वर्णा पूज्येत ।

अथ पूजा भेदा:

द्वियामं वा चतुर्यामं हलीं कृत्यर्चाद्विघास्थिराने । स्कचितश्चरहस्यचर्चा एक रात्र: तथापरा ।

कृदृशीमिश्च पूजाभिरर्चितारोग्य दायिका ।

अनुवाद:

शान्ति थिक वामदेव्य गान आदि । शान्ति कर्म अवधारणे जकाँ ओकरा बाद करी जेना वचनमे क्रम अछि तेना नहि । अर्थ बिनु बुझनहि केवल पाठ प्रशंसनीय नहि थिक, जेना कि **नारदक** वचन अछि:

हे कल्याण वती, जे व्यक्ति बिनु अर्थ बुझनहि अथवा बिनु दक्षिणा देनहि ब्राह्मणसँ शान्ति पाठ करबैत छथि से निश्चय नरक जाइत छथि । ।।५४।।

विसर्जनक पश्चात् प्रतिमाकेँ नदीमे नाओ पर चढ़ाबी, जलमे नहि, किएक, तँ लोकाचार अछि:

विसर्जनक बाद देवीकेँ नदीमे नाओ पर स्थापित करी । ।।५५।।

जँ से सम्भव नहि हो तँ स्थलमे विसर्जित करी ।

दाक्षिणात्य लोकनि **अथात: कालरूपत्वात्**...इत्यादि वचनक अनुसार कालविषहरी

नागानां प्रतिमाभावेतु देव्या मुकुटादिष्वनन्तादीन् पूजयेत् ।

यथा:

अनन्तादि त्रिभिनागैर्मुकुटं भावयेद्वघ: ।
कर्कटक-कुलीराम्यां कर्णाभरण भूषिताम् ।
शङ्खपद्माङ्कहस्ताञ्चहारकथणकाञ्च दा ।।४२।।

तथा:

पूजयेन् मनसादेव्या: पूरतो गणनायकं ।
दक्षिणे चण्डिकञ्चैव वासुदेवञ्च पृष्ठत:।।
वामभागे महादेवं सर्वकामफलप्रदं ।
यजेच्छिवान्तिके गङ्गा बासुदेवान्तिकेश्रियं ।
पुरो ग्रहान्नयजेद्देव्या अवतारांस्तथापरान् ।
इन्द्रादिलोकपालांश्च स्व-स्व दिक्षु प्रपूजयेत ।
ततश्चन्द्रधरादींश्च यथानाम यजेत क्रमात् ।।४३।।

ततो होम: ।

अनुवाद:

जँ नागक प्रतिमा नहि हो तँ देव मुकुट आदिमे जड़ल नागक पूजा करी । यथा: अनन्त आदि तीन नागसँ देवताक मुकुट बनाबी, कर्कोटक आ कालिय नागसँ कर्णभूषण बनाय देवताकेँ विभूषित करी; हुनक हाथमे शंख आ पद्म देल जाय आ छात्ती हारसँ सुशोभित कयल जाय । ।।४२।।

तथा

मनसा देवीक आगाँ गणेशक पूजा करी । दहिनामे चण्डिकाक आ पाछाँमे विष्णु भगवानक पूजा करी । बामा दिस सर्पफलदायी शिवक पूजा करी । शिवक आगाँ नओ ग्रहक तथा हुनक अन्य अवतारक पूजा करी । इन्द्र आदि आठ

History of Bengali Literature New Delhi, Sahitya Akademi Revised Edition 1971

Srivastava, M. N. : Religion and Society among the Caorgas of south India, oxford, 1952

Sunder, N.K. : Epic of Gilgamesh, 1980

Verrier, Ions : Egyption Mythology, The standard Literature & Co. (P) Ltd., 1964.

Vogel, J.P. : Indian Serpent Lore, Delhi, 1972.

बाङला

चौधरी, मिहिर कामिला : आंचलिक देवता: लोक-संस्कृति, वर्द्धमान, वर्द्धमान विश्वविद्यालय, १९८२
राढ़े ग्राम देवता, वर्द्धमान, वर्द्धमान विश्वविद्यालय, १९८९

दास, कैतकानन्द, दास, श्री क्षमानन्द : मनसार भासान, अक्षय लाइब्रेरी, कोलकाता, प्रकाशन वर्षक उल्लेख नहि ।

दास, चैतन्य : मनसा मङ्गल, कोलकाता, ताराचंद एण्ड सन्स, प्रकाशन वर्षक उल्लेख नहि ।

पोद्दार, अरविन्द : मानव धर्म ओ बाङला काव्येर भव्ययुग, कोलकाता ।

नामसँ कारी नागिनिक पूजा करैत छथि ।

आब पूजाक भेद कहल जाइत अछि:

लोकमे ई पूजा दू प्रकारक चलैत अछि: द्वियाम पूजा आ चतुर्याम पूता । क्लीं मन्त्रसँ कयने देवी आरोग्य दैत छथि । ।।५६।।

दिक्पालक पूजा हुनक अपन-अपन दिशामे करी । तकरा बाद क्रमश: चन्द्रधर आदिक पूजा यथोक्त नामसँ करी ।।४३।।

तदुत्तर होम करी ।

एतय अग्नि वरद थिकाह । किएक तँ वैह शान्ति कर्त्ता छथि ।

गोमिल पुत्र कहैत छथि: ।

शान्ति कर्ममे अग्नि वरद कहल गेल छथि । ।।५२।।

शान्तिदीपिकामे वशिष्ठक वचन अछि:

अत: कश्यपस्य इत्यादि मन्त्रसँ क्रमश: कपार, कण्ठ आ पाँखुरपर वन्दना (भस्मलेपन) कराबी । तखन शान्ति आ अवधारणा (?) करी; दक्षिणा दी आ प्रतिमा सभक विसर्जन करी ।।५३।।

(फोल्इओ १४ मात्र)

कृमिति दैवाक्लीकांरस्तस्मिन् कृतिः कारणं यस्याः पूजयाः साक्लीङ्कृति पूजेत्यर्थः ।

न विद्यते कुष्कतिवीक्षणं यस्याः पूजायाः सालिक्षति ।

पूजयेत्यर्थः

अनुक्तः यदन्यहुर्गाभक्तितरङ्गिण्याम अनुसन्धेयं ग्रन्थगौरवाशङ्कयात्र पुनर्नालिखित मिति ।

इति समस्त प्रक्रियलङ्कृत भूपति वर-वीर श्री
दर्पनारायण देवेन समयविजयिनाज्ञप्त
श्री विद्यापति कृतौ श्री व्याडीभक्ति
तरङ्गिण्यां प्रथम तरङ्गः । श्री व्याडी
चरणेमद्धक्ति रस्तु ।
(श्री हरि वामवाण श्री दुर्गा सहाय)

अनुवाद:

एतय क्लीं थिक क्लीं मन्त्रक उच्चारण । ई उच्चारण जाहि पूजाक कृति (कारण) हो से थिक क्लीं कृति पूजा । जाहि पूजामे दुष्कृतिवीक्षण नहि हो से लिक्षति पूजा थिक ।

एहिमे जे किछु अनुरक्त रहल से दुर्गाभक्तितरङ्गिणीसँ जानी; ग्रन्थ विस्तारक भयेँ एतय पुन: नहि लिखल ।

समस्त प्रक्रिया (प्रतिष्ठा सूचक चिह्न ओ उपाधि) सँ अलंकृत समर विजयी-वीर-भूपति वर श्री दर्पनारायण देवक आज्ञासँ श्री विद्यापति द्वारा लिखित व्याडीभक्तितरङ्गिणीमे प्रथम तरङ्ग समाप्त भेल ।

श्री व्याडीक चरणमे भक्ति होअओ ।

Gupta, B. A. : Hindu Holidays and Ceremonies, Calcutta, 1919

Hombly, W. H. : Serpent Woship in Africa, The Museum of Natural History, Chicago XXI, 1931

Hiryanna, Ambalika (Dr.) : Studies in Karnataka Folklore, Dharward, Rasranga, Karnataka University 1999

Leach Maria (Edited) : Dictionary of Folklores Mythology and legends, New yark, 1949

Maity, P. K. (Dr.) : Historical Studies in the clut of the Goddess Manasa (A cultural Study), Kolkata, Firma K. L. Mukhopadhya

Mishra, Jayakant (Dr.) : Introduction to the Folk literature of Mithila, Allahabad, Allahabad University, 1950

Panikkar, Karalam Narayan : Folklore of kerala, Newdelhi, National Book Trust 1991 First Reprint 1999

Parrinder Geoffery : African Mythology

Rose, H. A. : A Glossary of the Tribes and Castes of the Panjab and North Western Frontier Province Lohore, 1919

Sonyal, Charuchandra (Dr.) : The Rajbansis Of North Bengal (A study of Hindu Social Group Kolkata, Asiatic Society 1965

Sen, Sukunar (Dr.) : An Etymological Dictionary of Bengali (1000-1800) Valume II, Kolkata, Eastera publisher

(फोल्इओ १३क)

भट्टभाष्यम् प्रदानार्थवत्वन्तुतत्रैव यत्र मन्त्रस्थनाम्नि चतुर्थ्यन्तु ॐ मनसा देव्यै नमः स्वाहेति । इति होमे दशाक्षरी मन्त्रं । भाविष्ये:

आहूतिस्तु घृतादीनां स्त्रुवेणाधोमुखेन तू ।
हुतेतिलाज्याहुतिस्तु दैवे नोन्तानपाणिना ।।५०।।

महाकपिलपञ्चरात्रे:

संख्यापूच्कताशतंसाष्टं सहस्रं वाजपादिषु ।।५१।।

अत्रशान्ति कृत्वाद् वरदोऽग्निः ।

गोमिल पुत्र:

..............शान्तिके वरदः स्मृतः ।।५२।।

शान्तिदीपिकायां वशिष्ठ:

वन्दनां कारयेत्तेन शिरः कष्ठांशकेषु च ।
कश्यपस्येति मन्त्रेण यथाऽनुक्रम योगतः ।।
ततः शान्तिं प्रकर्वीत अवधारण वाचनम् ।
दक्षिणा च प्रदातव्या ग्रहाणाञ्च विसर्जनं ।।५३।।

अनुवाद:

अत: द्वितीय (त्याग) केर विधान करब निरर्थक । स्वाहा शब्दक अर्थ प्रदान ततहि होयत जतय मन्त्रमे आयल नाम चतुर्थ्यन्त हो । तदनुसार **ओं मनसा देव्यै नमः** स्वाहा ई दशाक्षर मन्त्र भेल ।

भविष्य पुराणमे कहल गेल अछि:

हवनमे घृत आदिक आहुति अधोमुख स्त्रुवसँ देल जाय आ तिलक आहुति ऊर्ध्वमुख हाथेँ देब तीर्थसँ । ।।५०।।

महाकापालिक पञ्चरात्रमे कहल गेल अछि:

जतय जप आदिक विधानमे संख्याक उल्लेख नहि हो ततय एक सय आठ वा हजार बूझी।।५१।।

(फोल्इओ १२क)

शारदातिलके स्थण्डिल लक्षणं यज्ञपार्श्वः ।
हस्तामात्रं स्थण्डिलं वा संक्षिप्ते होमकर्मणि ।
अङ्गुल्योत्सेघसंयुक्तं चतुरश्रं समन्ततः ।।४४।।
खादिरादिश्रुवा भावे राघवभट्टघृत संहितायां ।

अनुवाद:

शारदातिलकमे यज्ञ पार्श्वमे स्थण्डिलक स्वरूप कहल गेल अछि:

संक्षिप्त होम कर्ममे पसारल आङुर सहित एक हाथ मानक चतुर्भुज स्थण्डिल (यज्ञक पीड़ी) बनाबी ।।४४।।

जँ खएर काठक स्त्रुव नहि भेटय तँ की करी से **राघव भट्ट** द्वारा उद्धत संहितामे कहल गेल अछि:

Aidinghon Richard & Arnes Delano : New Larousse Eneyclopedia of Mythology, London, Halmlyar Pablishing Groups, 1984

Barua, Birinchi Kumar (Dr) : Histroy of Assamese Literatures, New Delhi, Sahitya Akademi 1964

Basu, G.C. : New Indian Antiquary

Bhattacharjee, Narendranath : Ancient Indian Rituals and their social contents, Delhi, Mother Book Service, 1975

Choudhary, Radhkrishna : Mithila in the Age of Vidyagati, Chaukhambha Orientaliya, varanasi, 1976

Dimock, E.C. : Manasa, Goddess of Snakes, The University of Chicago, Committee on South East Asian Studies Reprint Series 13

Elphinston : History India, 1874

Frequnson : Tree and Serpent worship

Frazer, J.G. : The Golden Bough, London, Macmillan Fress, 1971 (Abnidge Edition)

Gait, E : Histry of Assam, Calcutta, 1926

Gerison George Abraham (Dr.) : An Introduction to the Maithili, Language of North Bihar, Containing Grammar Chrestomethy and Vocal bulary, 1881-82,

Griffiths, W. G. : The kol Tribes of Central India, Calcutta, 1940

(फोल्इओ १५क)

प्रयोग तरङ्गः

ॐ मनसा देव्यै नमः ।
स्मृत्यागमपुराणादि लोकवादानुसार तः ।
व्याडीपूजार्विघानस्य प्रयोगोलिख्यितेऽधूना ।

अथाधिवास विधि:

तत्र पूर्व दिने कृतिनियमोऽधिवास दिने सायमधि-वासात् प्राक् प्रातः काले कृत स्नानादिर्गोमयप्रतिलिप्तदेशे दर्भपाणिराचन्त उदङ्गमुखोदर्भयुक्तासन उपविष्ठ ब्राह्मणान स्वस्तिर्वाच्य ॐ तदविष्णोरित्त्यनेन विष्णुं स्मृत्वा तत्सदितुर्च्चा ताम्रपात्रं दर्भत्रियतिलजलपूर्णं यथोतपत्रं वा गृहीत्वा ॐ अद्यामुकमासस्यमुक यक्षेद्रमुकतिथेरारम्य दिनत्रयं यावत् प्रत्यहमुख गोत्र: श्री अमुक देवशर्मा पुत्रपौत्रप्रपौवाधि ऋद्धिर्नैरूज्यप्राप्ति-सर्पभयानव्याप्त्यैहिकविविधभोगपारत्रिकस्वर्गमोदन कामोऽभुकापच्छान्तिकामो ।

अनुवाद:

मनसा देवीकेँ प्रणाम ।

स्मृति, आगम आर पुराण आदि शास्त्र सभक अनुसार तथा लोकाचारक अनुसार व्याडी पूजाक (नागपूजाक) पद्धति (प्रयोग विधि) लिखल जाइत अछि ।

पहिने अधिवास विधि । अधिवाससँ एक दिन पहिने नियम पूर्वक रही । अधिवासक दिन (सन्ध्या काल अधिवास करबासँ पहिने) प्रात:काल स्नान आदि नित्यकर्म करी, तखन गोबरसँ नीपल स्थानमे कुशासनपर उत्तर मुँहे बैसि तिकुसा हाथमे ल' आचमन करी । ब्राह्मण गणसँ स्वस्ति वाचन कराबी । **ओंतद्विष्णो**: एहि मन्त्रसँ पढ़ि तेकुसा-तिल-जलसँ ताम्र पात्र, वा जे रहय, हाथमे ल' संकल्प करी-आइ अमुक मासक अमुक पक्षक अमुक तिथि आ दिन सँ आरम्भ क' तीन दिन धरि प्रतिदिन हम श्री..........शर्मा पुत्र, पौत्र आ प्रपौत्र पर्यन्त धन आर आरोग्य पाबी, सर्प भयसँ मुक्त रही, एहि जीवनमे नाना प्रकारक भोग भोगिकेँ,

(फोल्इओ १२ख)

पलाशपत्रे निश्छिद्रे रुचिरे श्रुक्र श्रुवो स्मृतौ ।
विदध्याद्वाश्वथपत्रे संक्षिप्ते होमकर्मणि ।।४५।।

होमे स्वाहान्ततामाहः यज्ञपार्श्वः।

आदाय दक्षिणे पाणौ श्रुवं त्रिमधुरं हविः ।
ॐ प्राङ्मुखोवह्निजायान्ते जुहुयान्नपुब्जपाणिना ।।४६।।

त्रिमधुरं घृतमधुशर्कात्मकं । न्युब्जपाणिनेति शाखान्तरीयं ।

विष्णुधर्मोत्तरे:

दुर्वाहोम:पर:प्रोक्तस्तेन स्वर्गे महीतले ।
तस्माद्दशगुणं पुण्यं मिक्षभि: प्राप्नुयात कृते ।
तस्माद्दशगुणं शस्यै ब्रीहिभिर्द्विगुणं भवेत् ।
यतश्चतुर्गुणं प्रोक्तं तिलैर्दशगुणं स्मृतं ।
विल्वैर्दशगुणं प्रोक्तं घृतेनाष्ट गुणं ततः ।।४७।।

इत्यनेन घृतस्य सर्वोत्मत्वं दर्शितं । मन्त्रतन्त्र प्रकाशः

नमोस्तेन नमो द्यात् स्वाहान्ते द्विठमेव च ।
पूजायामाहुतौ चापि स्र्वत्रायं विधि शिवे ।।४८।।

अन्तेऽवसाने । द्विठं स्वाहा । अत्र ॐ स्वाहा शब्दः स्वीयद्रव्य त्यागार्थकः

यथाह हरिशर्मा:

उपदिष्टि होमा: स्वाहाकार प्राणाहुतय इति ।।४९।।

स्वाहाकारणे स्वाहेतिपदेन् प्रदानं त्यागो यासु आहुतिसु तास्तथा । अतएव स्वाहाकास्य प्रदानार्थकृत्वा हविस्त्यागस्यम्नाय सिद्धन्वेन कृतार्थत्वाद द्वितीस्याम्नयमनर्थकं स्यादिति

अनुवाद:

संक्षिप्त होम कर्ममे छिद्र रहित सुन्दर पलाश पत्रक वा पिपरक पातक श्रुव बनाबी। ।।४५।।

यज्ञपार्श्वमे कहल गेल अछि जे होम कर्ममे मन्त्रक अन्तमे स्वाहा कही:

स्रुव दहिन हाथमे ल' त्रिमधुर हविसँ मन्त्रक आदिमे ॐ तथा अन्तमे स्वाहा कहैत हाथ झुकाय हवन करी। ।।४६।।

त्रिमधुर थिक घृत, मधु आ शर्करा एहि तीनू मीठ वस्तुबाला। हाथ झुकायब आन शाखाक विषय थिक।

विष्णुधर्मोत्तरमे कहल गेल अछि:

दूभिसँ होम प्रशस्त अछि। एहिसँ स्वर्गमे सुख भेटैत अछि। कुसिआरसँ हवनक फल ओकर दशगुण होइत अछि। तकर दस गुना शस्यसँ, दू गुना बीहिसँ दस गुना तिलसँ, दस गुना बेलसँ, आ आठ गुना घृतसँ। ।।४७।।

तत: एकर आशय थिक जे घृत सर्वोत्तम।

मन्त्रतन्त्र प्रकाशमे कहल गेल अछि:

नामक अन्तमे नम: लगाबी, हवनमे अन्तमे स्वाहा लगाबी। पूजामे आ हवनमे गौरी, सर्वत्र इएह विधि अछि। ।।४८।।

अन्ते अर्थात् अन्तमे हवनमे स्वाहा। एतय स्वाहा शब्दक अर्थ थिक अपन द्रव्य (धन) केर त्याग।

जेना **हरिशर्मा** कहने छथि:

उपदिष्ट होम थिक एहन आहुति जाहिमे हद् (हव्य) स्वाहा कहि त्यागल जाइत अछि।।४९।।

मूलमे **स्वाहाकार प्रदाना हुतय:** एकर अर्थ थिक स्वाहाकारसँ (स्वाहा शब्दसँ) हविष्यक प्रदान (त्याग) कयल जाय जाहि आहुतिमे। **भट्ट-भाष्यमे** कहल गेल अछि जे वाक्यमे स्वाहाकार प्रधान अछि, ताहीसँ हविष्यक त्याग प्रतिपादित भ' जाइत अछि।

(फोल्इओ १५ख)

मनसा देवी प्रीति कामो वा पूर्वस्वीकृत मनसादेवी पूजामहं करिष्येत परार्थञ्चेत् पष्ठयन्ते प्रयोज्य करिष्यामीति प्रयोगः।

इति सङ्कल्प्यत फलामैशान्त्यं क्षिप्ता ॐ यज्जाग्रमत इति पठेत । यद्यन्यद्वारा पूजां करोति तदा तं वृणुयात । अथ स्वयं प्राङ्मुख आसन मानीय उद्ङमुख ब्राह्मणम् ॐ साधु भवानास्तमिति वदेत् । ॐ साध्वहमास इत्युक्तो परिवेशत् । ॐ अर्चयिनिष्यामो भवन्तमिति वदेत् । ॐ अर्चयेति प्रत्युक्ते । गन्धपूष्पाङ्गुरीय वस्त्रादिनार्चयित्वा दक्षिणं जानुंविधृत्य ॐ अद्यामुकेमास्यमुकपक्षेऽश्रीअमुक ।

अनुवाद:

एहि जीवनमे नाना प्राकारक भोग भोगिकेँ मृत्युक बाद स्वर्गक सुख भोगी, एहि कामनासँ, अथवा अमुक पापक शान्तिक कामनासँ, अथवा मनसा देवीक प्रसन्नता प्राप्त करबाक कामनासँ, पूर्वमे अंगीकृत मनसा देवीक पूजा करब। जँ पूजा अनका निमित्त करी, तँ संस्कृत संकल्प वाक्यमे करिष्ये एकरा स्थानमे करिष्यामि पढ़ी, तथा जनिका निमित्त पूजा कयल जाय तनिक नामोल्लेख सम्बन्ध कारकक चिह्न लगाय कयल जाय। एहि रूपेँ संकल्प क' ताम्रपत्रक जलकेँ पूर्वोत्तर कोणमे त्यागि **ॐ यज्जाग्रत:** इत्यादि मन्त्र पढ़ी। जँ पूजा अनका द्वारा करयबाक हो तँ हुनक वरण करी। अपने पूब मुहेँ ठाढ़ भ' आसन राखि वरणीय ब्राह्मणकेँ कहियनि, 'अपने विधिवत् बैसल जाय।' तखन ब्राह्मण, 'हम विधिवत् बैसलहुँ' ई कहि बैसि जाथि। तखन हुनका कही, 'हम अपनेक अर्चना करब।' ब्राह्मण कहथि, 'कयल जाय।' तखन चन्दन, फूल, औंठी आदिसँ हुनक अर्चना क' दहिना ठेहुन खसायकेँ बैसी आ संकल्प करी, 'आइ अमुक मास, अमुक पक्ष, अमुक तिथिकेँ हम श्री अमुक'।

(फोल्इओ १६ मात्र)

इतिघटशोधनं ।
ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि ।
वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणास्य कृत सदन्यसि वरुणस्य कृत-सदन्यसि ।

सहायक ग्रन्थ

अङरेजी

□ □

विश्वास, अचिन्त्य (डा.) : विप्रदास पिपिलाइयेर मनसा-मङ्गल, कोलकाता, २००२

सेन, जया (डा.) : मनसा मङ्गल काव्ये सामाजिक पटभूमिका ओ नारी, ढाका, बड़ाल प्रकाशनी, १९९०

सेन. सुकुमार (डा.) : मनसा विजय, कोलकाता, एशियाटिक सोसायटी, प्रकाशन वर्षक उल्लेख नहि

शर्मा. नवीन चन्द्र (डा.) : नारायण देवेर विरचित पद्मापुराण (भटियाली खण्ड) गुयाहटी, वाणी प्रकाश अधि समीक्षा अंश, १९९३

हालदार, गोपाल : बाङला ओ साहित्येर रुपरेखा, प्रथम खण्ड कोलकाता

पत्रिका

प्रवासी

स्मारिका चेतना समिति २००३

मिथिला दर्पण

संस्कृत

अथर्ववेद

ऋग्वेद

कौमदी मित्रनन्द

गृह्यसूत्र

पुराण

महाभारत

यजुर्वेद

हर्षचरित

विद्यापति साहित्य

संस्कृत-रचना

१. भूपरिक्रमण वा भूपरिक्रमा
२. पुरुषपरीक्षा
३. लिखनावली
४. दुर्गाभक्तितरङ्गिणी
५. शैवसर्वस्वसार
६. शैवसर्वस्वसार-प्रमाणभूत-संग्रह
७. गङ्गावाक्यावली
८. दानवाक्यावली
९. विभागसार
१०. गया पत्तलक
११. वर्षकृत्य
१२. व्याडीभक्तितरङ्गिणी

संस्कृत-प्राकृत-मैथिली-मिश्रित रचना

१. मणिमञ्जरी
२. गोरक्षविजय

अवहट्ट-रचना

१. कीर्तिलता

२. कीर्तिपलका

पदावलीक आकार-स्रोत

१. नेपालोपलब्ध पदावली

२. मिथिलोपलब्ध पदावली

  i रामभद्रपुर पदावली

  ii रागतरङ्गिणी पदावली

  iii तरौनी पदावली

३. बङ्गलोपलब्ध पदावली

४. लोककण्ठोपलब्ध पदावली

□ □

बन्दोपाध्याय ताराशंकर : नागिनी कन्यार काहिनी

बरुआ, विरंचिकुमार : असमेर लोक-संस्कृति, गौहाटी, लायर्स बुक स्टाल, १९५७

बसु, गोपेन्द्र कृष्ण : बाङला लौकिक देवता, कोलकाता, डेज पब्लिसिंग, द्वितीय संस्करण, १३९४ बंगाब्द ।

भट्टाचार्य, आशुतोष (डा.) : बाङला मङ्गल काव्येर इतिहास , कोलकाता, ए. मुखर्जी एण्ड को. प्राइवेट लिमिटेड, २. बंकिस चटर्जी स्ट्रीट, दसम मुद्रण २००२.

: बङ्गीय लोक संगीत रत्नाकर, कोलकाता, ए. मुखर्जी एण्ड को. प्राइवेट लिमिटेड, १९७१

भट्टाचार्य, विजन बिहारी (डा.) : केतकादास खेमानन्द, दिल्ली, साहित्य अकादेमी, पंचम मुद्रण २००३

माइति, सुकुमार (डा.) : नरसिंह बसु धर्ममङ्गल, खड्गपुर, विजन पञ्चानन संग्रहशाला ओ गवेषणा केन्द्र, २००१

मुखोपाध्याय, सुखमय : बाङला इतिहासेर दुइ सौ बछर, स्वाधीन सुलतानदेर आमल, कोलकाता, भारती बुक स्टाल, १९९८

□□

कालजयी विश्वकवि विद्यापति कृत

व्याडीभक्तितरङ्गिणी

सम्पादक
प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह
निवर्त्तमान युनिभर्सिटी प्रोफेसर एवं मैथिली विभागाध्यक्ष
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय
भागलपुर - ८१२००७



मिथिला दर्पण प्रकाशन
मुंबई - ४००१०१

अवकाशोपरान्त हम प्रवासी भ' गेल छी आ ऋचा, सुधीर, ईशानी आ आरुषीक संग विभिन्न महानगरक भ्रमणशील रहि समय व्यतीत करैत छी, तकरे प्रतिफल थिक जे मुम्बई सदृश महानगरक प्रवासमे एकर प्रकाशन एतयसँ संभव भ' सकल अछि तकर श्रेय हुनके सभकेँ छनि। हुनका सभक भविष्य उत्तरोत्तर विकसित होइनि तदर्थ अशेष शुभकामना।

६०१, आई.सी.आइ.सी. आइ. बैंक अपार्टमेण्ट मुंबई.

प्रमेशंकर सिंह
श्रावण पूर्णिमा २००८

प्रसङ्ग

विगत चारिदशक पूर्व कालजयी विश्वकवि महाकवि विद्यापतिक संस्कृत रचना *व्याडीभक्तितरङ्गिणी* क पाण्डुलिपिक माइक्रोफिल्सक प्रति हमरा बाङला देशस्थ ढाका विश्वविद्यालयक पुस्तकालयसँ उपलब्ध भेल, किन्तु अन्यान्य साहित्यिक महानुष्ठानमे अतिशय व्यस्ततावश तथा बाङला-भाषा आ साहित्यक पूर्ण ज्ञानाभावक कारणेँ ओकरा स्पर्श करब श्रेयस्कर नहि बुझलहुँ। विश्वविद्यालय सेवासँ अवकाशोपरान्त ओकर लिप्यन्तरण आ पाठालोचन योजना मनहि-मन सुनिश्चित कयलहुँ। जहिना - जहिना समय उपलब्ध होइत गेल तहिना-तहिना एहि दिशामे प्रयासोन्मुख भेलहुँ जे यशाशीघ्र प्रस्तुत संस्कृत ग्रन्थकेँ मैथिली-भाषी जनसमुदायक समक्ष आनल जाय।

एकरा प्रकाशमे अनबाक श्रेय छनि प्रोफेसर आशुतोष भट्टाचार्यकेँ। हिनका ढाका विश्वविद्यालयमे *1966* ई.मे एकर एक प्रलेख भेटलनि। प्रस्तुत संस्करण ओही प्रलेखपर आधारित अछि। आधार भूतप्रलेख तालपत्रपर तिरहुता/बाङला लिपिमे लिखल अछि। एहिमे पन्द्रह (३० पृष्ठ) आ प्रति पृष्ठपर लगभग नओसँ पन्द्रह पँक्ति अछि। चौदहम

प्रकाशक:
श्रीमती पुष्पा झा
२/११, बाबू भाई कम्पाउण्ड, गंगादेवी रोड,
पोयसर, कान्दिवली (पूर्व),
मुम्बई - 400101.

स्थिर दूरभाष : 022-28709798
चलित दूरभाष : 09323282521

प्रकाशन वर्ष : 2008

सहयोग राशि : २०० टाका मात्र *(Rs. 200/- Only)*

मुद्रक : मिथिला प्रीटिंग प्रेस मुम्बई ।

VYADHIBHAKTITARANGINI BY VIDYAPATI

Edited by :
PROF. PREMSHANKAR SINGH

क्रम

तालपत्रमे प्रथम तरङ्ग समाप्त होइत अछि। एतय पुष्पिका समाप्त होइत अछि जाहिसँ ज्ञात होइत अछि जे ई नरसिंह देवनारायणदेवक आज्ञासँ विद्यापति एकर रचना कयलनि। पन्द्रहम तालपत्र अपूर्ण वाक्यसँ समाप्त भेल अछि। आगाँक अंश अप्राव्य अछि। प्रतिलिपिक समयक उल्लेख नहि अछि। लिपि आ तालपत्रक आधारपर अनुमान कयल जा सकैछ जे ई अत्यधिक प्राचीन अछि। प्रतिलिपिकार व्यवसायी लिपिक समान छथि, कारण अक्षराशुद्धि अधिक अछि।

उपर्युक्त प्रलेखक पठन आ प्रकाशन अनेक विद्वान कयलनि। प्रस्तुत संकलनमे चारि पठन उपयोग कयल गेल अछि:

१. ढाका विश्वविद्यालयक पाण्डुलिपि।
२. प्रोफेसर आशुतोष भट्टाचार्यक *बाङलामङ्गल काव्येर इतिहासेर* संलग्न पठन।
३. प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरीक *मिथिला इन द एज ऑफ* मे संलग्न पठन।
४. प्रस्तुत संस्करणक सम्पादन क्रममे संशोधित आ प्रत्युद्धृत्त पठन।

कतहु-कतहु पाठांश लुप्त, अस्पष्ट आ विकृत लगैत अछि। एहनठाम अनुमानसँ पाठक पूर्ति करबाक प्रयास नहि कयल गेल अछि। अनुवादहुमे एहन स्थान रिक्त छोड़ि देल गेल अछि।

अद्यापि मैथिलीमे कतहुसँ एकर प्रकाशन नहि भ' सकल अछि आ ने तँ अन्वेषक लोकनि एहि दिशामे सफल भ' पौलनि। एहि उद्देश्यसँ व्याडीभक्तितरङ्गिणीक सम्पादन आ पाठालोचनक निमित्त सर्प-देवताक विविध पक्षपर हम विश्व आ भारतीय-साहित्यक सन्दर्भमे कयल ई प्रयास अछि। तकरे प्रति फल थिक प्रस्तुत संस्करण जे कालजयी कविक बहुमूल्य ग्रन्थ जनमानसक समक्ष अछि।

व्याडीभक्तितरङ्गिणीक लिप्यन्तरण, पाठालोचन आ अर्थ निरूपणक महानुष्ठानमे हमरा मनसा-वाचा-कर्मणा सहायता प्रदान कयलनि सिद्धूकानू विश्वविद्यालयक प्राक्तन प्रोफेसर एवं अङरेजी विभागाध्यक्ष तथा मानविकी संकायाध्यक्ष मित्रप्रवर डा. उपेन्द्रनाथ मल्लिक, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालयक प्राक्तन प्रोफेसर एवं बाङला विभागाध्यक्ष डा. विनयकुमार माहता तथा प्रोफेसर ऑफ बाङला प्रोफेसर शर्मिला बागची आ प्राक्तन क्षीरोदकुमार चटर्जी, अन्यथा एहि दुरूह आ असाध्य एवं अप्राप्य पाण्डुलिपिकेँ प्रकाशमे अनबामे डेग-डेगपर समस्या उपस्थित होइत छल, तकर निराकरणमे ओ सभ सहायक भ' कए निःसंकोच भावेँ समय द' कए एकरा मूर्त्त रूप प्रदान करबामे अयाचित सहयोग कयलनि तदर्थ आभारी छियनि।

सम्पूर्ण पाण्डुलिपिकेँ अद्योपान्त पारायणोपरान्त पण्डित गोविन्द झा कतिमय बहुमूल्य परामर्श देलनि आ अर्थ जनित काठिन्यक समाधानमे निःसंकोच भावेँ सहायता कयलनि तदर्थ हुनक साहित्य-साधनाक प्रति नत-प्रणत छी।

प्रवासी भेलोपर अपन मातृभाषानुरागसँ प्रतिपल उत्प्रेरित भ' कए मिथिला दर्पण प्रकाशनक व्यवस्थापक पितामह पण्डित मार्कण्डे झा पौत्र-वधू श्रीमती पुष्पा झा एवं पौत्र संजय कुमार झाकेँ श्रेय छनि जे महाकवि विद्यापतिक अमूल्य कृतिकेँ मैथिलीमे प्रथमे-प्रथमे प्रकाशित क' कए जनमानसक समक्ष प्रस्तुत करबाक अवसर देलनि, एतदर्थ हुनका सभक आभारी छियनि आ हमर अशेष शुभकामना अछि जे भविष्यमे सेहो एतयसँ मैथिली पुस्तकक प्रकाशनक पथ-प्रशस्त हो।

शब्द-संयोजनक दायित्त्व छलनि विजयशंकर गुप्ताकेँ जे अमैथिल रहितहुँ अत्यन्त धैर्य-पूर्वक अपन लगनशीलनतासँ एहि अनुष्ठानकेँ सम्पन्न करबामे सहायक भेलाह तदर्थ अनेक धन्यवाद।